ज्ञानामृत

नवम्बर, 1985

वर्ष 21 ❋ अंक 5

मूल्य 2.00

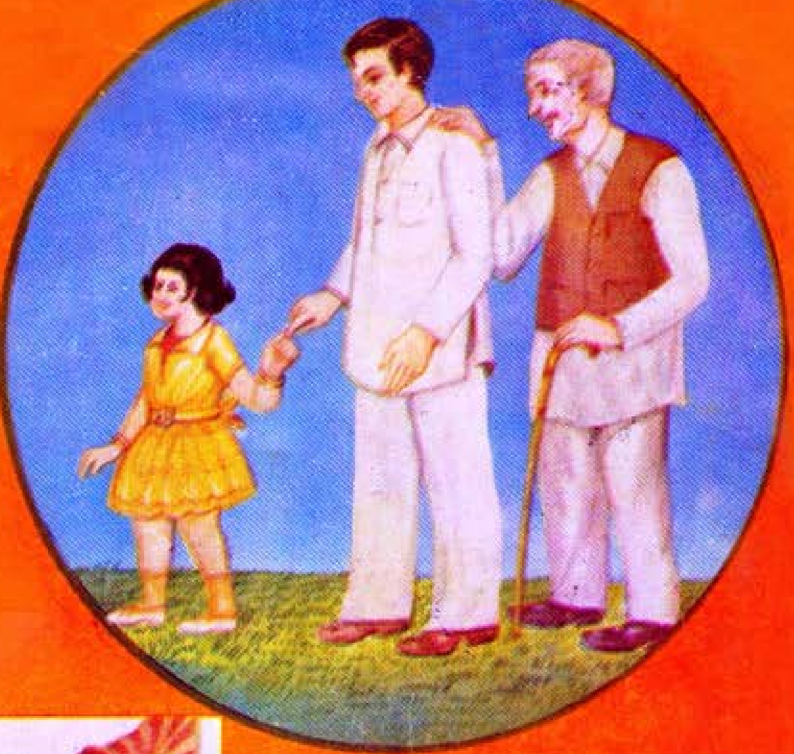

युवा बूढ़ों और बच्चों दोनों का सहारा है। युवा समाज की नींव है। यदि युवा बदलेगा तो विश्व बदलेगा।

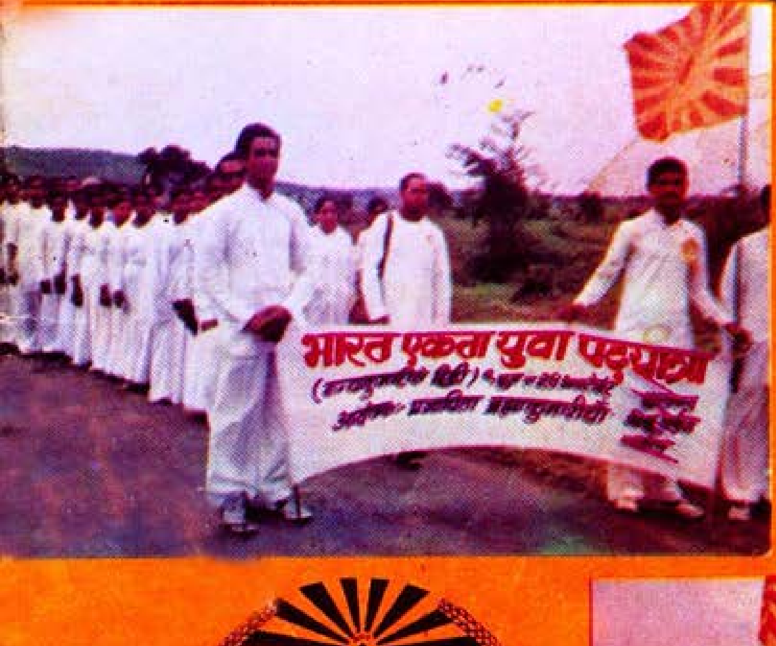

कन्याकुमारी से देहली 'भारत एकता युवा पदयात्रा' के यात्री देहली की ओर अग्रसर।

बम्बई-दिल्ली युवा पदयात्रा के यात्री, पीछे ब्र. कु. योगिनी कलश लिये हुए।

DETERMINATION DIVINITY DEDICATION

भारत एकता युवा पद यात्रा विशेषांक

धर्मशाला में आदरणीय दलाई लामा जी पदयात्रा का शुभारम्भ कराते हुए।

कन्याकुमारी से देहली पदयात्रा के उद्घाटन अवसर पर सम्बोधन करती हुई ब्र. कु. शिव कन्या जी।

कलकत्ता में कलकत्ता-दिल्ली युवा पद यात्रा का उद्घाटन करने प. बंगाल के राज्यपाल भ्राता उमाशंकर दीक्षित उनका स्वागत करती हुई दादी निर्मल शान्ता जी।

सोमनाथ से देहली युवा पद यात्रा का अहमदाबाद में रोटरी क्लब की ओर से स्वागत-सम्मान कार्यक्रम।

माउंट आबू में युवा पद यात्री ओमशान्ति भवन से प्रस्थान करते हुए।

कलकत्ता-देहली युवा पद यात्री प्रदर्शनी के चित्रों पर लोगों को ईश्वरीय ज्ञान देते हुए।

बंगलोर में युवा पदयात्री महापौर के साथ।

धर्मशाला से देहली के पदयात्रियों को सेब देती हुए दादी प्रकाशमणी जी।

Regd No. 10563/65-D(E)-70

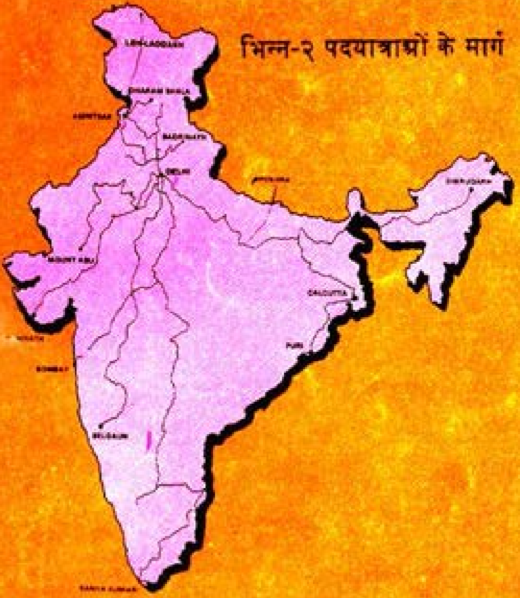

भिन्न-२ पदयात्राओं के मार्ग

धर्मशाला से देहली के पदयात्री सोलन में

लोनी गांव में पदयात्री भाई बहनों का भव्य स्वागत पश्चात् ब्र. कु. शील जी भाषण करते हुए ।

भारत एकता युवा पद यात्रा विशेषांक

अमृतसर-देहली युवा पदयात्रा के यात्री अमृतसर में जलियाँवाला बाग से यात्रा का शुभारम्भ करते हुए ।

जब गाँव २ युवा पदयात्री गए, जन २ ने भारत की एकता और पवित्रता के लिये निम्नलिखित प्रतिज्ञा पत्र भरे

प्रतिज्ञा पत्र

हम अपने समाज के तथा देश एवं सारे विश्व के कल्याण हेतु स्वेच्छा निम्निलिखित दृढ़ संकल्प अथवा प्रतिज्ञा करते हैं—

१—हम विश्व के सभी मानव-तनधारियों को आत्मिक दृष्टि से देखते हुए अपना आत्मिक बन्धु मानेंगे और विश्व को एक वृहद कुटुम्ब मानते हुए तथा परमात्मा को परमपिता मानते हुए भ्रातृत्व, शुभ भावना, शुभकामना, एकता और शान्ति बनाये रखेंगे।

२—हम किसी भी विवाद या समस्या को हल करने के लिए रचनात्मक ही तरीके अपनायेंगे। हम न हिंसा करेंगे न तो तोड़ फोड़ और न बदला लेने की भावना रखेंगे बल्कि हम मैत्री और स्नेह से समस्याएं सुलझायेंगे और अपने व्यवहार को बदलेंगे और श्रेष्ठ तथा मधुर बनायेंगे।

३—हम स्वमानपूर्ण जीवन व्यतीत करेंगे और हर व्यक्ति को मान देंगे।

४—हम अश्लील और हिंसा-प्रधान फिल्में या नाटक नहीं देखेंगे न ही अश्लीलता और हिंसा को बढ़ावा देने वाली पुस्तकें पढ़ेंगे।

५—हम शराब या अन्य द्रव्यों का अथवा ऐसे द्रव्यों का जिनसे कि चेतना में परिवर्तन आता है, प्रयोग नहीं करेंगे।

६—हम अन्न का मन पर प्रभाव मानते हुए माँस या तामसिक चीजों का प्रयोग नहीं करेंगे।

७—हम नारी जाति का सम्मान करेंगे और दहेज प्रथा, बाल-विवाह आदि कुरीतियों का बहिष्कार करेंगे।

८—हम काम, क्रोध, लोभ आदि विकारों पर विजय प्राप्त करने का पूरा यत्न करेंगे। हम न इन के द्वारा दूसरों को दुःख देंगे न स्वयं दुखी होंगे।

९—हम एक नये, पवित्र, सुख-शान्ति, प्रेम, पवित्रता और एकता सम्पन्न समाज की स्थापना के कार्य में सहयोग देंगे। एवं भारत भूमि की अखण्डता को सदा कायम रखेंगे।

१०—हम प्रतिदिन कुछ न कुछ समय परमपिता परमात्मा की स्मृति में स्थित होने का अभ्यास करें तथा ईश्वरीय ज्ञान का भी अध्ययन करेंगे।

हम इस प्रतिज्ञा पत्र पर स्वेच्छा से हस्ताक्षर करते हैं।

हस्ताक्षर........................

दिनांक.....................

पता..............................

अमत सची

		पृष्ठ
१.	जब गांव-गांव युवा पद यात्री गए, जन-जन ने भारत की एकता और पवित्रता के लिये निम्नलिखित प्रतिज्ञा पत्र भरे	१
२.	युवा पद यात्रियों आदि द्वारा विशेष ज्ञान सेवा	२
३.	भारत के विभिन्न प्रदेशों के ग्राम-ग्राम में युवा पद यात्राएं	३
४.	अंतरराष्ट्रीय युवा वर्ष में आचरण-युक्त युवा दल द्वारा एक नया अभियान	४
५.	नई प्रकार की पद यात्राओं के नए उद्देश्य	६
६.	धार्मिक भौगोलिक ऐतिहासिक दृष्टि-कोण से	८
७.	डिब्रूगढ़-पुरी और कलकत्ता से दिल्ली तक की अविस्मरणीय वृत्तान्तों से भरपूर पदयात्रा	१३
८.	पदयात्रा बम्बई से दिल्ली की ओर गांव-गांव, नगर-नगर में नया नारा	१८
९.	प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित एक युवा पदयात्रा	२०
१०.	एक युवा पद यात्रा पर्वतराज आबू से.	२८
११.	बेलगाम से साईकल यात्रा	३१
१२.	नेपाल-भारत (संयुक्त) एकता युवा शांति यात्रा	३४
१३.	भारत एकता युवा पदयात्रा बद्रीनाथ से दिल्ली	३६
१४.	धर्मशाला और अमृतसर से दिल्ली की ओर चली शिव शक्तियां ज्ञानामृत वितरित करने	३८

सम्पादकीय

युवा पद-यात्रियों, साइकिल यात्रियों आदि द्वारा विशेष ज्ञान-सेवा तथा यात्रियों का देहली में स्वागत

इतिहास में प्रथम बार ऐसा हुआ है कि सैकड़ों ऐसे युवाजन जिन्होंने उच्च नैतिक संहिता और आध्यात्मिक नियमों को पालन करने का प्रण किया हुआ है और शांत रहने तथा शांति स्थापन करने के लक्ष्य को दृढ़ता से धारण किया हुआ है, भारत के हज़ारों गांवों, उपनगरों तथा नगरों में इस अभिप्राय से हज़ारों मील चल कर गये कि वे जन-जन की अंतरात्मा को जगाएं ताकि वे स्वेच्छा से अपनी आदतों तथा अपनी जीवन-पद्धति का आवश्यक संशोधन करें।

जिन उद्देश्यों से प्रेरित होकर ये युवाजन अपनी दीर्घ, कठिन और थका देने वाली यात्रा करके लोगों के पास पहुंचे, वे उद्देश्य अपने प्रभावों के दृष्टिकोण से क्रांतिकारी तथा बहुमुखी थे। उनको कार्यान्वित करने से न केवल वर्तमान समस्याएं भी हल होती हैं बल्कि एक उज्जवल भविष्य का भी निर्माण होता है।

उन्होंने शुद्ध शाकाहारी ही भोजन करने और शराब आदि नशीले पदार्थों का सेवन न करने की प्रेरणा देना भी उन उद्देश्यों में शामिल था। आत्म-नियंत्रण द्वारा संतति निरोध करने की शिक्षा देना भी इसका एक उद्देश्य था, उनकी कार्य-योजना में सहज राजयोग के अभ्यास के द्वारा तनाव से मुक्त करने और पवित्रता तथा शांति का मार्ग दिखाने की सेवा भी शामिल थी। इस प्रकार उनके उद्देश्यों, उनकी योजनाओं, उनकी कार्य विधियों और उनके कार्यकलापों में बहुत ही शारीरिक, मानसिक, सामाजिक और आध्यात्मिक लाभ समाए हुए थे। उनका ये सारा कार्य ऐसा था जिससे कि विश्व स्वास्थ्य संघ की यह कल्पना है कि सन् 2000 तक विश्व के सभी लोगों को स्वास्थ्य साधन प्राप्त हों, वह व्यावहारिक मालूम होता था। उनकी इस योजना से ही युवाजन में वाञ्छित परिवर्तन कर सकने की संभावनाएं समाई थीं। इसी योजना को उन युवा पद-यात्रियों ने क्रियान्वित किया।

जिन्होंने पदयात्रियों के इस कार्य को देखा है, उन द्वारा प्राप्त समाचार से तथा स्वयं पदयात्रियों द्वारा बताये अनुभवों से ऐसा महसूस होता है कि गांव और नगरों के पास पैदल चल कर जाने से वहां के लोगों से जो मानसिक एवं भावात्मक तालमेल स्थापन हुआ, उस से काफी उत्साहवर्धक सफलता प्राप्त हुई।

ईश्वरीय सेवा की इस योजना में पदयात्रियों का महत्त्वपूर्ण स्थान था; उन्हें अपनी शारीरिक, मानसिक तथा आध्यात्मिक शक्तियों का, सहनशीलता का व लोगों को एक अच्छे लक्ष्य की ओर प्रेरित करने की क्षमता का बहुत ही उच्च पराकाष्ठा पर तथा निरंतर दिनों और महीनों तक प्रयोग करना पड़ा। इस योजना में जिन्होंने पहले सर्वेक्षण किये थे। जिन्होंने गांव-गांव और नगर-नगर में कार्यक्रमों का आयोजन किया तथा जिन्होंने इस योजना में भाग लेने वालों के लिए मार्ग-प्रदर्शना दी, उनका कार्य भी कोई कम महत्त्वपूर्ण नहीं था।

संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि पदयात्रा विशेष तौर पर गांवों व उपनगरों की सेवा के लिए एक बहुत अच्छा माध्यम सिद्ध हुई और इस सेवा के माध्यम से शहरों के प्रतिष्ठित लोगों तथा आम लोगों की भी अच्छी सेवा हो सकी।

इस विशेष सेवा के लिये निमित्त युवा पद यात्रियों, साइकिल यात्रियों इत्यादि का देहली में स्वागत और उस सेवा के निमित्त भव्य कार्यक्रम बनाया जाना भी उपयुक्त और महत्त्वपूर्ण ही है।

—जगदीश

भारत के विभिन्न प्रदेशों के ग्राम-ग्राम में युवा पद-यात्राएँ

भारत में एक नैतिक क्रान्ति और आध्यात्मिक जागृति लाकर, बापू गाँधी के स्वप्नों को साकार करने के लिए अथवा सच्ची स्वतन्त्रता एवम् सच्चा स्वराज्य स्थापन करने के लिए, ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करने वाले शुद्ध, शाकाहारी एवं राजयोगाभ्यासी इन युवकों ने अनेक दीर्घ एवं छोटी पदयात्राओं का आयोजन किया। प्रायः हर नगर के निकट जो गाँव थे, वहाँ तो जन-जन की सेवा हुई ही परन्तु उसके अतिरिक्त कुछ महत्त्वपूर्ण स्थानों से लम्बी यात्राएँ भी निकाली गईं। इस प्रकार सारे भारत वर्ष में एक नई आध्यात्मिक लहर दौड़ गई। निम्नलिखित 10 पद-यात्राओं, एक साईकल यात्रा तथा एक बस एवं पद यात्रा के रूप में लम्बी यात्राओं के अतिरिक्त एक बस-यात्रा लेह और लद्दाख से पठानकोट तक भी की गई। यद्यपि यह यात्रा फासले और समय के हिसाब से बहुत बड़ी नहीं थी तथापि बर्फानी, चट्टानी अथवा कठिन मार्ग होने के कारण उसका भी यहां उल्लेख करना ज़रुरी है। इन यात्राओं का विवरण इस प्रकार है:

प्रारम्भिक स्थान	आरम्भ होने की की तिथि	प्रदेश जहाँ से गुज़रना है	देहली तक की की दूरी	पहुचने के लिए समय
1. **कन्याकुमारी**	9 जून, 1985	तमिलनाडु, पांडेचरी, केरल, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, यू.पी., हरियाणा,	3508 कि.मी.	137 दिन
2. **पुरी**	22 जून, 1985	उड़ीसा और फिर कलकत्ता से आरम्भ होने वाली यात्रा में शामिल	2107 कि.मी.	124 दिन
3. **डिब्रूगढ़**	17 जून, 1985	आसाम और फिर कलकत्ता से आरम्भ होने वाली यात्रा में	2200 कि.मी.	129 दिन
4. **कलकत्ता**	21 जुलाई, 1985	बंगाल, बिहार, यू.पी.	1600 कि.मी.	93 दिन
5. **बम्बई**	4 अगस्त, 1985	महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश राजस्थान, हरियाणा	1591 कि.मी.	80 दिन
6. **सोमनाथ**	11 अगस्त, 1985	गुजरात, राजस्थान, हरियाणा	1450 कि.मी.	73 दिन
7. **माऊण्ट आबू**	27 अगस्त, 1985	राजस्थान, हरियाणा,	1250 कि.मी.	57 दिन
8. **धर्मशाला**	28 सितम्बर, 1985	पंजाब, हरियाणा, हिमाचल और फिर अमृतसर से आरम्भ होने वाली यात्रा में	550 कि.मी.	25 दिन
9. **अमृतसर**	29 सितम्बर, 1985	पंजाब, हरियाणा	500 कि.मी.	24 दिन
10. **बद्रीनाथ**	28 सितम्बर, 1985	उत्तर प्रदेश	500 कि.मी.	25 दिन
11. **बेलगाम**	25 सितम्बर, 1985	कर्नाटक, महाराष्ट्र मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश		28 दिन
12. **पोखरा (नेपाल)**	20 सितम्बर, 1985	नेपाल, उत्तर प्रदेश	1750 कि.मी.	35 दिन
13. **लेह-लद्दाख**	10 अक्तूबर, 1985	जम्मू, काश्मीर	–	14 दिन

14. संस्था के युवा संगठनों ने उपरोक्त लम्बी यात्राओं की तुलना में कुछ छोटी, अलग-अलग प्रदेशों में पद-यात्राएँ भी कीं जैसे कि दिल्ली में 5 युवा संगठनों ने अलग-अलग दिशाओं में गाँवों में पदयात्राएँ निकालीं।

अन्तर्राष्ट्रीय युवा वर्ष में आचरण युक्त युवा दल द्वारा एक नया अभियान

संयुक्त राष्ट्र संघ ने सन् 1985 को अन्तर्राष्ट्रीय युवा वर्ष घोषित किया। हमारे देश के प्रिय प्रधान मन्त्री, श्री राजीव गाँधी ने भी भारत के युवकों को **राष्ट्रीय एकता लाने तथा सामाजिक कुरीतियों का बहिष्कार करने के लिए आह्वान किया।** बहुत-से शिक्षा विद, समाज-सुधारक तथा अन्य गणमान्य व्यक्ति भी इस बात पर ज़ोर देते रहे हैं कि हमारे समाज में नैतिक व मानवी मूल्यों को बढ़ावा देने के लिए कार्य करने की ज़रुरत है और कि इसके लिए हमें युवा वर्ग की सेवाओं का लाभ लेना चाहिए। स्वयं युवा संस्थाएँ भी यह महसूस करती हैं कि समाज के पुनरुत्थान, राष्ट्र के नव-निर्माण और सामाजिक परिवर्तन के कार्य में युवा वर्ग भी सक्रिय भाग ले। देखा जाए तो आज सामाजिक बुराइयों के उन्मूलन और नैतिक पुनरुत्थान के कर्त्तव्य को निर्विवाद रूप से बहुत ही महत्त्वपूर्ण समझा जाता है क्योंकि इसके बिना सामाजिक न्याय, नारी जाति के प्रति आदर की भावना, तथा भय व हिंसा से रहित समाज का निर्माण करने का सारा पुरुषार्थ असफल ही सिद्ध होगा। परन्तु हम देखते हैं कि इस दिशा में कोई क्रान्तिकारी कार्य नहीं हुआ।

अन्तर्राष्ट्रीय युवा वर्ष में युवाओं द्वारा महत्वपूर्ण समाज सेवा

निस्सन्देह भारत देश में इस वर्ष कई युवा सम्मेलन हुए हैं और कई संस्थाओं ने युवा कार्यक्रम किये हैं। कुछ राजनीतिक संस्थाओं ने युवा-यात्राएं भी संगठित की हैं। इन में से कुछ संस्थाओं ने अपने कार्यक्रमों में राष्ट्रीय एकता के महत्व को दर्शाया है। राष्ट्रीय एकता और धार्मिक संस्थाओं में सद्भावना इस समय हमारे देश की प्राथमिक आवश्यकताएं हैं। परन्तु यदि कुल मिला कर देखा जाये तो इस वर्ष युवा की अपनी उन्नति के लिये तथा उनकी समस्याओं के समाधान के लिए कोई बहुत संतोषजनक कार्य शायद नहीं हुआ है।

केवल भारत के लोग ही नहीं, विश्व-भर में इस बात को सभी मानते हैं कि युवावर्ग समाज परिवर्तन के कार्य में एक बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। परन्तु आज तो अधिकतर यही देखा जाता है कि शैक्षणिक, राजनीतिक तथा अन्य संस्थाओं में युवा वर्ग का ध्यान नैतिक अथवा मानवीय मूल्यों की ओर उतना आकृष्ट नहीं किया जाता जितना कि किया जाना चाहिए। इसका एक दुष्परिणाम आज विश्व के सामने यह है कि आज के युवक के मन में आक्रोश है। समाज से संतुष्ट न होने के कारण और नैतिक मूल्यों की कमी के कारण उनका अशांत मन कई बार विस्फोटक स्थितियां पैदा कर देता है। आज सब जगह हिंसा का जो वातावरण बना है, उसका भी एक मूल करण युवा-असंतोष है। आज हम देखते हैं कि युवा वर्ग इस तनाव से बचने के लिए मादक द्रव्यों का प्रयोग करने लगा है। कॉलेजों तथा विश्वविद्यालयों में ऐसे लोगों की संख्या दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही है जोकि नशीले पदार्थ प्रयोग करते हैं। युवा वर्ग के इस असंतोष, अशांति व तनाव की जड़ हमारी त्रुटिपूर्ण शिक्षा प्रणाली है। यदि इस संदर्भ में देखा जाये तो युवा वर्ग को चारित्रिक मूल्यों की शिक्षा देना और उन्हें कुछ ऐसे विधि-विधान सिखाना जरूरी है जिससे कि उनका मन शांत हो और वे रचनात्मक कार्यों में प्रवृत हों। कुछ समय पहले भारत के प्रिय और युवा प्रधान मंत्री राजीव गांधी ने भी इस युवा वर्ष के उपलक्ष्य में युवकों का आह्वान करते हुए यह कहा था कि युवक सामाजिक बुराइयों को दूर करने में अपनी शक्ति को प्रयोग करें। उन्होनें मादक द्रव्यों से युवा मुक्ति के लिए भी प्रेरणा दी थी और समाज में नारी को समता का स्थान दिये जाने पर भी बल दिया था। निस्संदेह आज देश को इन बातों की ओर ध्यान देना आवश्यक है।

अभी कुछ ही समय पहले सरकार ने मादक द्रव्यों के बढ़ते हुए प्रयोग की रोकथाम के लिए कानून पास किया है। साथ-ही-साथ दहेज प्रथा और नारियों से छेड़छाड़ करने की असभ्य प्रवृत्ति को मिटाने के लिए भी विधान बनाया है। देश में बढ़ती हुई हिंसा को दबाने के लिये भी नये और कड़े कानून बनाये गए हैं। परन्तु सभी इस बात को जानते हैं कि मनुष्य की बुरी आदतें, बुरे संस्कार और बुरे विचार कानून के डण्डे से समाप्त नहीं किये जा सकते बल्कि चारित्रिक और आध्यात्मिक शिक्षा व सहज योग जैसे साधनों ही से इनका निराकरण किया जा सकता है और एक स्वस्थ समाज को जन्म दिया जा सकता है। आध्यात्मिक शिक्षा से हमारा अभिप्राय केवल मज़हबी शिक्षा नहीं बल्कि ऐसी शिक्षा है जिस से कि मनुष्य में सद्गुणों का विकास हो। उसकी वृत्तियां शांत और सात्विक हों। उसका दृष्टिकोण भौतिक की बजाय आध्यात्मिक हो और उसके मन में विश्व-भ्रातृत्व, सब के प्रति सद्भावना तथा सहयोग और सहिष्णुता का अभ्युदय हो।

इस परिपेक्ष में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय

ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय द्वारा युवा वर्ग और विश्व की सेवा

चरित्र-निर्माण और युवा वर्ग की सेवा के सम्बन्ध में यह बताना उचित होगा कि नैतिक पुनरुत्थान तथा सामाजिक परिवर्तन के क्षेत्र में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय अग्रगण्य रहा है। इस संस्था ने प्रारम्भ ही से अन्य आयु वर्गों की भाँति युवा वर्ग के चरित्र निर्माण पर भी ध्यान दिया है। इस ईश्वरीय विश्वविद्यालय की स्थापना सन् 1937 में हुई थी और अब सन् 1985 में हज़ारों युवक और युवतियाँ तथा बालक और बालिकायें, जो यहां शिक्षा लेते हैं, तम्बाकू, शराब व अन्य नशीले पदार्थों, मादक द्रव्यों व हिंसात्मक कार्यों से अपने को बहुत दूर रखते हैं। वे ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करते हैं और पूर्णरूपेण शाकाहारी तथा सात्त्विक भोजन करने वाले हैं। वे प्रतिदिन राजयोग का अभ्यास करते हैं ताकि वे आध्यात्मिक व नैतिक उत्थान कर सकें और तनाव-मुक्त जीवन जी सकें। हज़ारों युवक एवं युवतियों के अतिरिक्त, अन्य आयु वर्ग के हज़ारों लोग, जिसमें छोटे बच्चे भी शामिल हैं, इस संस्था द्वारा दी जाने वाली नैतिक, आध्यात्मिक व शान्ति प्रद शिक्षा का प्रतिदिन लाभ लेते हैं। इसके द्वारा किये जाने वाले कार्यों की ओर विश्व-भर के लोगों का ध्यान गया है और अब भारत तथा अन्य 50 देशों में इसके 1500 आध्यात्मिक शिक्षा केन्द्र हैं। संयुक्त राष्ट्र संघ ने भी इसके कार्य के महत्त्व को स्वीकार करते हुए इसे एक गैर-सरकारी संस्था के तौर से स्थान दिया है।

यह संस्था कोस्टा रीका देश में स्थित शान्ति विश्वविद्यालय के कार्यों की ओर ध्यान आकर्षित होता है। विश्वविद्यालय (Peace University), जो संयुक्त राष्ट्र संघ का ही विश्व-विद्यालय है, से भी सम्बन्धित है।

नैतिक उत्थान व सामाजिक परिवर्तन के कार्य में युवाओं का योगदान

अब इस अन्तर्राष्ट्रीय युवा वर्ष में ईश्वरीय विश्व-विद्यालय ने अपने देश के प्रधान मन्त्री के वक्तव्य के अनुरूप ही एक विशाल कार्यक्रम का आयोजन किया। समाज के श्रेष्ठ परिवर्तन व नैतिक उत्थान के इस आवश्यक कार्य में हज़ारों युवा इसमें शामिल थे। वैसे तो यह विश्वविद्यालय पहले ही कई नगरों, ग्रामों व कस्बों में अपना यह पुनीत कर्त्तव्य करता रहा है परन्तु इस वर्ष की सेवा-योजना में विशेष स्थान ग्राम-सेवा को दिया गया क्योंकि भारत की अधिकांश जनसंख्या तो गाँवों में ही बसती है।

पदयात्राओं का कार्यक्रम

युवा वर्ग, जो इस ईश्वरीय विश्व-विद्यालय के विद्यार्थी हैं, ने इस वर्ष गाँव-गाँव में पद यात्रा करने का निर्णय लिया। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय द्वारा संचालित एक रजिस्टर्ड संस्था-राजयोग एज्युकेशन और रिसर्च फाउन्डेशन — ने इस कार्यक्रम का आयोजन उपरोक्त लक्ष्य को लेकर किया। इस रजिस्टर्ड संस्था का एक युवा विभाग (Youth Wing) है जो 'यूथफॉर पीस' (Youth for Peace) के नाम से जाना जाता है। इस युवा विभाग ने मार्गों की विस्तृत जानकारी हासिल करके देश-भर में 12 बड़ी-बड़ी पदयात्राएं आयोजित कीं।

युवा जागृति गीत

युवा तू बन सर्व महान, तू है सारे जग की शान
शिव पिता की आस तुम्हीं पे, तू कर विश्व का कल्याण
युवा तू बन सर्व महान ....

1. तुझ में शक्ति शिव की समाई, तू निर्बल का सहारा है
जन-जन को तुम्हें पावन करना, शिव ने आज पुकारा है
तेरे अंग-अंग में गूंजेगा, फिर से गीता का ज्ञान
युवा तू बन सर्व महान ....

2. छोटे और बड़ों ने लगाई, युवक पर ही आस है
युवा तू जग जाये तो, विश्व-शान्ति पास है
उठ युवा सेवा में लग जा, शिव पिता की बात तू मान
युवा तू बन सर्व महान ....

3. गुणों की खान तुम हो युवा, तुम शिव का वरदान हो
आने वाली नव पीढ़ी की, युवा तुम ही आन हो
हर आँख देखे तुझको, तेरे हों ऐसे कर्म महान
युवा तू बन सर्व महान ....

नई प्रकार की पदयात्राओं के नये उद्देश्य और इस कार्यक्रम का लोगों पर प्रभाव

भारत वर्ष में आज तक अनेक संस्थाओं ने अनेक प्रकार की पदयात्राएँ अथवा ग्राम-यात्राएँ भी की हैं। भक्त, लोगों ने जन्म-जन्म अनेक प्रकार की तीर्थ यात्राएँ भी की हैं। भारत वर्ष में यात्रा का वैसे भी बड़ा आध्यात्मिक महत्त्व है परन्तु इस देश के ही नहीं, विश्व के इतिहास में ऐसी यात्राएँ कभी नहीं हुई जिनके द्वारा जन मानस को अशुद्ध आहार, व्यवहार, विचार और आचार से मुक्त कराने का एक अभियान एक बहुत-बड़े पैमाने पर किया गया हो।

यह सही अर्थ में 'यात्रा' थी

'यात्रा' शब्द 'या' और 'त्रा' – इन दो शब्दों से बना है। संस्कृत के 'या' शब्द का अर्थ है 'जो' और त्रा शब्द का अर्थ है 'त्राण' अर्थात 'मुक्ति'। जिस प्रयास अथवा प्रयत्न से आत्मा को विषय-विकारों और कर्म बन्धनों की ज़ंजीरों से मुक्ति प्राप्त हो, वही वास्तव में यात्रा है। इस अर्थ को यदि ध्यान में रखा जाए तो इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय के युवकों और युवतियों ने जो यात्राएँ की, वे सही मानों में यात्राएँ थीं क्योंकि इसका लक्ष्य जन-जन को दुर्व्यसनों, दुर्भावनाओं और कलुषित विचारों से मुक्त कराना था। युवा वर्ग ने ये यात्राएँ किसी ऊँची पहाड़ी पर स्थित किसी मन्दिर तक पहुँचने के लिए या किसी नदी में डुबकी लगाने के लिए नहीं कीं बल्कि इन्होंने स्वयं को मन्दिर समान बनाते हुए मन को ज्ञान सरोवर में डुबकी लगवाकर उनकी सेवा के लिए यात्राएँ की जो अपने मन को तीर्थ के समान बनाना चाहते हैं परन्तु जिन्हें थोड़ी प्रेरणा और मार्ग-दर्शना मिलने की आवश्यकता है।

दक्षिण दिल्ली में पदयात्रा का उद्घाटन करते हुए भ्राता एच. आर. सेठी जी, कार्यकारी पार्षद दिल्ली।

यह एक साधना भी थी और सेवा भी

भारत वर्ष साधु-सन्तों का देश है। यहाँ आज भी गेरुआ अथवा भगवा वस्त्र पहने लाखों संन्यासी और महात्मा अपने-अपने सम्प्रदाय का प्रचार कर रहे हैं। परन्तु ये जो युवा जन पदयात्रा के लिए निकल पड़े, वे तो श्वेत वस्त्रधारी, पवित्र प्रवृत्ति मार्ग के कर्मठ लोग थे। वेषभूषा की दृष्टि से ये साधु नहीं दिखाई देते परन्तु ये साधना के मार्ग पर काफ़ी आगे निकल चुके थे। कई-कई महीनों तक गर्मी, वर्षा, धूल, मिट्टी और ऊबड़-खाबड़ रास्तों का सामना करते हुए इस लक्ष्य को लेकर चलते जाना कि हम भारत देश को पावन बनायेंगे – यह स्वयं में एक बड़ी साधना थी। इनमें से कई यात्रा दल रात्रि को ग्यारह बजे सोकर प्रातः पुनः 2.00 बजे उठकर योग युक्त हो फिर यात्रा के लिए तैयार हो जाते – यह बात स्वयं इस बात का प्रतीक थी कि ईश्वरीय सेवा के साथ इनमें जन-मानस की कितनी लग्न थी।

रायगढ़ से चन्द्रपुर तक पद यात्रा निकाली गई जिसमें रायगढ़ के प्रमुख व्यापारी राम-स्वरूप रतेरिया जी सामने दिखाई दे रहे हैं।

पद यात्रा के उद्देश्य

इन अनोखी पदयात्राओं का उद्देश्य गांवों की जनता को इस बात के लिए प्रेरित करना था कि वे अपने जीवन में नैतिक मानवीय व अध्यात्मिक मूल्यों को स्थान दें तथा तनाव-मुक्त व मादक-द्रव्यों रहित जीवन जियें।

1. यह दृष्टिकोण अपनाना कि **हम सब भाई-भाई हैं** और एक ही परमपिता परमात्मा की सन्तान हैं **अर्थात विश्व-बन्धुत्व का दृष्टिकोण अपनाना।**

2. नफ़रत, जो फूट और बटवारे को जन्म देने वाला दुर्गुण है, को त्याग, आत्मिक प्रेम को अपनाना।
3. तम्बाकू का परित्याग।
4. शराब तथा अन्य मादक द्रव्यों को छोड़ना।
5. सात्त्विक और शाकाहारी भोजन का सेवन करना।
6. व्यक्तिगत व सामाजिक समस्याओं को सुलझाने के लिए हिंसात्मक तरीकों का त्याग करना।
7. प्रतिदिन राजयोग का अभ्यास करना क्योंकि इससे शान्ति मिलती है और अन्य भी कई प्रकार के लाभ होते हैं।
8. अपने को 'आत्मा' निश्चय करना तथा कर्म-विधान व नैतिक मूल्यों के बारे में जानकारी हासिल करना।
9. आत्म-नियन्त्रण द्वारा जनसंख्या-नियन्त्रण में सहयोग देना।
10. नारी-जाति का आदर करना।
11. अश्लील फ़िल्मों व साहित्य का त्याग करना।
12. बाल-विवाह और दहेज-प्रथा जैसी सामाजिक बुराइयों तथा अन्ध-विश्वास का बहिष्कार करना।

युवा द्वारा स्व परिवर्तन व समाज परिवर्तन के लिए किये गए कार्य

उपरोक्त लक्ष्य को लिए हुए, युवा संगठन, भारत के लगभग सभी राज्यों के सैंकड़ों गांवों में गए। उन्होंने वहां आध्यात्मिक प्रदर्शनियाँ कीं, राजयोग शिविर किये, आध्यात्मिक प्रवचन किये, प्रोजेक्टर स्लाइड्स दिखाई तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम भी किये। इन द्वारा उन्हें तम्बाकू व शराब सेवन करने तथा तामसिक भोजन और विकारी जीवन के नुकसान बताये गए और लोगों को जिन्दगी में कुछ ऊँचे मूल्यों को अपनाने तथा नारी-जाति का सम्मान करने की प्रेरणा दी।

दूसरों पर किसी की नसीहत का तब प्रभाव पड़ता है जब नसीहत करने वाले के अपने जीवन में वह बात आई हो। जो स्वयं ही पवित्र न रहता हो, वह यदि दूसरों को पवित्र बनने का उपदेश दे तो उसके उपदेश का कोई प्रभाव नहीं पड़ता। परन्तु ये जो युवा जन समाज के नैतिक नव-निर्माण के कार्य में तत्पर हुए, ये स्वयं ही व्रती थे, इसलिए इनके वचनों में प्रभाव शक्ति थी।

फिर हम देखते हैं कि आज लोगों के मन में युवकों के बारे में यह मान्यता है कि वे प्रायः जल्दी उत्तेजित हो उठते हैं और आवेश तथा आक्रोश को रोक नहीं पाते। उनके मन में यह चित्र है कि युवक जब रुष्ट हो जाते हैं तब पथराव, तोड़-फोड़, अग्निकाण्ड, अनुशासन हीनता और उद्दण्डता में परिणित होते हैं। अतः लोगों को देखकर आश्चर्य भी होता और खुशी भी कि आज युवक अनुशासनहीनता को समाप्त करने, जीवन को संयम-नियम युक्त बनाने और अहिंसा तथा मर्यादा को अपनाने के लिए कटिबद्ध हो रहे हैं। वे यह सोचते कि यह तो कोरे उपदेशकों से बेहतर हैं क्योंकि ये इस आयु भाग में स्वयं अपने आचरण में महा संयमी हैं। ये नए प्रकार के महात्मा हैं और महावीर भी। ये विद्यार्थी भी हैं और शिक्षक भी। ये भाई-बहन भी हैं और मार्गदर्शक भी। उन्हें लगता कि अब सृष्टि के परिवर्तन के शुभ लक्षण स्पष्ट दिखाई दे रहे हैं। जब ये युवक नारा लगाते – 'युवा जागेगा तो जग जागेगा' तब उनको लगता कि यह बिल्कुल सही बात है। इस प्रकार वे उन युवकों के ओजस्वी आह्वान पर अपने व्यसनों और बुराइयों को छोड़ने के लिए प्रतिज्ञा करने को तैयार हो जाते।

जनता पर प्रभाव

बहुत-से लोगों ने स्वेच्छा से इन बुराइयों को त्यागने की प्रतिज्ञा की। गाँवों के दृश्य सचमुच हृदयस्पर्शी थे। ग्रामीण लोगों ने पदयात्रियों का बहुत स्नेह से स्वागत किया और इस कार्य की आवश्यकता तथा महत्त्व को व्यक्त किया। कुछ ग्रामवासियों ने पद यात्रियों को नियमित रूप से आध्यात्मिक शिक्षा देने के लिए स्थान भी दिये (और कुछ ग्रामों में तो छोटे-छोटे उप-सेवा-केन्द्र खुल भी गये हैं)। जब ये ग्राम वासी इन युवाओं को प्रातः काल विदाई देने लगते तो कुछेक की तो आँखें प्रेम से सजल हो उठतीं। चाहे वे ग्राम वासी किसी भी जाति या धार्मिक सम्प्रदाय के थे, उन्हें ऐसा महसूस होता कि ये युवा पद यात्री हमारे ही गाँव व हमारे ही परिवार का एक हिस्सा हैं। उन्हें ऐसा अनुभव होता कि इनके द्वारा दी जाने वाली शिक्षाएँ सार्वभौम हैं और जिन नियमों की धारणा पर वे बल देते हैं, वे हमारे स्वास्थ्य, खुशी और उन्नति के लिए अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हैं।

सरकारी और गैर-सरकारी संस्थाओं का तथा नगरपालिका का सहयोग

सभी स्थानों पर ग्राम पंचायत, ज़िला-अधिकारियों व नगरपालिका ने सभी पदयात्रियों का उत्साहवर्द्धक स्वागत किया। कई संस्थाओं और संगठनों ने उनको सम्मानित किया। इन संस्थाओं में धार्मिक, शैक्षणिक और सामाजिक संस्थाएँ, रोटरी क्लब, लायन्स क्लब, जेसीस और नगरपालिका भी शामिल हैं। अहमदाबाद में वहाँ की म्युनिसिपल कारपोरेशन ने स्वयं पदयात्रियों का भव्य स्वागत किया।

इस प्रकार जन-जन ने इस आध्यात्मिक आन्दोलन का हार्दिक स्वागत किया और युवा पदयात्रियों को अपने कार्यक्रम में बहुत ही सफलता प्राप्त हुई।

धार्मिक, भौगोलिक और ऐतिहासिक दृष्टिकोण से

कन्याकुमारी भारत का एक विशेष स्थान है और वहां से प्रारम्भ होने वाली भारत एकता युवा पदयात्रा भी विशेष प्रकार की यात्रा थी। कन्याकुमारी के निकट ही सागरों का त्रिवेणी संगम है। यहां से ही ब्रहमाकुमारों और कुमारी कन्याओं की 9 जून को प्रथम युवा पदयात्रा प्रारम्भ हुई। एक महत्त्वपूर्ण बात यह है कि इसकी शुरूआत कराने के निमित्त बनी ब्रहमाकुमारी दादी प्रकाशमणि जी, जो कि स्वयं ही कुमारी ब्रत लिये हुए हैं और पवित्रता तथा निर्व्यसन जीवन की साक्षात मूर्ति है।

पदयात्री कन्याकुमारी से देहली की ओर अग्रसर

3500 किलोमीटर लम्बी यात्रा

अन्तर्राष्ट्रीय युवा वर्ष में प्रजापिता ब्रहमाकुमारी ईश्वरीय विश्वद्यिालय ने जो अन्य पदयात्राएं आयोजित कीं, उन सभी में से ये सबसे लम्बी यात्रा थी जिसे 137 दिन के बाद देहली में पहुंचना था। यह यात्रा भारत के 9 प्रदेशों में से होकर गुजरी– तामिलनाडू, केरल, पांडेचरी, कर्नाटक, आन्ध्रप्रदेश, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, हरियाणा और दिल्ली में प्रवेश हुई। **इन सभी प्रदेशों में कुल मिलाकर लगभग 4800 किलोमीटर लम्बे मार्ग पर लोगों को पवित्रता और शान्ति का संदेश देते हुए जाना था।** इसके अतिरिक्त यह जिस-जिस गांव या शहर में से होकर गुजरी, वहां भी ये पदयात्री शान्ति यात्रा या शोभा यात्रा में सम्मिलित होते थे। यदि इस दृष्टि से देखा जाये तो इन युवा पदयात्रियों ने 4000 से भी अधिक किलोमीटर यात्रा की होगी। इसके दौरान वे लाखें लोगों से मिले होंगे और उन्होंने प्रवचनों, सांस्कतिक कार्यक्रमों, प्रदर्शनियों, रेडियो वार्ताओं, दूरदर्शन, पत्रकार सम्मेलनों आदि-आदि साधनों से अथवा किसी न किसी तरीके से भारत के लोगों को पवित्रता की प्रेरणा दी होगी।

इनके इस रास्ते में विभिन्न प्रदेशों और उनके गांवों में विविध प्रकार के भाषा-भाषी इनके सम्पर्क में आये और इन्होंने हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख, ईसाई, जैन पारसी तथा अन्य मतावलम्बी लोगों को भारत एकता का तथा निर्व्यस्न जीवन का मार्ग दर्शाया। तामिल, तेलगु, कन्नड़, मलयालम, अंग्रेजी, मराठी, हिन्दी, उर्दू आदि भाषा बोलने वाले सभी लोगों को शान्ति का संदेश दिया।

विशिष्ट व्यक्तियों की विशिष्ट सेवा

ये पदयात्री भारत के अनेक प्रसिद्ध धार्मिक ऐतिहासिक व्यापारिक एवं राजनीतिक स्थानों में से होकर गुजरे और इस प्रकार केवल जन-जन को संदेश मिला बल्कि उन-उन नगरों के विशिष्ट लोग भी समाज-सुधार के इस अभियान में सम्मिलित हो गए। इस प्रकार मद्रास में तामिलनाडू के राज्यपाल भ्राता एस. एल. खुराना से उनकी भेंट हुई। वहां राज्यपाल महोदय ने पदयात्रियों को राजभवन में आमंत्रित कर उनका स्वागत किया। यात्रियों के मद्रास पड़ाव में वहां के शेरिफ (Sheriff) भ्राता मोहम्मद अब्दुल अली जी ने उन्हें अपने निवास स्थान पर आमंत्रित कर सम्मानित किया और कहा कि ये युवा यात्री बहुत ही उच्च सेवा कर रहे हैं। तामिलनाडू के प्रसिद्ध नगर मदुरई में विश्वविख्यात मीनाक्षी मंदिर, जो कि भवन निर्माण कला का उच्च नमूना भी है और पर्यटकों के लिए आकर्षण केन्द्र भी, के मुख्य पुजारी ने पदयात्रियों का स्वागत करते हुए उनकी धारणाओं और उनके कार्यों की प्रशंसा की। अनयश्वः उसी मदुरई नगर में कामराज विश्वविद्यालय में पदयात्रियों के आगमन पर मेडीटेशन हाल (Meditation Hall) का उद्घाटन हुआ।

बंगलौर के मेयर भ्राता एम. एल. सुब्बाराज जी ने

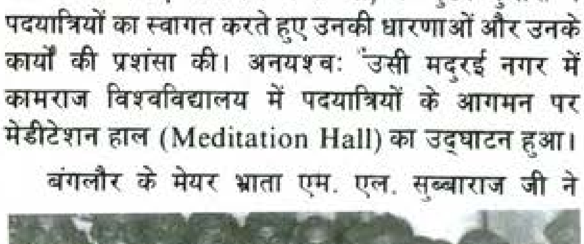

कन्याकुमारी से दिल्ली 'भारत एकता युवा पद यात्रा' के पदयात्री मद्रास में, राज्यपाल भ्राता एस. एल. खुराना के साथ।

कार्पोरेशन हाल में, जहां अनेक कार्पोरेटर भी उपस्थित थे, पदयात्रियों का स्वागत किया और इन द्वारा किए जा रहे कार्य को महत्त्वपूर्ण बताया।

हैदराबाद के सिटी साइंस कालेज के प्रांगण में म्युनिसिपल एडमिनिस्ट्रेशन के मंत्री भ्राता कलावेंकटराव तथा भूतपूर्व मेयर बहन कुमुद जी ने पदयात्रियों का स्वागत किया। बहन कुमुद जी (Lady Mayor) ने पदयात्रियों को कहा कि जिस कार्य का बीड़ा उन्होंने उठाया है उससे देश का भाग्य बहुत ऊँचा बनेगा। पदयात्रियों में कन्याओं को भी शामिल हुआ देख उन्होंने कहा कि ये बात बहुत सराहनीय है कि गांव-गांव में जाकर ये कन्याएं लोगों को पवित्रता का मार्ग दर्शा रही हैं।

सायंकाल को एक कार्यक्रम में आन्ध्रप्रदेश के गृहमन्त्री भ्राता वसन्त नागेश्वर राव ने कहा कि मैं इन सभी व्यस्नों से मुक्त होने हुए भी इन पदयात्रियों की तरह त्याग, तपस्या सेवा करने में असमर्थ हूं। उन्होंने यह भी कहा कि वे प्रतिदिन ईश्वरीय स्मृति में बैठा करेंगे। इसके लिए उन्होंने प्रतिज्ञा-पत्र भी भरा।

सिकन्दराबाद में इन पदयात्रियों के आगमन से सम्बन्धित एक कार्यक्रम में प्रसिद्ध सिनेतारिका जमुना देवी ने अपने भाषण में कहा कि ये युवा पदयात्री लोगों को अश्लील फिल्में न देखने के लिए जो प्रेरणा दे रहे हैं वो बहुत ही महत्त्वपूर्ण है क्योंकि वास्तव में आज फिल्मों में अश्लीलता और हिंसा की प्रचुर सामग्री भरी रहती है वही वास्तव में देश के नैतिक पतन का कारण है। **उसी कार्यक्रम में सेन्ट्रल फिल्म सेन्सर बोर्ड (Central film censor board) के सदस्य भ्राता टी. सुब्बोरामी रेड्डी जी ने युवा पदयात्रियों से प्रेरित हो कर कहा कि वे भविष्य में इस बात का पूरा प्रयत्न करेंगे कि कामोत्तेजक और अश्लील बातों को फिल्मों में कोई स्थान न मिल सके।**

जब ये युवापदयात्री यवतमाल में थे तब रक्षाबन्धन के पावन-उत्सव से सम्बन्धित एक कार्यक्रम में जिला परिषद के

मद्रास में विधान परिषद् के अध्यक्ष भ्राता एम. पी. सिवागनानम युवा समारोह में संबोधित करते हुए

प्रमुख भ्राता गोविन्द राव पाटिल ने रक्षाबन्धन की चर्चा के प्रसंग में ब्रहमाकुमारी बहनों के सम्मुख ये प्रतिज्ञा की कि वे भविष्य में कभी भी मांसाहार पान और तम्बाकू का सेवन नहीं करेंगे।

नागपुर में पदयात्रियों के कार्यक्रम में वहां के मेयर भूतपूर्व महाराजा तेजसिंह राव भौंसले, भूतपूर्व महारानी चित्रलेखा भौंसले, भूतपूर्व राज्य-गृहमंत्री तथा Civil defence कालेज के भूतपूर्व डायरेक्टर एवं अन्य विशिष्ट व्यक्ति भी उपस्थित थे। इस अवसर पर भूतपूर्व गृहमंत्री महोदय ने कहा कि राजयोग मार्ग सभी मार्गों में उत्तम है वो ऐसा मार्ग है जिसके बारे में कहा जा सकता है कि सभी मार्गों की अच्छाईयां उसमें सम्मिलित हैं।

पवनार में विनोबा भावे का जो प्रसिद्ध "परमधाम" आश्रम है, उसके वर्तमान संचालक विनोबा भावे के भ्राता शिवाजी भावे से भी पदयात्रियों की भेंट हुई। उन्होंने पदयात्रियों से उनके उद्देश्यों, उनकी धारणाओं और सेवा के विषय में काफी बातें पूछी और अंत में अपनी सन्तुष्टता प्रगट करते हुए उन्होंने अपने हाथों से सबको मिश्री खिलाई, नींबू

मद्रास में नगर निगम की ओर से अभिनंदन समारोह में (बांए से) ब्र. कु. कैलाश, भ्राता आसिफ मुहम्मद अली, (शरीफ मद्रास) ब्र. कु. लक्ष्मी तथा शिवकन्या। शैरिफ

पाण्डेचरी में स्वागत समारोह में बोलते हुए मुख्य न्यायाधीश भ्राता राम दयाल टूरिजम के डारैक्टर को पदयात्रा उद्देश्य बताते हुए

का शर्बत पिलाया और कहा "मैं जानता हूं कि आपकी संस्था एक बहुत अच्छा कार्य कर रही है।

हिन्दुपुर में स्वागत समारोह में ब्र. कु. हृदयपुष्पा संबोधन करते हुए

मुलताई (भोपाल क्षेत्र) में मध्य प्रदेश के शालेय शिक्षा एवं युवा कल्याण मंत्री ने कहा कि– "ये सभी नवयुवक साहस और राष्ट्रीय एकता व मानव मात्र की नैतिकता का ईश्वरीय सन्देश देने निकले हैं जो सरहानीय है परन्तु इसका श्रेय ब्रहमाकुमारी बहनों को है जो जन-जन के चरित्र निर्माण की सेवा में समर्पित हैं।" उन्होंने आगे कहा कि– "भारत में वन्दे मातरम का गायन है जो इन बहनों ने सत्य सिद्ध किया है।

बैतूल में मध्य प्रदेश के खाद्य मंत्री भ्राता कन्हैया लाल शर्मा ने कहा– "मानव स्वयं को भूल परमात्मा से विमुख एवं चरित्रहीन बन गया है। अतः उसे अध्यात्म का बोध जरूरी है। उस दिशा में ब्रह्माकुमारी संस्थान के इन त्यागी युवकों द्वारा आयोजित पदयात्रा राष्ट्रीय एकता व नैतिक जागृति लाने हेतु सशक्त प्रयास है।"

इटारसी में मध्य प्रदेश के स्थानीय शासन मंत्री भ्राता तनवेत सिंह कीर ने जन-समूह को सम्बोधित करते हुए कहा कि– "आज की विपरीत परिस्थितियों एवं भौतिकवादी आकर्षण के समय में जबकि मनुष्य का अधिकाधिक नैतिक पतन हो रहा है, इन दृढ़संकल्प वाले स्थित युवकों द्वारा मनुष्य को गांव-गांव जाकर और अध्यात्म का मौलिक ज्ञान देकर जो व्यसनों का त्याग कराया जा रहा है, वह सामयिक एवं आवश्यकता की प्रतिमूर्ति है।"

मण्डीदीप में मध्य प्रदेश के उच्च शिक्षा मंत्री भ्राता चित्रकांत जायसवाल ने कहा कि– "निश्चय ही ये युवक भारत को नई दिशा देने में सफल होंगे और राम राज्य लायेंगे।"

भोपाल में महापौर महोदय ने कहा कि– "आज की विषम परिस्थितियों में, जबकि अनेक ताकतें राष्ट्र के विखण्डन का प्रयास कर रही हैं तथा मानव चरित्रहीन बनता जा रहा है, इन युवकों द्वारा पदयात्रा के माध्यम से राष्ट्रीय एकता व ग्रामोत्थान का साहसिक कार्य किया जा रहा है। इस प्रयास से यदि कुछ लोग भी व्यसन-मुक्त हो जायेंगे तो भी वह बड़ी सफलता होगी। मुझे विश्वास है कि ऐसे युवक जो गांव-गांव में परमात्म संदेश व ज्ञान-प्रकाश फैलाने निकल पड़े हैं, एक दिन भारत में राम राज्य स्थापन कर ही देंगे।"

अन्यश्च, भोपाल में राज्यपाल महोदय ने भी पदयात्री दल को आमंत्रित किया। वहां उनके निवास पर गणमान्य व्यक्तियों और पत्रकारों के बीच राज्यपाल महोदय प्रो. के. एम. चाण्डी ने कहा– ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय के ये युवक देश और मानवता के कल्याण की भावना से पदयात्रा कर रहे हैं जो राष्ट्रीय एकता को मजबूत करेगी।

इस प्रकार मार्ग में आने वाले सभी नगरों और महानगरों में विशिष्ट व्यक्तियों ने इस सेवा-कार्य को महत्त्वपूर्ण बताया।

अनेकानेक संस्थाओं द्वारा इस सेवा कार्य में सहयोग

केवल विशिष्ट व्यक्तियों ने ही, हर स्थान पर विशिष्ट संस्थाओं ने भी इन पदयात्रियों के शुभ संकल्प और कार्य के प्रति अपनी निष्ठा प्रगट की। उदाहरण के तौर पर बैतूल में लायन्स क्लब, कांग्रेस (आई.) युवा संगठन, एन. एस. यू. तथा अन्य दस संस्थाओं के अध्यक्षों ने अपनी संस्थाओं की ओर से युवा पदयात्रियों का स्वागत किया। ऐसा ही इटारसी में भी हुआ। होशंगाबाद में नगरपालिका, गायत्री समाज, अग्रवाल समाज, लायन्स क्लब आदि कार्यक्रमों में तथा स्वागत करने में सम्मिलित हुए। बरखेड़ा में रेलवे कर्मचारियों ने सामूहिक रूप से भव्य स्वागत किया। ओबदुल्लगंज में सिंधी समाज ने तथा बीना गंज तहसील में कृषि उपज मण्डी समिति, जिला हिन्दु विश्व परिषद, राहुल कुशवाहा व्यापारी संघ इत्यादि ने इन कार्यक्रमों में रूचि ली। नरसिंह गढ़ जिला में महिला उद्योग

हैदराबाद में पदयात्री वर्षा में भी यात्रा तय करते हुए

कन्याकुमारी-देहली भारत एकता युवा पदयात्रा के यात्री भोपाल में मध्य प्रदेश के राज्यपाल प्रो. चांडी के साथ

सहकारी संघ ने और गुना जिले में 11 संगठनों ने स्वागत किया जिन में इसलाम समाज, गरीब/मजदूर संघ, कांग्रेस (आई.), मेडिकल एसोसिएशन आदि भी सम्मिलित हैं।

लोग पद-यात्रियों की पदयात्रा में सम्मिलित हो गये

केवल विशिष्ट व्यक्तियों तथा संस्थाओं के प्रतिनिधियों ही ने इस कार्य में रूचि प्रगट नहीं की बल्कि बहुत से स्थानों पर तो जनता ही काफी संख्या में इन पदयात्रियों की यात्रा में शामिल हो गयी। उदाहरण के तौर पर सुसन्धरा में लगभग 200 व्यक्तियों का जन-समूह तथा वहां के सरपंच दो किलोमीटर तक पदयात्रियों के साथ चले। बैतूल में भव्य स्वागत के बाद जन-समूह ने पदयात्रियों के साथ सारे गांव में शान्ति यात्रा की। शाहपुर में गांव के सरपंच सहित लगभग 100 लोगों ने भी पदयात्रा की और वे ग्राम की सीमा तक उनके साथ आये। ऐसा ही सोनकटहा में हुआ। राघोगढ़ तहसील में जनसमूह तथा गणमान्य व्यक्तियों ने पदयात्रा के साथ ही नगर-भ्रमण किया। इस प्रकार स्थान-स्थान पर आम जनता ने समाज-सुधार के इस कार्य में बहुत ही रूचि प्रगट की।

समाचार पत्रों तथा अन्य प्रसार साधनों द्वारा सहयोग

समाचार पत्र तथा आकाशवाणी आदि प्रसार साधनों का भी इस जन-सेवा में पूरा सहयोग मिला। इटारसी में नई दुनिया, भास्कर आदि में, भोपाल, इन्दौर, ग्वालियर आदि स्थानों में नई दुनिया, दैनिक भास्कर, जागरण, स्वदेश, पैनिक, क्रानिकल, फ्री प्रैस जनरल, हितवाद आदि समाचार पत्रों में पदयात्रा से सम्बन्धित कार्यक्रमों का समाचार प्रकाशित हुआ। इसी प्रकार हैदराबाद में भी समाचार पत्रों में इस विषय में समाचार छपा तथा आकाशवाणी ने भी अनेकानेक स्टेशनों से समाचार प्रसारित किया। सैलूर (नागपुर क्षेत्र) आदि में दूरदर्शन पर भी समाचार आया।

प्रभावकारी अभियान

इस तरह यह सारा अभियान एक प्रभावशाली अभियान बन गया। सारी यात्रा के दौरान लगभग 500 गांवों की सेवा हुई। लगभग 250 सार्वजनिक कार्यक्रमों में लाखों लोगों ने लाभ उठाया। लगभग एक दर्जन स्थानों पर पत्रकार सम्मेलन हुए और 200 से अधिक बार समाचार पत्रों में समाचार छपा। लगभग 10 बार आल इण्डिया रेडियो से तथा 24 बार प्रादेशिक रेडियो समाचार प्रसारित हुए। दूरदर्शन पर भी 4-5 स्थानों से समाचार दर्शाया गया। इन सभी बातों से इस अभियान का महत्त्व प्रगट होता है।

बिबारिया में प्रवचन से प्रभावित होकर जन-समूह ने जनता में से अनेकानेक लोगों ने बीड़ी, चिल्लम आदि फैंक कर भविष्य में कभी भी धूम्रपान न करने की प्रतिज्ञा की। हैदराबाद में उपस्थित सभा में से लगभग 300 व्यक्तियों ने किसी न किसी व्यसन को छोड़ने की प्रतिज्ञा की। किरवाड़ा गांव में एक नामी चोर इन पद-यात्रियों के सम्मुख उपस्थित हुआ और उस ने प्रतिज्ञा की कि अब वह कभी भी चोरी नहीं करेगा।

यात्रा के दौरान हर वर्ग और हर व्यवसाय के लोगों की सेवा की गयी। कहीं भक्तों की तो कहीं विद्यार्थियों की, कहीं पुलिस की तो कहीं मिलिटरी की। व्यापारियों, अध्यापकों, वैज्ञानिकों, न्यायविदों सभी व्यवसाय वालों को ईश्वरीय सन्देश दिया गया। इस प्रकार यह एक विशाल सेवा थी, यहां तक कि मार्ग में जाने वाली मोटर गाड़ियों में बैठे लोगों ने भी उत्सुकता से पूछा और सन्देश सुना।

इस यात्रा के दौरान लगभग सैंकड़ों ग्रामों में जनता को पवित्रता का और शान्ति का सन्देश मिला। लगभग 300 कार्यक्रम किये गए। दर्जनों प्रदर्शनियां हुईं। नगरों में बड़ी-बड़ी शान्ति यात्राएँ निकली और विविध कार्यक्रम हुए। इसके फल स्वरूप लगभग 3 करोड़ लोगों को जीवन

हैदराबाद में पदयात्री मिलिट्री के सिपाहियों ईश्वरीय देते हुए

पदयात्री नेशनल हाई वे पर ईश्वरीय संदेश देते हुए

को निव्यर्सन बनाने का सन्देश मिला। इनमें से 6000 से भी अधिक लोगों ने किसी-न-किसी बुराई अथवा व्यस्न को छोड़ने की प्रतिज्ञा की। सुखतवा और बलखेड़ा (भोपाल क्षेत्र) मुहाड़ (नागपुर क्षेत्र), निर्मल (हैदराबाद) आदि-आदि लगभग 35 स्थानों पर ईश्वरीय सेवा केन्द्र अथवा उपकेन्द्र खोलने के निमन्त्रण मिले जिनमें से 3 स्थानों पर तो उन्हें प्रारम्भ भी कर दिया गया।

इस यात्रा की कुछ झलकियाँ

जब पदयात्री हैदराबाद क्षेत्र में थे तब वहां हल्की या तेज वर्षा होती रही तो भी पदयात्री अपनी यात्रा करते रहे। इसको देखकर किसी समाचार पत्र में यह शीर्षक देकर समाचार छपा कि 'वर्षा होती रही परन्तु यात्रा चलती रही'।

होशंगाबाद, जो कि नर्बदा नदी के किनारे बसा है, एक धर्म-स्थली है। नर्बदा के घाट पर जब कार्यक्रम हो रहा था तो कार्यक्रम के स्थान के अलावा स्थानों पर भी जहा-तहां लोग बैठे थे और एक स्थान पर रास लीला का कार्यक्रम चल रहा था जो कि पदयात्रियों के कार्यक्रम के स्थान के थोड़ी ही दूर था। इसी बीच 3-4 बार विद्युत अवरोध हुआ परन्तु फिर भी अंधेरे में सारी जनता शान्त भाव से प्रवचन का लाभ उठा रही थी। अन्धेरे के कारण जनता रास लीला के स्थान से उठकर पदयात्रियों के कार्यक्रम स्थल पर आ गई और उन्होंने बहुत तन्मयता से प्रवचन सुने। इस स्थान पर बहुत बड़ी संख्या में लोगों ने प्रतिज्ञा-पत्र भरे। गोया अन्धेरा ही ईश्वरीय सेवा का निमिन्त साधन बन गया।

हैदराबाद क्षेत्र में आरमूर ग्राम में जनता लगभग 5000 की संख्या में उपस्थित थी। उन्होंने प्रवचन सुनने के बाद वहां स्थाई रूप से केन्द्र खोलने का भी अनुरोध किया। ईश्वरीय सेवा के बाद जब रात्रि को पदयात्री सोये, तब एक ओर बिजली न होने के कारण अन्धेरा था और दूसरी ओर मच्छरों के एक बहुत बड़े दल ने यात्रियों पर आक्रमण किया और उनका रक्त परीक्षण (Blood testing) भी शुरू कर दिया। यात्रियों ने सोचा कि यह भी निद्राजीत बनने का एक प्रसंग बन गया है। रात्रि को ठीक प्रकार से न सो सकने के बावजूद भी उन्होंने अपने दूसरे दिन की चर्या प्रातः ठीक समय पर शुरू कर दी और वे 5.30 बजे निकल पड़े। उस से पहले वे योग में बैठे। ऐसी कितनी ही विपरीत परिस्थितियों का सामना यात्रियों ने अपनी मार्ग-यात्रा में किया। उन्होंने कई स्थानों पर पत्ते बिछा कर आराम कर लिया।

भारत सरकार के फिल्म डिविजन में कन्याकुमारी और मद्रास में यात्रा की फिल्म निकाली। हैदराबाद में भी राज्य सरकार ने फिल्म निकाली जो कि शीघ्र बाद ही सारे सिनेमाघरों में दिखाई गयी।

नागपुर में मेयर पदयात्रियों को ध्वज प्रदान करते हुए

कुछ बहन-भाई हैदराबाद में प्रसिद्ध "चार मीनार" पर चढ़ गये और उन्होंने वहां से पदयात्रियों पर फूलों की वर्षा की। कुछ मिनट के लिए ट्रैफिक रूक गयी। सभी की निगाह चार मीनार से बरसते फूलों पर थी।

इस तरह ईश्वरीय सेवा-केन्द्रों के बहन-भाइयों ने तन-मन-धन लगा कर सेवा में जो सहयोग दिया और जो मनसा सेवा की वह सफल हुई।

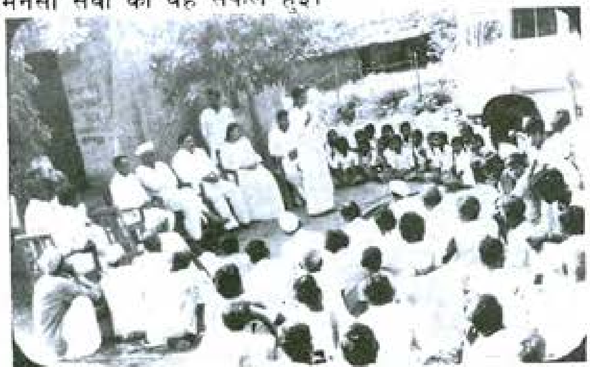

पदयात्रियों के वर्धा आगमन पर शिवपुर गांव में प्रतिज्ञा पत्र पढ़ रही है विणा बहन शिरपर

डिब्रुगढ़, पुरी और कलकत्ता से दिल्ली तक की अविस्मरणीय वृत्तान्तों से भरपूर पदयात्राएं

भारत केवल एक देश ही नहीं बल्कि एक महाद्वीप जैसा भूखण्ड है जिसमें अनेक भाषाएं, अनेक प्रकार की संस्कृतियां और अनेक प्रकार के खानपान वाले लोग रहते हैं परन्तु फिर भी अनेक मणकों या मणियों को पिरोने वाले एक सूत्र की तरह यहां की कुछ आध्यात्मिक और सांस्कृतिक परम्परायें सबको संगठित करती व परस्पर जोड़ती हैं। रहन-सहन के तरीकों में थोड़ी बहुत विविधता होने के बावजूद भी यहां के करोड़ों लोगों में भारतीयता का भाव भी सदा बना रह है। हां, जाति-पाति, राजनीतिक स्वार्थ तथा व्यक्तिगत हितों की सुरक्षा को लेकर यहां बहुत बार अलगाव के नारे भी लगते रहे हैं और लोग भाषा वाद जाति वाद, प्रदेश वाद इत्यादि को लेकर तनावपूर्ण स्थिति भी पैदा कर देते रहे हैं तथा विदेशियों के आक्रमणों को भी आमन्त्रित करते रहे हैं। इस प्रकार दो विचारों अथवा भावों के मिश्रण की स्थिति में अब यहां फिर से राष्ट्रीय एकता का नारा बुलन्द करने के लिए यह जरूरी हो जाता है कि इनको जोड़ने वाली आध्यात्मिक तार को मजबूत किया जाए और स्वार्थ भावना को मिटाकर सेवा भाव तथा ईर्ष्या, द्वेष व हिंसा को मिटाकर प्रेम, सद्‌भावना व भ्रातृत्व के भाव को जगाया जाए। तन, मन को कुषित करने वाले धूम्रमान, मद्यपान इत्यादि जो व्यस्न हैं, उनसे यहां के जन-जन को उन्मुक्त किया जाए।

ऐसे ही लक्ष्यों को लेकर ब्रह्मापुत्र, गंगा, सरस्वती और यमुना की तरह भारत को सींच कर हरा-भरा करने वाली, महानदियों एवं नदियों की भांति ज्ञान-नद प्रवाहित करने की एक योजना बनाई गई। विशेष बात यह कि भारत में फिर से ज्ञान-स्वर को गुंजा देने का बीड़ा उठाया यहां के युवा वर्ग ने— वह भी आज के जमाने में जबकि आम तौर पर युवा वर्ग भारत की आध्यात्मिक संस्कृति से अनभिज्ञ और दूर होता जा रहा है तथा पाश्चात्य रंगों में रंगता जा रहा है।

लगभग 2225 किलोमीटर की यात्रा का संकल्प करना भी वीरता का बोधक था। इस 2225 किलोमीटर की यात्रा में कई प्रकार के मौसम, कई प्रकार के भू-क्षेत्र और कई प्रकार की परिस्थितियां सामने आईं परन्तु शान्ति के ये सेनानी वीरता पूर्वक आगे बढ़ते रहे। इनके इस साहस, सेवा-भाव और उत्सर्ग की चर्चा तो हम आगे करेंगे परन्तु हम पहले यह बता दें कि यह यात्रा-त्रिवेणी कहां-कहां से और कब प्रवाहित होना शुरू हुई।

डिब्रुगढ़ (आसाम) से पदयात्रा का आरम्भ

इस पदयात्रा की पहली धारा डिब्रुगढ़ से प्रवाहित होना प्रारम्भ हुई। इसका शुभारम्भ ब्रहमाकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय की संयुक्त प्रशासिका दादी निर्मलशान्ता जी ने 17 जून को किया जिसमें 8 पदयात्री सम्मिलित हुए थे। लगभग 1 मास तक लगभग 55 ग्रामों की सेवा करते हुए तथा गोहाटी होते हुए ये पदयात्री 20 जुलाई को कलकत्ता पहुंचे। पदयात्रा को ध्वज-संकेत देकर रवाना किया। डिब्रुगढ़ विश्वविद्यालय के उपकुलपति महोदय ने। इस 1 मास की यात्रा में विभिन्न स्थानों पर विशिष्ठ व्यक्तियों ने उनका स्वागत किया। प्रेस कान्फ्रेन्स, शान्ति यात्रा इत्यादि विभिन्न प्रकार के सेवाओं के कार्यक्रम रखे गए जिससे हजारों लाखों लोगों ने ज्ञान-लाभ उठाया। यह समाचार कई समाचार पत्रों में छपा। इन सेवा के कार्यक्रमों में वहां की जनता से प्रतिज्ञा-पत्र भी भरवाये गए और जनता ने प्रभावित होकर

डिब्रूगढ़ से कलकत्ता-दिल्ली के पदयात्री रास्ते में वृक्षारोपण करते हुए

अनेक स्थानों पर स्थाई रूप से सेवा केन्द्र खोलने के निमन्त्रण दिये। फिर 20 जुलाई को यह पदयात्रा कलकत्ता से प्रारम्भ होने वाली यात्रा में शामिल हो गई।

भारत के प्रसिद्ध तीर्थस्थान श्री जगन्नाथ पुरी से पदयात्रा का प्रारम्भ

इस यात्रा की दूसरी धारा पुरी से प्रवाहित होना शुरू हुई। जिन दिनों में श्री जगन्नाथ का रथयात्रा महोत्सव होता है, उन्हीं दिनों ही युवा पदयात्रा के प्रारम्भ होने की योजना पहले ही से बनी हुई थी। उसके अनुसार प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय की मुख्य प्रशासिका दादी प्रकाशमणि जी तथा संयुक्त प्रशासिका दादी निर्मलशान्ता जी पुरी पधारीं।

इस पदयात्रा के शुभारम्भ का एक मंगल लक्षण यह था कि सरकार और जनता दोनों इस यात्रा के महत्त्व को समझते हुए प्रारम्भ से ही सहयोगी और समर्थक बने। उड़ीसा सरकार ने दादी जी को स्टेट गेस्ट (State Guest) के रूप में सम्मानित किया और उड़ीसा के गणमान्य व्यक्तियों ने उनका भव्य स्वागत किया। जनता की प्रारम्भ ही से रुचि और इस पदयात्रा का प्रारम्भ ही से प्रभाव का उल्लेख करते हुए वहां की ब्रह्माकुमारी बहनों ने जो अनेक वृतान्त लिखे हैं, उनका सार यह है कि वे जिस किसी भी विशिष्ट व्यक्ति को इस युवा कार्यक्रम में सम्मिलित होने का निमन्त्रण देतीं, वह प्रतिष्ठित व्यक्ति इस निमन्त्रण को सहर्ष स्वीकार करते हुए कहता, "हम भी उन युवकों का दर्शन करने आयेंगे।" साथ-साथ वे यह भी कहते कि "आज के गन्दे समाज में इस ईश्वरीय विश्वविद्यालय में ऐसे चरित्रवान और निष्ठावान युवक तैयार किये हैं, यह इस युग का चमत्कार है।"

इस प्रकार कई ऐसे लोग पहले कई बार निमन्त्रण दिये जाने पर इस संस्था के कार्यक्रम में नहीं आये थे, वे भी इस कार्यक्रम में सम्मिलित हुए।

वहां की ब्रह्माकुमारी बहनें लिखती हैं कि यात्रा के प्रारम्भ से पहले जब हम मार्ग का सर्वेक्षण करने जाते तो गांव या कस्बे के प्रतिष्ठित व्यक्तियों को जब यह बताते कि वहां युवा पदयात्री आने वाले हैं तो वे तुरन्त ही उनके आवास निवास आदि की व्यवस्था करने को तैयार हो जाते और सहर्ष कहते कि "ये तो हमारे गांव के और हमारे अपने भाग्य हैं कि ऐसे संयमी और नियमी युवा जन उनके यहां पधारेंगे।"

ऐसे शुभ लक्षणों में श्वेत परिधान में सुसज्जित इन शान्त चित्त युवा पदयात्रियों की यात्रा का आरम्भ बाल ब्रह्मचारिणी कमल-सम पाविनी ब्रह्माकुमारी दादी प्रकाशमणि जी के द्वारा हुआ। उस अवसर पर उड़ीसा के वित्त एवं विधि मन्त्री भ्राता गंगाधर महापात्र तथा जगन्नाथ मन्दिर के गवेशक एवं प्रसिद्ध संस्कृत विद्वान भ्राता सदाशिव रथ शर्मा ने प्राचीन सतयुगी भारतीय संस्कृति के पुनर्द्धार की चर्चा करते हुए इस सेवा की महिमा की और अपनी मंगल कामनाएं व्यक्त की।

जब यह यात्रा साक्षीगोपाल होती हुई 23 जून को उड़ीसा के प्रद्धि नगर भुवनेश्वर, जो कि पर्यटकों का आकर्षण केन्द्र है, में पहुंची तो वहां 'युवा कल्याण सम्मेलन' कार्यक्रम में उड़ीसा के राज्यपाल भ्राता पांडे जी ने तथा राज्य सिंचाई मन्त्री भ्राता मोहन नाग ने इस युवा यात्रा का तथा ईश्वरीय विश्वविद्यालय के कार्यों की महत्ता बताते हुए सहयोग देने की भावना प्रगट की।

फिर जब यह यात्रा उड़ीसा के एक अन्य प्रसिद्ध नगर कटक में पहुंची तो वहां एक समारोह में उड़ीसा के उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश भ्राता डम्बरू पाठक ने अपने भाषण में कहा– "युवक समाज की कुंडलिनी हैं।" वहां के राज्य योजना व समन्वय मन्त्री भ्राता शरत राव न अपने भाषण में कहा– "लोग कहते हैं कि युवा विध्वंसक कार्य करते हैं परन्तु ये युवा पद यात्री तो ब्रह्मा की सन्तान हैं। ब्रह्मा तो निर्माता हैं; ब्रह्मा कभी विनाश नहीं कर सकते। अतः ब्रह्मा की सन्तान ये पदयात्री भी सदा नव-निर्माण ही का कार्य करने वाले हैं।"

इस अवसर पर उड़ीसा के शिक्षा मन्त्री भ्राता यदुनाथ दास महापात्र, वहां के समाचार पत्र 'मातृभूमि' के सम्पादक भ्राता बी. एन. कार, वहां के होम गार्ड्स के महानिर्देशक भ्राता एस. एस. परहि भी उपस्थित थे और उन्होंने भी इस सेवा योजना की भूरि-भूरि महिमा की।

भुवनेश्वर में राज्यपाल महोदय भ्राता बी. एन. पांडे युवा कल्याण समारोह का उद्घाटन करते हुए

इस प्रकार इस कार्य के प्रति सरकार की सद्भावना और सहयोग भावना समस्त पदयात्रा में सतत बनी रही। अनेकानेक स्थानों पर कलेक्टरों, सबडिविजनल आफिसरों इत्यादि ने व्यवस्था करने में सब प्रकार से सहयोग दिया। समाचार पत्र भी इस समाज-सेवा में सहायक हुए। उदाहरण के तौर पर कटक में ही मातृभूमि, उड़ीसा टाइम्स, संवाद, प्रजातंत्र, समाज आदि-आदि समाचारों पत्रों ने इस कार्यक्रम को अपने पत्रों में काफी स्थान दिया और आल इण्डिया रेडियो ने भी इस कार्यक्रम से सम्बन्धित भाषणों का 10 मिनट प्रसार किया।

स्वयं पुलिस वालों ने भी इस कार्य से अपनी बड़ी सहानुभूति प्रगट की। इस प्रकार उड़ीसा के अनेक ग्रामों, उपग्रामों में से होती हुई यह यात्रा बालासोल, बरीपदा, खड़गपुर, देवरा, देवदुर्गा, कालाघाट इत्यादि से गुजरती हुई कलकत्ता पहुंची। इसकी इस यात्रा में अनेकानेक स्कूलों के मुख्याध्यापकों ने यात्रियों को स्कूलों में आमन्त्रित किया जहां विद्यार्थियों और अध्यापकों के सामने उनके भाषण हुए। तहसीलदारों, मंडल-अधिकारियों, सब-डिविजनल अफसरों ने कर्क्रम में सहयोग दिये और यात्रियों ने लगभग सवा नौ लाख लोगों को पवित्रता, शान्ति, राष्ट्रीय एकता, जातीय सद्भावना, संयमित जीवन इत्यादि का संदेश दिया। लगभग 750 लोगों ने अपने जीवन को निर्व्यसन बनाने के लिए प्रतिज्ञा पत्र भरे और इससे भी ज्यादा कई लोगों ने जीवन में आध्यात्मिक उन्नति के लिए दृढ़ संकल्प किया।

पदयात्रा की तीसरी धारा – कलकत्ता से दिल्ली

21 जुलाई 1985 को कलकत्ता में युवा शान्ति यात्रा सम्मेलन हुआ जिसमें पश्चिम बंगाल के राज्यपाल भ्राता उमा शंकर दीक्षित, संसद सदस्य भ्राता शंकर प्रसाद मिश्रा तथा भूतपूर्व मुख्य न्यायाधीश महोदय ने अपने उद्बोधन में इस श्रेष्ठ कार्य के लिए मंगल कामनाएं अभिव्यक्त कीं।

यह यात्रा अनेकानेक प्रसिद्ध नगरों, दुर्गापुर, रानीगंज, आसनसोल, धनबाद, राजगिरी, पटना, बनारस, मिर्जापुर, इलाहाबाद, अमेठी, लखनऊ, कानपुर, फर्रुखाबाद इत्यादि-इत्यादि नगरों और महानगरों में से गुज़री। रास्ते में वे अनेकानेक गांवों में से होते गए। उन्हें कई बार एक ही दिन में 40 किलोमीटर भी यात्रा करनी पड़ी और कई बार 65 किलोमीटर से भी अधिक। उदाहरण के तौर पर गाजीपुर से इलाहाबाद का जो इलाका था, उस इलाके में वे प्रतिदिन 40 और 50 किलोमीटर का रास्ता तय करते रहे क्योंकि वहां रात्रि को ठहरने के स्थान दूर-दूर थे। इसी प्रकार बख्त्यार पुर से

उद्घाटन समारोह में सम्बोधित करते हुए प. बंगाल के राज्यपाल भ्राता उमा शंकर दीक्षित जी।

फतवा आदि जाने के लिए उन्हें 1 दिन 65 किलोमीटर भी चलना पड़ा परन्तु फिर भी वे अथक सेवाधारी गांव-गांव में सेवा करते हुए आगे बढ़ते रहे।

जब वे कानपुर में थे तो प्रातः 9.00 से 12.00 बजे तक उनकी यात्रा के दौरान पूरा समय धीमी या जोर की वर्षा होती रही परन्तु फिर भी वे हाथ में छाते लिये हुए चलते रहे और माइक व म्युजिक की आवाज से कानपुर निवासियों की सेवा

पुरी-कलकत्ता-देहली पदयात्रा के पटना पहुंचने पर एक युवा जागृति सम्मेलन का आयोजन किया गया। सम्मेलन का उद्घाटन करती ब्र. कु. दादी निर्मल शांता जी तथा बिहार के मुख्य सचिव भ्राता कृष्ण कुमार श्रीवास्तवा जी।

कलकत्ता से चलने वाली पदयात्रा जब सरिया पहुंची तो रांची सेवा केन्द्र की ओर से उनका स्वागत तथा विदाई भी हुई।

करते हुए वहां की गली-गली से गुजरे। लोगों ने मकान की खिड़कियों से, बालकनियों से, दुकानों से बाहर आकर उन द्वारा दिये गए दिव्य संदेश को सुना।

डाकुओं तथा चोरों की भी ज्ञान सेवा

17 अगस्त 1985 को जब वे फतवा के आसपास 65 किलोमीटर चलकर जा रहे थे तब रास्ते में कई ट्रकों को रोककर डाकू खड़े थे। पदयात्रियों की भी डाकुओं से बातचीत हुई। उन्होंने डाकुओं से भी प्रतिज्ञा-पत्र भरवाये। निःस्वार्थ सेवा देखकर डाकू उन्हें दूर तक छोड़ने के लिए गए। फतवा से पटना सिटी वे रात को 11 बजे पहुंचे और अथक सिपाहियों की तरह सुबह 5.00 बजे तैयार होकर पुनः वहां से निकल पड़े।

इसी प्रकार जब उन्होंने विश्वनाथ गंज में रात्रि को पड़ाव डाला, तब लगभग रात को साढ़े ग्यारह बजे चोरों के गिरोह के दो खुफिया आदमी उनसे पूछने आये कि कोई तकलीफ तो नहीं है? फिर उन्होंने रात को घेराव कर चोरी करने की कोशिश की। परन्तु इन योगाभ्यासी पदयात्रियों को भनक पड़ गई थी कि ये चोरी करना चाहते हैं। वे टॉर्च लाइट जला कर रात-भर दिव्य गीत गाते रहे और ईश्वरीय ज्ञान के नारे लगाते रहे। चोरों को भी यह देखकर आश्चर्य हुआ होगा कि ये तो कोई नई प्रकार के लोग हैं। 15 चोरों का वह झुंड अपनी इच्छा पूरी होते न देख वहां से चला गया।

एक ऐतिहासिक यात्रा और अविस्मरणीय वृत्तान्त

उनकी इस दीर्घ यात्रा के दौरान ऐतिहासिक चुनार किला, विक्रमादित्य एवं राजा भृतरि हरि की समाधि, चुनार से देहली तक की गुफा (सुरंग) और मिर्जापुर के निकट सिरसा जैसे जल प्रपात पिकनिक स्थल, इलाहाबाद की त्रिवेणी, लखनऊ का इमाम बाड़ा, दुर्गापुर जैसे इस्पात नगर, धनबाद जैसे कोल फील्ड (Coal Field) इत्यादि भी आये। इन सब स्थानों पर भी उन्होंने वहां की स्थानीय जनता व आने वाले पर्यटकों की ज्ञान-सेवा ही की। वे नालन्दा युनिवर्सिटी और कानपुर के इन्स्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलोजी (Institute of technology) तथा बीटा में तारामणि विश्वविद्यालय में भी ईश्वरीय सन्देश देने गए और साथ-साथ फतेहगढ़ में सेन्ट्रल जेल में, दानापुर व आनन्दपुर (बीटा) में होम गार्ड्स की छावनियों में क्रमशः कैदियों व हजारों होम गार्ड्स को निर्विकार व निर्व्यसन जीवन की प्रेरणा देने पहुंचे। उन्होंने समाचार पत्रों के पत्रकारों से भेंट करके लखनऊ, कानपुर, धनबाद, इलाहाबाद, पटना, बनारस, अमेठी, झुमरी तलैया जैसे शहरों में जन-जन को पवित्र जीवन के लिए ईश्वरीय सन्देश दिया। यहां तक कि वे बनारस में गाय घाट से तीन नौकाओं द्वारा जब अश्व मेध घाट की ओर गए तो नदी में नहाने वाले भक्तों को भी उन्होंने ईश्वरीय ज्ञान से लाभान्वित किया। कोइलवर में उन्होंने फैमिली प्लैनिंग के लिए ट्रेनिंग लेते हुए 200 से भी अधिक अध्यापकों को ईश्वरीय ज्ञान सुनाया और पटना जैसे अनेकानेक शहरों में आकाशवाणी द्वारा भी लोगों को पवित्रता के इस अभियान का परिचय दिया। माणिकपारा जैसे स्थान पर रामाकृष्ण सेवाश्रम के संस्थापक और इलाहाबाद में डा० राम कुमार वर्मा तथा शंकराचार्य श्री शान्ताराम की भी शुभ भावनाएँ और शुभ कामनाएँ प्राप्त करते हुए प्रवचन किये। एक विशेष बात यह भी कि जगह-जगह वे स्कूलों और कालेजों में जब गए तो वहां के मुख्याध्यापक अथवा प्रधानाचार्य उनके इस कार्य से इतने प्रसन्न हुए कि उन्होंने प्रतिज्ञा-पत्रों को साइक्लोस्टाइल करा कर उन विद्यार्थियों तथा अध्यापकों से भरवाया जो प्रेरित होकर स्वेच्छा से उन्हें भरना चाहते थे। उदाहरण के तौर पर कोडरमा, जगदीश पुर, बीटा में तारामणि विश्वविद्यालय, अनन्तपुर में टी. पी. हाई स्कूल तथा नालन्दा युनिवर्सिटी आदि में वहां के प्रधानाचार्यों ने ऐसा ही कराया। देवरैय्या में जनता माध्यमिक विद्यालय के अधिकांश शिक्षकों, प्रधानचार्य तथा सभी बालकों ने प्रतिज्ञा की कि वे आज से लेकर कभी भी मादक पदार्थों का सेवन नहीं करेंगे और अपना जीवन देश-सेवा में व्यतीत करेंगे। गंज-छुड़बारा (कस्बा) के प्रधानाचार्य ने कहा कि "मैं इतने समय में इतना प्रभावित हुआ हूं कि जैसे स्वर्ग में पहुंच गया हूं।" कई जगह तो स्कूलों के बच्चों ने कहा कि वे घर में जाकर अपने माता-पिता से भी फार्म भरवायेंगे। इस प्रकार इस मार्ग में पड़ने वाला स्कूल और कॉलेज तो शायद ही कोई बचा होगा जहां इन पदयात्रियों ने आध्यात्मिक चेतना को जगाने की सेवा न की हो।

सरकारी अधिकारियों द्वारा सहयोग

स्थान-स्थान पर ब्लाक डिवेलपमेन्ट अफसरों (B.D.O.'s) तथा डिप्टी कमिश्नरों (D.C.'s) ने यह कहा कि यदि यह अभियान चलता रहा तो भारत अवश्य ही पहले की तरह एक महान देश बन जाएगा। रजोली (फुबरिया डैम प्रोजेक्ट) नामक स्थान पर वहां के कलेक्टर साहब ने इन पदयात्रियों के प्रोग्राम के लिए जेनरेटर लगवाकर लाइट का प्रबन्ध किया और वे काफी दूर तक पदयात्रियों के साथ चले। नवादा में भी ब्लॉक डिवेलपमेन्ट आफीसर ने तीन स्कूलों के बच्चों को साथ लेकर पदयात्रियों का स्वागत किया और उन्हें पूरा सहयोग दिया। ऐसा ही सहयोग सभी स्थानों पर मिलता रहा। अमेठी में सभी रोटरी क्लबों के प्रजीडेन्ट ने आग्रह किया कि "एकता व अखण्डता के जिस प्रकार के प्रोग्राम ये पदयात्री

कर रहे हैं, उसकी सूचना वे प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी जी (जो अमेठी क्षेत्र से ही चुने गए) तथा सोनिया जी को भेजेंगे।" उन्होंने कहा कि "नवम्बर में सोनिया जी इस क्षेत्र में आने वाली हैं, हम उनसे भी युवाओं की इस सेना का जिक्र करेंगे।" अमेठी में इस ईश्वरीय विश्वविद्यालय का सेवा केन्द्र खोलने का भी निमन्त्रण मिला। वहां के दैनिक न्यूज, दैनिक न्यूज स्टैण्डर्ड समाचार पत्रों में भी पदयात्रियों की सेवा का समाचार प्रकाशित हुआ।

समाचार पत्रों में तथा आकाशवाणि द्वारा समाचार

समाचार पत्रों में तो इस पदयात्रा के समाचार खूब छपे। इलाहाबाद में 'अमृत प्रभात', 'आज', 'स्वतन्त्र भारत' 'नेशनल हेरल्ड' इत्यादि में समाचार छपे तथा लखनऊ में 'नवभारत टाइम्स', 'पायनियर', 'नवजीवन', 'स्वतन्त्र भारत', 'अमृत प्रभात' आदि अखबारों में पदयात्रा के समाचार छपे। धनबाद में 'आवाज' और 'जनमत' में, गोहाटी में आसाम ट्रिब्यून और दैनिक आसाम में तथा ऐसे ही सभी अन्यान्य मुख्य नगरों व कस्बों में, जहां कहीं भी समाचार-पत्र प्रकाशित होते हैं, उन सभी में इन पदयात्रियों की सेवा के समाचार छपे।

लोकप्रिय और सेवाकारी कार्यक्रम

इस विधि यह कार्यक्रम इतना लोकप्रिय रहा और इस द्वारा ऐसी अलौकिक सेवा हुई कि लोगों के मन को बहुत हर्ष हुआ और उन्होंने स्थाई रूप में इस ईश्वरीय विश्वविद्यालय का सेवा केन्द्र खोलने का प्रस्ताव पास किया तथा निमन्त्रण दिया। उदाहरण के तौर पर तौपाची, ईश्वरीय बाजार, सरिया, राजधनबाद, झुमरीतलैया, बीबीगंज, नयानगर, विहिया, गाजीपुर इत्यादि अनेकानेक स्थानों पर स्थाई केन्द्र खोलने के निमन्त्रण प्राप्त हुए। अन्यश्च, स्थान-स्थान पर जहां सार्वजनिक कार्यक्रम हुए वहां भी हजारों की संख्या में लोग उपस्थित होते। लोग उन्हें बहुत स्नेह से मिलते और उनके प्रवचन सुनते। उदाहरण के तौर पर पारसनाथ, जो कि जैनियों का प्रसिद्ध तीर्थ है, वहां आए हजारों जैन यात्रियों व स्थानीय लोगों ने भी ज्ञान-लाभ उठाया और वहां स्थाई सेवा केन्द्र खोलने का भी निमन्त्रण दिया। हावड़ा में भी हजारों लोगों ने इस पदयात्रा के उद्देश्यों का परिचय प्राप्त किया। झुमरी तलैया (कुडरमा) में, जो कि अबरक के उत्पादन और व्यापार की भारत की एक प्रसिद्ध मण्डी है, वहां जेसीज क्लब के प्रधान व उनके सदस्यों के अतिरिक्त काफी बड़ी संख्या में लोगों ने ज्ञान-लाभ लिया। रजोली के शिव मन्दिर में लगाई गई प्रदर्शनी को काफी संख्या में लोगों ने देखा। बिहार शरीफ में रोटरी क्लब के प्रधान व सदस्यों द्वारा स्वागत के पश्चात् सार्वजनिक सभा में सहस्रों लोगों ने लाभ लिया। गांवों में भी जो सेवा हुई, वहां भी एक-एक गांव में कई गांवों के लोग इकट्ठे हो जाते। उदाहरण के तौर पर राजधनबाद में पन्द्रह गांव के लोगों की सामूहिक सेवा हुई। अन्डाल (रानीगंज) में तो गाड़ी से लोग पदयात्रियों से मिलने पहुंचे तथा उन्होंने 6.00 बजे प्रातः पहुंच कर योग शिविर किया।

इस विविध सेवा से लगभग 1 करोड़ 69 लाख लोगों को ईश्वरीय सन्देश मिला। लगभग 21,000 लोगों ने किसी न किसी व्यस्न को छोड़ने व जीवन को पवित्र बनाने के लिए प्रतिज्ञा पत्र भरे। लगभग 30 स्थानों पर स्थाई रूप से ईश्वरीय सेवा केन्द्र व उपकेन्द्र खोलने के निमन्त्रण मिले।

कलकत्ता-देहली पदयात्रा के लखनऊ पहुंचने पर ब्र. कु. सती तथा भ्राता रामकृष्ण, आयुक्त लखनऊ तथा अन्य स्वागत करते हुए

पदयात्रा बम्बई से दिल्ली की ओर गांव-गांव में नगर-नगर में नया नारा

बम्बई में गेट वे ऑफ इण्डिया एक ऐतिहासिक महत्त्व का स्थान है और उसके सामने ताज होटल वैभव शालिता का एक विख्यात स्थान है। ये दोनों पर्यटकों के लिए आकर्षण का केन्द्र भी हैं क्योंकि गेट वे ऑफ इण्डिया एक ऐसा स्थल है जहाँ पर सन् 19 में जार्ज पंचम, जो कि साम्राज्यवाद और भारत पर विदेशियों के शासन के उस समय मुख्य प्रतीक थे, आकर उतरे थे और ताज होटल एक ऐसा स्थान है जहाँ पर कई लोग शादियों, उत्सवों, पार्टियों आदि में जी-भरकर मद्यपान करते हैं। ऐसे स्थान से 4 अगस्त 1985 को युवा वर्ग की एक ऐसी पदयात्रा का प्रारम्भ होना, जिसमें भाग लेने वाले युवा जन भारत देश को शराब तथा अन्य नशीले पदार्थों और सिगरेट, बीड़ी तथा अन्य कई प्रकार की बुराइयों से छुड़ाने के लिए कृत संकल्प थे, एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक वृत्तान्त था। ताज होटल में ही यह कार्यक्रम हुआ जहाँ पर उस दिन लोग अभूतपूर्व संख्या में एकत्रित थे। वे वहाँ इसलिए नहीं आये थे कि वहाँ कोई भोज था बल्कि इसलिए कि वहाँ आज एक ऐसे अभियान का प्रारम्भ हो रहा था जिसका लक्ष्य भारत को अनेक सामाजिक बुराइयों से मुक्त कराना था।

भारत को पवित्र बनाने के इस अनोखे महायज्ञ की सफलता के लिये शुभ कामनाएँ

इस अवसर पर महाराष्ट्र के भूतपूर्व मुख्य मन्त्री, भ्राता बसन्त दादा पाटिल, युवा मन्त्री भ्राता श्री मोहिते पाटिल तथा सुप्रसिद्ध विधिवेत्ता नानी पालखीवाला भी पधारे थे। सभी ने युवा वर्ग के इस कार्यक्रम और इस श्रेष्ठ संकल्प की सराहना की और इस नये क्रान्तिकारी समाज-परिवर्तन के कार्य की सफलता के लिए अपनी शुभ कामनाएँ व्यक्त कीं। इस अवसर पर ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय की मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारी दादी प्रकाशमणि जी ने युवा पदयात्रियों को इस सेवा के लिए प्रोत्साहित किया और उन्होंने सरकार तथा संस्थाओं से अपील की कि वे राष्ट्र हित के इस कार्य में सहयोग दें और जन-जन को यह प्रेरणा दी कि वे अपने विषय-विकारों और व्यसनों के त्याग का दृढ़ संकल्प कर भारत को पवित्र बनाने के इस अनोखे महायज्ञ को सफल करें। कुशल वक्ता नानी पालखीवाला ने अपने भाषण में कहा कि विश्व में शान्ति तथा स्वर्णिम युग की स्थापना केवल यही संस्था कर सकती है। बसन्त दादा पाटिल ने अपने भाषण में इस भाव को व्यक्त किया कि यह ईश्वरीय विश्वविद्यालय समाज परिवर्तन का एक महत्त्वपूर्ण कार्य कर रहा है। इस प्रकार इस उत्साहवर्द्धक समारोह में 'आज का युवा कल का देवता—' इस गीत की मधुर स्वर लहरी में जन-समूह ताज होटल से प्रस्थान कर सामने गेट वे ऑफ इण्डिया पर एकत्रित हुआ जहाँ से युवा-यात्री पंक्ति बद्ध होकर भारत माता को दुर्गुणों की जंजीरों से छुड़ाने की प्रतिज्ञा लिये हुए रूहानी दल बल के रूप में तब आगे बढ़ना शुरू हुए जब भ्राता बसन्त दादा पाटिल ने इन्हें शिव-ध्वज दिखाया।

इनमें से कुछ शक्ति रूपा पदयात्रियों ने सिर पर कलश धारण किया हुआ था जो कि ईश्वरीय ज्ञान का प्रतीक था और सभी ने तिलक धारण किया हुआ था जो कि आत्मिक स्मृति का बोधक था और वे शिव का ध्वज हाथ में लिए विश्व के विष को हरने और परस्पर कल्याण करने के लिए निकल पड़े।

इनकी यह यात्रा कोई 1-2 दिन या 2-4 मील की यात्रा नहीं

बम्बई में पदयात्रा उद्घाटन समारोह ताजमहल होटल में सम्पन्न हुआ। बाएं से भ्राता नानीपालकी वाला जी, भ्राता बसंत दादा पाटिल, दादी प्रकाश मणि जी, ब्र. कु. मोहनी जी तथा अन्य।

दादी प्रकाश मणि जी पदयात्रियों को टीका देते हुए

थी बल्कि कदम-कदम चलकर गाँव-गाँव में पहुँचकर इन्हें रास्ते के ग्राम वासियों तथा नगर वासियों को पवित्रता का एक नया नारा देना था और इसके लिए इन्होंने देहली तक के लिए लगभग 1650 किलोमीटर की दूरी 81 दिनों में तय करनी थी। लोगों के मन से अज्ञानान्धकार दूर करने के लिए इस युवा वर्ग को यह दूरी कुछ भी महसूस नहीं होती थी।

यात्रा के ज्वलन्त वृत्तान्त

यह यात्रा बम्बई महानगर से प्रारम्भ होकर, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, राजस्थान और हरियाणा प्रदेश के अनेकानेक ग्रामों, उपनगरों व नगरों में से गुज़री। इसी दौरान कई इलाकों में से इन्हें बहुत वर्षा या बहुत गर्मी का भी सामना करना पड़ा और नगर निवासी होने के नाते ग्राम में रहने की अनेक असुविधाएँ भी इनको पेश आईं परन्तु इनमें भारत माता की सेवा का उमंग-उत्साह इतना अधिक था कि इन्हें कोई भी असुविधा कष्ट के रूप में नहीं महसूस हुई बल्कि इनके चेहरे सदा खिले रहे और ये सदा एक नैतिक संग्राम के सेनानियों की तरह आगे बढ़ते रहे। इनकी इस यात्रा में अनेक ऐसे वृत्तान्त हुए जिनको देखकर ग्राम के लोग अश्चर्यान्वित हुए।

इनमें से एक अविस्मरणीय वृत्तान्त यह है कि 7 अगस्त, 1985 को जब रात के 11 बजे थे तो लगभग 25 पदयात्रियों का एक सेवादल अपने अगले लक्षित स्थान के लिए घटाघोर अन्धेरे में से जा रहा था। वे शाहपुर से इगतपुरी जा रहे थे। इन दोनों स्थानों के बीच कोई 56 किलोमीटर का फासला था। वे शाहपुर से प्रातः पौ फटते ही निकल पड़े। परन्तु रास्ते में गाँव-गाँव में सेवा करते उन्हें देर होती गई। उन्हें रात को इगतपुरी में ठहरना था। इतनी लम्बी यात्रा करके वे रात को 11.30 बजे वहाँ पहुँचे। परन्तु वहाँ पहुँचने पर सभी ताज़ा दम दिखाई देते थे। उनके चेहरे पर सन्तोष और खुशी की रेखाएँ स्पष्ट झलकती थीं। वे इतने ताज़ा लगते थे कि जैसे रात-भर आराम करने के पश्चात सुबह को देखने में आता है। रास्ते का कुछ इलाका चट्टानी भी था। अतः उनको देखकर लोग विस्मित थे परन्तु उनकी ताज़गी का कारण ईश्वरीय सेवा व संदेश देने और जन-जागृति का कार्य करने की खुशी थी।

एक-एक गाँव में अनेक गाँवों के लोग एकत्रित

परन्तु इससे भी अधिक विस्मय की बात तो यह थी कि दूसरे ही दिन 8 अगस्त को इन पदयात्रियों को नासिक जिले के सिडकी नामक स्थान पर जाना था। जाने के समय बहुत तेज़ बरसात हो रही थी परन्तु ये हिम्मतवान यात्री रुके नहीं इस प्रकार हंसते-गाते, ईश्वरीय सन्देश देते इन पदयात्रियों ने लगभग 250 गाँवों की यात्रा की और वे अनेकानेक नगरों तथा उपनगरों में से भी गुज़रे। इनमें से कई-एक गाँवों में आसपास के दर्जनों गाँवों के लोग इकट्ठे हो जाते क्योंकि उन्हें इन पदयात्रियों के आने की पूर्व-सूचना मिली होती। उदाहरण के तौर पर पीपलगाँव में लगभग 20 गाँवों के हजारों लोग एकत्रित हुए थे जिन्होंने शोभा यात्रा और प्रवचनों के कार्यक्रम में लाभ उठाया।

बम्बई–दिल्ली 'भारत एकता युवा पदयात्रा' के उद्घाटन पश्चात् भ्राता वसन्त दादा पाटिल, ब्र० कु० दादी प्रकाशमणि जी तथा अन्य ब्र० कु० भाई बहिनें पदयात्रियों के साथ चलते हुए।

विद्यार्थियों तथा शिक्षकों की सेवा

बहुत-से गाँवों और उपनगरों में कृषकों तथा अन्य ग्रामीणों के अतिरिक्त बहुत से विद्यार्थी तथा अध्यापक भी होते। उदाहरण के तौर पर बड़नेर भैरव ग्राम में लगभग 300 विद्यार्थियों और शिक्षकों ने, अगत पुरी के पास कसारा गाँव में 700 विद्यार्थियों एवं शिक्षकों ने, एरनडोल में लगभग 500 विद्यार्थियों व शिक्षकों ने इन पदयात्रियों के कार्यक्रमों से नैतिक एवं आध्यात्मिक लाभ लिया। इस प्रकार इनके द्वारा छात्र वर्ग की भी सेवा हुई जिसकी कि आज के वातावरण में अत्यन्त आवश्यकता है।

यह बन गया स्वयं जनता का अपना एक आन्दोलन

वास्तव में इन पदयात्रियों की उमंग और तरंग से, सेवा, साधना और नम्रता से ये अभियान एक जनता का अभियान बन गया। जहाँ से ये यात्री गुज़रे, वहाँ के ग्रामीण और नगर निवासी इनके साथ ही शामिल हो गये। हम यदि जलगाँव का ही दृष्टान्त सामने रखें तो इससे यह बात स्पष्ट हो जाएगी। यह पदयात्रा जब जलगांव पहुँची तो वहाँ पर कई आकर्षक गेट भी बनाये गए थे। शहर के बाहर ही वहाँ के पुलिसाध्यक्ष, नगराध्यक्ष, सिविल सर्जन व जिलाधिकारी ने फूल मालाओं द्वारा पदयात्रियों का स्वागत किया। शहर के प्रमुख भागों से एक विशाल शोभा यात्रा भी निकाली गई जिसमें 2 घोड़े, झांकियों व बैण्ड बाजे के अतिरिक्त हज़ारों नगर वासी साथ-साथ चल रहे थे। वहाँ 'कन्या महाविद्यालय' में प्रवचनों का कार्यक्रम हुआ तथा रेडियो इन्टरव्यु भी हुआ। 'शारदा महाविद्यालय' की लगभग 1200 कन्याओं एवं 25 शिक्षकों के समक्ष प्रवचन व गीतों का कार्यक्रम भी बहुत सफल रहा। स्काउट्स एवं गाइडस के प्रशिक्षण शिविर में भी आयोजित कार्यक्रम से लगभग 250 लोगों ने लाभ उठाया। इस अवसर पर आयोजित 'प्रेस कान्फ्रेंस' में भी काफ़ी पत्रकारों ने भाग लिया। वहाँ की 'संत कबीर साधु मण्डली' व 'सिन्धी समाज' में भी इस अवसर पर आयोजित कार्यक्रम बहुत सफल रहे।

विशिष्ट लोग भी सक्रिय रूप से सम्मिलित

केवल जन-सामान्य ही नहीं बल्कि सब प्रकार के वर्गों—उद्योग पति, व्यापारी, राजनीतिज्ञ तथा अन्य बुद्धिजीवी लोंग भी इन पदयात्रियों के कार्यक्रम में सम्मिलित हो गए। उदाहरण के तौर पर राखी के दिन रात्रि को बुरहानपुर के ज्ञानवर्धिनी सभा के हॉल में आयोजित एक सार्वजनिक कार्यक्रम में वहाँ के महापौर (मेयर), शुगर फैक्टरी के चेयरमैन, प्रसिद्ध समाज-सेवक, उद्योग पति, काँग्रेस के जिलाध्यक्ष आदि गणमान्य व्यक्ति भी पधारे। कार्यक्रम समाप्त होने के बाद शुगर फैक्टरी के चेयरमैन भ्राता शिव कुमार जी ने पदयात्रियों के साथ ही चलने की इच्छा ज़ाहिर की। अतः वे बुरहानपुर से 10 किलोमीटर दूर अपनी शुगर फैक्टरी तक पदयात्रियों के साथ चले। उन्होंने पहले स्वयं तम्बाकु छोड़ने का प्रण लिया और उनके साथ-साथ 48 अन्य व्यक्तियों ने भी दुव्यर्सन छोड़ने की प्रतिज्ञा की।

इसी प्रकार भुसावल में वहाँ के विधायकों तथा प्रमुख व्यापारियों ने भी सार्वजनिक कार्यक्रम में भाग लिया और

पदयात्रा धुले नगर के मध्य में

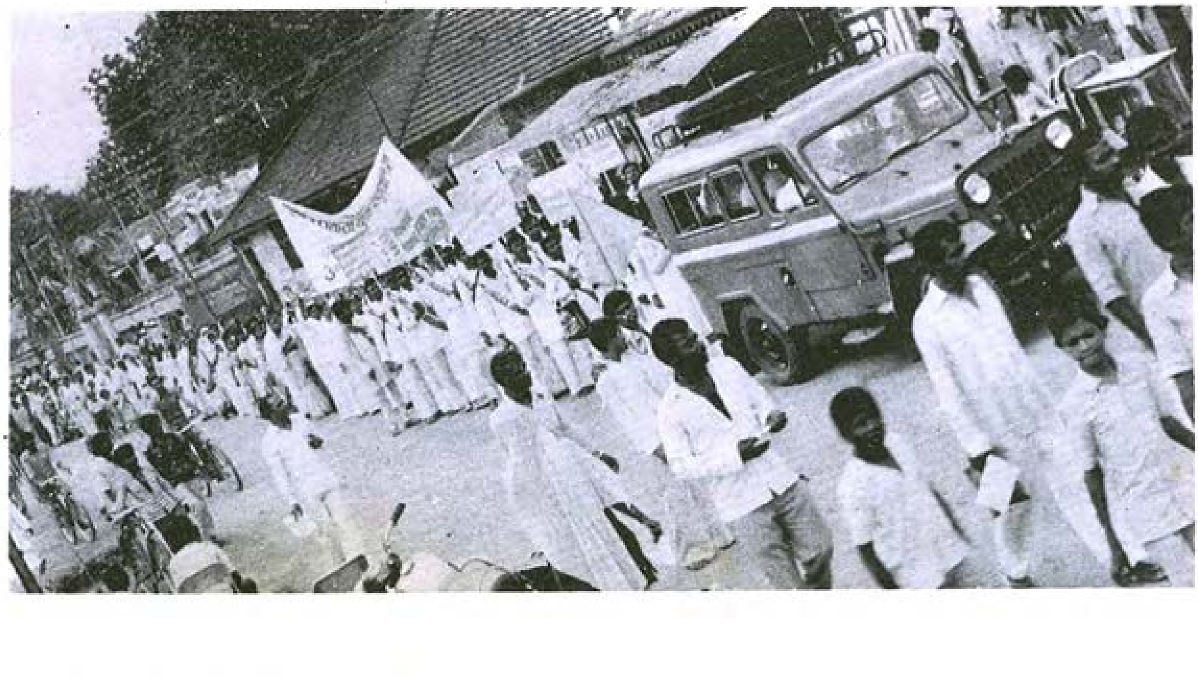

विशाल शोभा यात्रा निकालने का समस्त प्रबन्ध किया। वहाँ के रोटरी क्लब व लायन्स क्लब के सदस्यों ने तथा कॉलेज के विद्यार्थियों ने भी पदयात्रियों का हार्दिक अभिनन्दन किया। वहाँ के अग्रसेन भवन में आयोजित कार्यक्रम में महाराष्ट्र के भूतपूर्व शिक्षा मन्त्री भी पधारे तथा प्रेस कान्फ्रेन्स में भी काफी संख्या में पत्रकारों ने भाग लिया।

ऐसे ही अनेकानेक स्थानों पर नगराध्यक्षों तथा प्रतिष्ठित व्यक्तियों ने बड़ी रुचि से इन कार्यक्रमों में भाग लिया। नासिक, एरनडोल, जलगाँव आदि सभी स्थानों पर नगराध्यक्षों ने एवं आर्वी ग्राम, धुलिया आदि स्थानों पर वहाँ के सरपंचों ने इस कार्यक्रम में सक्रिय भाग लिया। बुरहानपुर के बोरगांव के सरपंच भ्राता पुरुषोत्तम बोरगांवकर, कुमठी गाँव के सरपंच भ्राता कालीराम गूजर, खण्डवा के जसवाड़ गांव के सरपंच, रोशिया गांव के सरपंच दंडेल आदि कई गाँवों के सरपंचों ने कार्यक्रम पूरा होने पर धूम्रपान, मद्यपान आदि को छोड़ने के लिए प्रतिज्ञा पत्र भी भरे।

प्रेस तथा अन्य पमुख-साधनों का सहयोग

प्रेस तथा अन्य प्रसार माध्यमों ने प्रारम्भ ही से इस नई क्रान्ति में सहयोग दिया। जब बम्बई से यह यात्रा प्रारम्भ हुई, तब भी वहाँ छपने वाले समाचार पत्रों — जनवाणी, मुंबई समाचार, प्रवासी, टाईम्स ऑफ इण्डिया, इण्डियन एक्सप्रेस आदि में विस्तृत समाचार प्रकाशित हुए। आकाशवाणी तथा दूरदर्शन पर भी समाचार प्रसारित किया गया। केवल बम्बई में ही नहीं, सभी जगह जहाँ भी पत्र-पत्रिकाएँ प्रकाशित होते, वहाँ पत्रकार सम्मेलन सफल रहा और समाचार-पत्रों ने इस कार्यक्रम को अपने पत्रों में स्थान दिया। उसका एक कारण यह था कि उन्होंने इस बात को समझा था कि यह सेवा सच्चे मन से की जा रही है और इस सेवा को करने वाले युवा जन स्वयं नियमों और मर्यादाओं का पालन करने वाले लोग हैं। इसी प्रसंग में एक वृत्तान्त का उल्लेख करना सामयिक होगा।

एक अनोखा वृत्तान्त

अगस्त के अन्तिम सप्ताह की बात है। पदयात्री जलगांव से भुसावल की ओर जा रहे थे, परन्तु उन्हें मालूम नहीं था कि कोई व्यक्ति उनकी सारी गतिविधियों पर आंख लगाए हुए हैं। ये व्यक्ति था एक पत्रकार (प्रैस रिपोटर)। वह पदयात्रियों से दूर-2 रहकर उनकी निगाह से बचकर उन्हें देखता जा रहा था। उसने यह देखा था कि उन पदयात्रियों के साथ एक मेटाडोर भी हैं। वो यह देखना चाहता था कि उस मेटाडोर में **जिसमें यात्रियों के बिस्तरे** और सामान लगा था, यात्रा में जाने वाली बहनें सवार हो कर जाती हैं या पैदल ही चलती रहती हैं। जब उसकी तसल्ली हो गई कि वे साथ-साथ पैदल जाती हैं तो वो बहुत खुश हुआ और उसने आकर यात्रियों को बताया कि कैसे वह उन पर निगाह रखे था। उसने इस ईश्वरीय विश्वविद्यालय के कार्य की बहुत सराहना की और यात्रा दल

इंदौर में बम्बई-देहली भारत एकता युवा पदयात्रा के पहुंचने पर भव्य स्वागत का दृश्य

के विभिन्न व्यक्तियों से भेंटवार्ता की। इनमें से एक मुसलमान भाई भी था, जो कि एक ड्राईवर था वो प्रारम्भ में ये समझे हुए था कि ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय एक हिन्दु संस्था है, पर पदयात्रा के दौरान जब उसने इनके आध्यात्मिक और सामाजिक क्रियाकलापों को देखा तो उसे निश्चय हुआ कि ये तो एक आध्यात्मिक विश्वविद्यालय है, जिसमें किसी भी सम्प्रदाय का व्यक्ति आध्यात्मिक शिक्षा प्राप्त कर सकता है।

जनता पर प्रभाव की कुछ झलकियां

यात्रियों की दिनचर्या इतनी अच्छी थी – प्रातः जल्दी ही उठना, सहज राजयोग का अभ्यास करना, ईश्वरीय ज्ञान चर्चा में मस्त रहना, शुद्ध शाकाहारी भोजन करना, व्यर्थ चिंतन न करना आदि-आदि। उनके इस जीवन पद्धति को देखकर महाराष्ट्र पुलिस के जो अधिकारी एवम् कर्मचारी उनके साथ-साथ चल रहे थे, वे बहुत प्रभावित हुए। जब वे महाराष्ट्र और मध्यप्रदेश की सीमा पर पहुँचे, तो पुलिस वालों का जो बीस व्यक्तियों का दल था, उनकी विदाई का दृश्य बहुत ही भावभीनी था। उनकी आँखों में आँसू आ गए और उनमें से कुछेक तो कहने लगे कि अगर हमें इजाज़त मिल जाए तो हम दिल्ली तक पदयात्रियों के साथ चलना चाहेंगे।

धुलिया में वहाँ की म्युनिसिपेलिटी के अध्यक्ष, श्री बसन्त राव पिंगले ने पदयात्रियों द्वारा आयोजित एक सार्वजनिक कार्यक्रम में कहा कि धुलिया में बहुत से प्रोग्राम होते रहते हैं परन्तु उसने आज तक ऐसा विचारोत्पादक, ज्ञानप्रद, श्रेष्ठ, समर्पणमयता से भरपूर करने वाला कार्यक्रम नहीं देखा। वह इस विद्यालय के विद्यार्थियों के त्याग व अथक परिश्रम से इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने अपनी ज़मीन को विद्यालय की सेवाओं के लिए समर्पित कर दिया।

मध्यप्रदेश की एक विशेषता यह थी कि बड़े बुज़ुर्गों के साथ-साथ 7-15 वर्ष की उम्र के बच्चों ने मद्यपान, धूम्रपान, जुआ आदि की आदतों को छोड़ने की प्रतिज्ञा ली। एक 90 वर्ष के बूढ़े व्यक्ति, जो 75 वर्ष से धूम्रपान करता आ रहा था, 60 साल से सत्संग करता था, ने प्रवचन सुनने के पश्चात उस बुरी आदत को त्याग दिया।

जगह-जगह जब ये पदयात्री जाकर लोगों को धुम्रपान, मद्यपान, जुआ इत्यादि छोड़ने की प्रेरणा देते थे तो उन व्यसनों में फंसे हुए कई ग्रामीण लोग पदयात्रियों के प्रावचनों को सुनकर और उन द्वारा आयोजित ग्राम उत्थान प्रदर्शनी को देखकर इन दुर्व्यसनों को छोड़ने की प्रतिज्ञा करते थे। इन बुराईयों को छोड़ने का प्रण करने वालों में बच्चे भी शामिल होते। एक स्थान पर 9-12 वर्ष की आयु के 9 बच्चों ने आजीवन शराब न पीने का दृढ़ संकल्प किया। इनमें से एक बच्चे ने जो कि बहुत ही दुर्व्यसनों में फंसा था, धुम्रपान, मद्यपान और तंबाकू चबाने को छोड़ने की आदत के साथ-साथ जूआ छोड़ने का भी प्रण लिया।

इन्दौर के एक ग्राम मुसाखेड़ी में एक नन्दकिशोर नामक व्यक्ति, जो प्रतिदिन 40 सिगरेट पीते थे, उसका त्याग किया।

देवास के एक गांव दन्ताना के सरपंच ने धूम्रपान छोड़ने की व एक मुस्लिम भाई दाऊद ने मांसाहार छोड़ने की प्रतिज्ञा की

उज्जैन (गांव चिंतामण जवासिया) – एक 7 साल के बच्चे व उसके पिता ने धूम्रपान का त्याग किया

उज्जैन (बदरखा बावाजी गांव) – 12 वर्ष के चन्दनसिंह ने अपने पिता की अनुपस्थिति में उनकी तम्बाकु की डिब्बी घर से लाकर दी और कहा कि मेरे पिता बहुत तम्बाकु खाते हैं, इसलिए उनकी तबियत खराब होती है, आप उनकी यह डिब्बी ले लीजिए।

इन्दौर से निकलने वाले दैनिक भास्कर के पत्रकार भ्राता विश्वास शर्मा ने तम्बाकु व नसवार छोड़ने की प्रतिज्ञा की। उसने कहा कि मैं अखबार में भी यह छपवाऊँगा कि आप लोग व्यसन, बुराइयाँ छुड़वाते हैं

राजस्थान के डूंगर गाँव में प्रवचन के बाद 15 साल के भागीरथ ने तम्बाकु छोड़ा, घर से तम्बाकू, सुपारी, व चूना के 2 डिब्बे लाकर दिये।

ये यात्री अगस्त के तीसरे सप्ताह में जब धुलिया से 8 किलोमीटर दूर ललीग गाँव में पहुँचे तो वहाँ के 74 वर्ष पुराने स्कूल में सरपंच भ्राता दंगलराव बाघ जी के निमन्त्रण पर कार्यक्रम रखा गया। प्रतिज्ञा-पत्र पढ़ने के पश्चात सरपंच महोदय उठ खड़े हुए और बोले "इंदिरा गाँधी जब चल बसी थीं तो मैंने दारू छोड़ी थी और आज इन यात्रियों को गवाह रखकर धूम्रपान छोड़ता हूँ।" ऐसा कहकर उन्होंने जेब से सिगरेट का पैकेट निकाला और तोड़ कर फेंक दिया। इतने में एक 11 वर्ष का बच्चा उठा और बोला, "मैं भी तम्बाकु खाता हूँ, मैं भी इसे छोड़ने के लिए प्रतिज्ञा पत्र भरना चाहता हूँ।"

इस विधि प्रवचनों, प्रदर्शनियों, प्रेस वार्त्ताओं, पत्रों-पत्रिकाओं में छपे विवरणों, रेडियो वार्त्ताओं, इत्यादि के द्वारा लगभग 1 करोड़ 30 लाख लोगों को ईश्वरीय सन्देश मिला, जीवन में दिव्य गुणों की धारणा की प्रेरणा मिली। नैतिक मूल्यों को अपनाने के लिए उमंग और तरंग आई और आत्मा तथा परमपिता परमात्मा का परिचय प्राप्त करने तथा आने वाले सतयुग का शुभ समाचार प्राप्त करने का अवसर मिला।

लोगों ने केवल सुना ही नहीं और केवल उसकी सराहना ही नहीं की परन्तु काफी संख्या में लोगों ने इस संदेश को स्वीकार

किया। लगभग 8000 व्यक्तियों ने धूम्रपान, मद्यपान, माँसाहार, अश्लील साहित्य, हिंसा आदि को छोड़ने के लिए प्रतिज्ञा पत्र भरा। अनगिनत लोगों ने राष्ट्रीय एकता और धार्मिक सद्भावना का दृढ़ संकल्प किया।

इस पदयात्रा के दौरान न जाने कितने लोगों ने राजयोग के अभ्यास में रुचि प्रगट की। आत्मा और परमात्मा की चर्चा को सुनकर और परस्पर भाईचारे का सन्देश पाकर उनके मन को शान्ति मिली। अनेकानेक ने यह इच्छा प्रगट की कि उन्हें यह ज्ञान की सेवा का लाभ निरन्तर मिलता रहना चाहिए। लगभग 8-10 स्थानों पर तो लोगों ने निमन्त्रण दिया कि यहाँ इस ईश्वरीय विश्वविद्यालय का स्थाई सेवा केन्द्र या उप केन्द्र हो और कि वे उसकी आर्थिक ज़िम्मेवारी लेने को तैयार हैं। एक स्थान पर तो इसके लिए इतना अनुरोध किया गया कि वहाँ एक राजयोग उपकेन्द्र खुल ही गया है। धुलिया आदि स्थानों पर तो इसके लिए कुछ लोगों ने भूमि देने का प्रस्ताव ईश्वरीय विश्व विद्यालय के सामने रखा।

इस प्रकार कुल मिलाकर देखा जाये तो युवा पदयात्रा का पुरुषार्थ सफल रहा। विशेषकर स्कूलों और कालेजों के विद्यार्थियों में चरित्र निर्माण की जो भावना भरी गई और बुजुर्गों में जो व्यस्न-मुक्ति की लहर उत्पन्न की गई तथा हर वर्ग के लोगों को संयम-नियम अपनाने की जो प्रेरणा दी गई, वह लोगों के लिए अविस्मरणीय होगी।

यों जिन लोगों ने प्रतिज्ञा-पत्र भरे, उनकी संख्या लाखों या करोड़ों नहीं थी परन्तु हमें यह याद रखना चाहिए कि कुछ लोग सदा ऐसे स्वभाव के होते हैं जो मन से दृढ़ प्रतिज्ञा करते हैं। मन से उस आन्दोलन के समर्थक होते हैं। कुछ लोग ऐसे भी होते हैं कि यद्यपि वे सब व्यस्नों को नहीं छोड़ पाते तब भी वे एक व्यस्न को तो छोड़ने का पुरुषार्थ करते ही हैं। यदि ऐसे लोगों की संख्या गिनती की जाए तब तो यह कहना होगा कि यह एक बहुत प्रभावशाली अभियान रहा।

कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जो दुर्व्यसनों से पहले ही से काफी हद तक बचे होते हैं परन्तु उनमें आध्यात्मिक उन्नति की कामना होती है और वे और अधिक नैतिक विकास के इच्छुक होते हैं। ऐसे हज़ारों-लाखों लोगों को भी एक अच्छा संग मिला और नई प्रकार की आध्यात्मिक रोशनी मिली। इस दृष्टिकोण से देखा जाये तो युवा वर्ग ने भारत के जन मानस की उच्च आध्यात्मिक सेवा की।

पदयात्री आराम करते हुए

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय द्वारा आयोजित एक युवा पद-यात्रा

भक्ति मार्ग के इतिहास में तो सोमनाथ का विशेष स्थान है ही क्योंकि इसकी गणना द्वादश ज्योतिर्लिङ्गमों में होती है और पुराणों में इस स्थान का विशेष माहात्म्य बताया गया है परन्तु इसके अतिरिक्त भी भारत एवं विश्व के इतिहास में सोमनाथ का अपना महत्त्वपूर्ण स्थान है क्योंकि भारत के उत्थान और पतन की कहानी से विश्व के उत्थान और पतन की कहानी जुड़ी है और सोमनाथ की स्थापना तथा सोमनाथ पर विदेशी आक्रमण भारत के इतिहास में बहुत ही महत्त्व के वृत्तान्त हैं। जब मनुष्य पूज्य से पुजारी अथवा देवता पद से विकारी अवस्था में उतरे तब ही उसने भक्ति और पूजा शुरु की। पुजारी स्थिति में भी जब उसके जीवन में अनेक प्रकार की कुरीतियों ने प्रवेश किया और जब भारत में परस्पर फूट हुई, तब ही इस पर विदेशी लोगों ने आक्रमण किये। फूट के कारण ही भारतवासी अपनी स्वतन्त्रता को गंवा बैठे। अत: सोमनाथ के स्थान से राष्ट्रीय एकता की आवाज़ को बुलन्द करना गोया अब भारत के इतिहास को पतन से उत्थान की ओर और काम, क्रोधादि 'विदेशियों' की परतन्त्रता से सच्ची आध्यात्मिक स्वतन्त्रता की ओर अग्रसर होने का प्रतीक था।

सोमनाथ के इतिहास से एक और आवश्यक तथ्य भी हमारे सामने आता है। वह यह कि संग-ए-असवद और सोमनाथ में जो शिव लिंग हैं, ये दोनों ही एक परपिता परमात्मा शिव के प्रतीक हैं तो वे भारत पर आक्रमण न करते और सोमनाथ को खण्डित भी न करते बल्कि इसे परमपिता परमात्मा की अवतरण भूमि मान कर और इसे मुख्यतम तीर्थ जान कर यहाँ की यात्रा के लिए आते। पुनश्च, यदि विश्व के लोगों को यह ज्ञान होता कि शिव लिङं एक अशरीरी ज्योतिस्वरूप

सोमनाथ-देहली भारत एकता युवा यात्रा के उद्‌घाटन समारोह में (बाएं से) ब. कु. सरला, गुजरात के राज्यपाल भ्राता बी. के. नेहरू, बहन शोभा नेहरू तथा दादी प्रकाश मणि जी

सोमनाथ-देहली भारत एकता युवा पदयात्रा के पदयात्रा ध्वज संकेत से पर्व

परमपिता परमात्मा का चिन्ह है तो संसार में अनेक मत-मतान्तर न होते, मतभेद भी न होते, साम्प्रदायिक दंगे भी न होते बल्कि सभी एकता के सूत्र में बंधे होते। अत: हम सब एक परमपिता परमात्मा शिव की सन्तान है और इसलिए परस्पर आत्मिक भाई भाई हैं'' – मानवता को यह पाठ पढ़ाने के लिए यहां से पदयात्रा प्रारम्भ करना बिल्कुल ही सार्थक था।

फिर जब हम सोमनाथ पर विदेशी अधिकार की कहानी पढ़ते हैं तो उससे हमें यह स्पष्ट निष्कर्ष मिलता है कि वहाँ के तत्कालीन राजा और मुख्य पुजारी में काम विकार का आवेग और उसके परिणाम स्वरूप दोनों में परस्पर द्वेष और घृणा तथा तत्कालीन जनता में अन्ध विश्वास ही पराजय के मुख्य कारण बने। अत: अब फिर से जीवन को निर्विकार और नित्यर्सन बनाने तथा अन्धविश्वास की ज़ंजीरों को तोड़ने का अभियान वहाँ से प्रारम्भ करने की बात युक्ति युक्त थी।

ऐसी मानसिक भूमिका को लेते हुए एक युवा पदयात्रा का प्रारम्भ 11 अगस्त 1985 को सोमनाथ मन्दिर के प्रांगण से किया गया। उस महत्त्वपूर्ण अवसर पर पवित्रता की मूर्त्ति ब्रह्माकुमारी दादी प्रकाशमणि जी माउण्ट आबू से वहाँ पधारी थी और गुजरात के राज्यपाल भ्राता बी.के. नेहरू तथा उनकी धर्म पत्नी शोभा बहन नेहरू भी गाँधीधाम से विशेष अतिथि के रूप में पधारे थे। हज़ारों की जनता के अतिरिक्त लगभग 2,500 सहज राजयोगाभ्यासी भाई-बहन भी पधारे थे।

इस अवसर पर इस ईश्वरीय विश्व-विद्यालय की मुख्य प्रशासिका दादी प्रकाशमणि जी ने कहा कि ''परमपिता परमात्मा ने मनुष्य समाज को ज्ञान रूपी सोमरस पिलाया था; इसलिए परमात्मा का एक नाम सोमनाथ अथवा सोमेश्वर भी है। आज फिर से उसी सोमनाथ परमपिता परमात्मा द्वारा

वीरमगांव में पदयात्रा के पहुंचने पर स्वागत समारोह में ब्र. कु. सरला पदयात्रा के उद्देश्य सुनाते हुए

प्राप्त सोमरस को जन-जन तक पहुँचाने के लिए युवा पदयात्रा का प्रारम्भ हुआ है।" उन्होंने कहा कि "आज भारत की स्थिति बड़ी करुणाजनक है क्योंकि यहां धर्म-जैसे पवित्र नाम को लेकर भाई-भाई एक-दूसरे का खून बहा देते हैं। अब इस भारत देश को सतयुगी भारत बनाने के लिए ये ब्रह्मा की सन्तान फिर से यात्रा को निकल पड़ी है ताकि ये सबको बतायें कि यह वही भारत देश है जहाँ पहले शेर और गाए भी एक घाट में पानी पीते थे।" उन्होंने आगे कहा कि ये पदयात्री "बुरा मत सोचो, बुरा मत बोलो, बुरा मत देखो, बुरा न सुनो, बुरा कर्म मत करो" इस पाठ को पक्का कराने जा रहे हैं — यही 5 मंत्र मानवता को देने के लिए वे प्रस्थान कर रहे हैं।

इसी अवसर पर गुजरात के महामहिम राज्यपाल महोदय श्री बी.के. नेहरू ने कहा — "मुझे इस बात की खुशी है कि आज इस देश के जवाँ मर्द गाँव-गाँव में शान्ति व एकता का पैगाम देने के लिए पैदल जा रहे हैं। इस यात्रा में इन्हें कठिनाइयों व अवरोधों का सामना करना पड़ सकता है क्योंकि कई लोग धार्मिक रूढ़ियों, सामाजिक कुरीतियों और दुर्व्यसनों के गुलाम हैं।" उन्होंने आगे कहा कि "भारत जो किसी समय एक स्वर्णिम देश था, आज नर्क बन गया है क्योंकि यहाँ गरीबी, अपराध और हिंसा आदि अपने खेमे डाले हुए हैं।" उन्होंने कहा कि इन सबका कारण यह है कि मानव प्रतिदिन इन्सानियत को खो रहा है। अब ये युवा पदयात्री फिर से स्थान-स्थान पर मानव मूल्यों को अपनाने का नारा लगायेंगे। उनकी धर्मपत्नि श्रीमती शोभा बहन ने कहा कि "आज सचमुच इस देश में एकता स्थापन करने की बहुत आवश्यकता है। इन पदयात्रियों ने इस विषय में जन-जागृति का कार्य करने का संकल्प लिया है, उसके लिए मैं अपनी मंगल कामना व्यक्त करती हूँ।"

इस यात्रा के दौरान यात्रियों को बहुत ही उत्साह वर्द्धक अनुभव हुए और उन्हें अपने लक्ष्य में सफलता मिली क्योंकि वे सच्चे मन से, सेवा और त्याग की भावना से ओत प्रोत होकर पवित्रता का संदेश देने निकले थे। ऐसे अनेक वृत्तान्त हैं जिससे अन्दाज़ा होता है कि लोगों ने उन द्वारा दिये संदेश को स्वीकार किया। उदाहरण के तौर पर जब वे राजस्थान में डुंगर पुर से खैरवाड़ा जा रहे थे तो रास्ते में देवल नामक ग्राम में युवा सरपंच ने न केवल उस सड़क पर स्वागत किया बल्कि पंचायत घर में उनका प्रवचन कराया जिसके फलस्वरूप 50 में से 41 व्यक्तियों ने जीवन में किसी-न-किसी व्यसन को त्यागने के लिए प्रतिज्ञा पत्र भरा।

ऊपर हम खैरवाड़ा की बात कह रहे थे। वहाँ एक स्कूल में जब कार्यक्रम हुआ तो लगभग 250 विद्यार्थी और वहाँ के शिक्षकगण उपस्थित थे। इनमें से लगभग 100 व्यक्तियों ने स्वेच्छा से व्यस्न त्याग के लिए प्रतिज्ञा-पत्र भरे।

युवा यात्रियों ने पवित्रता का यह संदेश केवल ग्रामीण लोगों को ही नहीं दिया बल्कि जहाँ उनके कदम पड़े, वहाँ ही ज्ञान के कुछ फूल खिले। राजस्थान में जावर माइन्स की ही बात को ले लीजिए। वहाँ युवा पदयात्रियों ने लगभग 10,000 कर्मचारियों के सम्मुख जीवन को श्रेष्ठ बनाने के नियमों और सिद्धान्तों की चर्चा की। जिसे वहाँ के जनरल मैनेजर और कर्मचारियों ने सराहा। ऐसा ही संदेश बारीपाल के मज़दूरों को भी दिया गया।

व्यापारी वर्ग ने भी इनके द्वारा दिये जाने वाले ईश्वरीय संदेश में काफी रुचि ली। राजस्थान में केसरीयाजी नामक स्थान पर एक व्यापारी ही सार्वजनिक कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में पधारे थे। इस कार्यक्रम में लगभग 1000 व्यक्ति उपस्थित थे जिसमें से 100 ने प्रतिज्ञा पत्र भरे।

इस पदयात्रा के अहमदाबाद आगमन पर गुजरात विश्वविद्यालय के एन.एस.एस. के छात्रों ने गुजरात विश्वविद्यालय के उपकुलपति भ्राता के.एस. शास्त्री जी की

ब्यावर में ब्र. कु. राधा पदयात्रियों का स्वागत करते हुए

उपस्थिति में अहमदाबाद नगर की सरहद पर 'गार्ड ऑफ ऑनर' प्रस्तुत किया। भ्राता शास्त्री जी तथा अन्य गणमान्य व्यक्तियों ने पदयात्रा का स्वागत किया। इस कार्यक्रम के 2 घण्टे बाद ही यह सारा दृश्य तथा समाचार गुजरात टी.वी. पर लगभग 3 मिनट तक दिखाया गया।

अगले दिन अहमदाबाद नगरपालिका की ओर से पदयात्रियों का नागरिक अभिनन्दन किया गया। इस अवसर पर ईश्वरीय विश्व विद्यालय की मुख्य प्रशासिका दादी प्रकाशमणि जी भी उपस्थित थीं। नगरपालिका की ओर से अहमदाबाद के डिप्टी मेयर ने नगर की प्रसिद्ध "शीरी सैयद की जाली" की चाँदी की प्रतिमा भेंट की।

एक अन्य कार्यक्रम में जिसे 'लायन्स इन्टरनेशनल' ने पदयात्रियों के सम्मान में आयोजित किया था, पदयात्रियों को लायन्स इन्टरनेशनल की तरफ से एक बड़ी शील्ड भेंट की गई।

परस्पर सद्भावना

एकता की भावना की जागृति के वृत्तान्तों में से एक वृत्तान्त यह है कि अहमदाबाद के मुसलमान भाई बहनों ने पदयात्रा का सम्मान किया। उनके साथ काफी दूर तक चले तथा उनके साथ नाश्ता चाय दूध आदि स्वीकार किया। उन्होंने पदयात्रियों को एक बैनर भेंट कर दिया जिस पर लिखा था—' अहमदाबाद के मुसलमान "भारत एकता युवा पद यात्रा" के पदयात्रियों का सम्मान करते हैं।" गुजरात, विशेषकर अहमदाबाद की पिछले 4-5 मास की तनाव पूर्ण परिस्थितियों तथा कौमी दंगों में यह आशा की एक किरण थी।

जनता में उत्साह की लहर

गुजरात में जेतपुर नामक स्थल पर पदयात्रिओं के स्वागत के लिए 20 गेट विभिन्न संस्थाओं ने बनाये थे। यहाँ पर आयोजित एक सार्वजनिक कार्यक्रम में संसद सदस्या श्रीमती रमा बहन भवानी ने अपने विचार प्रस्तुत करते हुए भाव-विभोर होकर कहा कि "जब से भारत में ये पदयात्राएँ शुरु हुई हैं, तब से ही भारत में ऐसा वातावरण बना है कि मुख्य 3 समस्याओं का समाधान हुआ है। ये 3 समस्याएँ थीं— पंजाब, आसाम व गुजरात की। पदयात्रियों के त्याग, तपस्या व सेवा के परिणाम स्वरूप ही ऐसे शक्तिशाली वाइब्रेशन्स भारत-भर में फैले हैं जिससे कि इन विराट समस्याओं का समाधान सम्भव हो सका है। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय मानता है कि यदि जनता पवित्रता-परायण हो जाये और ईश्वरीय स्मृति में टिक जाए तो भारत देश अटल, अखण्ड, निर्विघ्न और अति सुखकारी देश बन सकता है।

अशुद्धि के त्याग से शान्ति की ओर

एक अन्य कार्यक्रम में गुजरात के स्वास्थ्य मन्त्री भ्राता वल्लभ भाई पटेल जी ने प्याज व लहसुन का त्याग किया।

राजकोट में पदयात्री तथा शहर के गणमान्य व्यक्ति।

कार्यक्रम के एक सप्ताह बाद वे फिर ब्रह्माकुमारी बहनों से मिले और बताया कि उन्होंने उस दिन से प्याज़, लहसुन नहीं खाया है तथा उनके परिवार के अन्य सदस्यों ने भी यह छोड़ दिया है। अपना अनुभव सुनाते हुए उन्होंने कहा कि उस दिन से वे अथाह शान्ति का अनुभव कर रहे हैं। यदि मनुष्य मनोविकारों को त्याग करदे तो उसे स्थाई शान्ति मिल सकती है।

अहमदाबाद के निकट ओलक नामक गाँव में एक व्यक्ति के पास चार महीने के लिए अफीम का स्टॉक था। प्रवचन सुनने के बाद उसने प्रण किया कि आज से लेकर वह कभी भी अफीम नहीं खायेगा।

आशा की तरंगें

अहमदाबाद में ही सरखेज नामक स्थल पर आयोजित एक कार्यक्रम में भारती आश्रम के स्वामी अवधूत जी ने कहा कि "मैंने एक भविष्य वाणी पढ़ी थी जिसमें लिखा था कि भारत में एक ऐसी संस्था का उद्भव होगा जो कि शुरू में इतना प्रभाव स्थापित नहीं कर सकेगी लेकिन कुछ समय बाद वह सारे विश्व को आध्यात्मिक संदेश प्रदान करेगी। आज मुझे लगता है कि यह ही वह संस्था है जिसके बारे में मैंने पढ़ा था।"

विद्यार्थियों में राष्ट्रीय एकता की भावना

राजस्थान में उदयपुर के नज़दीक जब ये पदयात्री पहुँचे तो विवेकानन्द हॉस्टल के विद्यार्थियों ने "None can break India's Unity' तथा 'We are with you' के सलोगन बोर्ड लेकर स्वागत किया।

युवा क्रान्ति से शान्ति

उदयपुर के टाउन हॉल में रखे गये सार्वजनिक कार्यक्रम में राजस्थान विधान सभा के अध्यक्ष ने सराहना करते हुए कहा, "वर्तमान अशान्ति के वातावरण में शान्ति का संदेश लेकर आये हुए इन नवयुवकों का हमें सिर्फ स्वागत नहीं बल्कि स्वीकार करना है। आज हम भौतिक वाद को ही उच्च समझ कर इसे ही विकास का मार्ग समझते हैं। ये युवा शक्ति अच्छे कार्य पर लग रही है, ये जरूर क्रान्ति लायेगी। ये जो शान्ति का संदेश लेकर निकले हैं, वह अवश्य सफल होगा। अगर 2 लाख ने भी ये बातें धारण कर लीं तो एक-दूसरे को जगाते-जगाते करोड़ों जग जायेंगे।"

इस तरह इस यात्रा के द्वारा काफी लोगों ने जीवन में आध्यात्मिक जागृति और नैतिक उत्थान की मनसा दृढ़ हुई और ये यात्री माया मोह के विरुद्ध शान्ति की एक लड़ाई लड़ते हुए और भारत में रहने वाले बहन भाइयों को विषयों और विकारों की गुलामी का जुआ उतार फेंकने के लिए प्रेरित करते हुए देहली की ओर बढ़ा। यह युवा दल भिन्न-भिन्न प्रतिभा वाले बहन-भाइयों का सुदृढ़ और स्नेह-युक्त संगठन था। इनमें से 5 भाई तो जहाँ-तहाँ प्रदर्शनी लगाते और समेटते, 10 भाई राष्ट्रीय और जातीय एकता पर कव्वाली गाकर लोगों की रगों में एकता की लहर दौड़ाते। इनमें से अन्य 10 भाई गरबा रास करने में कुशल थे, वे रास द्वारा पब्लिक को आकर्षित करके गीत और नृत्य के माध्यम से लोगों को पवित्र बनने का प्रभावशाली पैगाम देते। इनके साथ ही 5 अन्य व्यक्ति रास वालों के लिए ढोलक डंका बजाते और ऐसी ताल से ताल मिलाते कि लोगों के मन की ताल भी आपस में जुड़ जाये। इसमें 6 व्यक्ति ऐसे थे कि लोगों में अच्छी भावनाएँ और अच्छे विचार पैदा करने के लिए कई स्थानों पर नीति वचन लिख आते ताकि उस ग्राम से प्रस्थान करने के बाद भी लोगों के मन में जीवन उत्थान का संकल्प बना रहे।

इस युवा दल ने अपनी यात्रा के दौरान लगभग 200 गाँवों की सेवा की। शान्ति यात्रा, सार्वजनिक कार्यक्रमों, प्रदर्शनियों, प्रेस कान्फ्रेन्स आदि साधनों से लगभग 30 लाख 20 हज़ार व्यक्तियों को दुर्व्यसनों को त्यागने व पवित्रता को अपनाने का ईश्वरीय संदेश मिला और उनमें से 5000 से भी अधिक लोगों ने स्वेच्छा से कुरीतियों, बुराइयों, दुर्व्यसनों आदि को त्यागने का संकल्प लिया व प्रतिज्ञा पत्र भी भरे।

सोमनाथ-देहली भारत एकता युवा पद यात्रा केशोद पहुंचने पर भव्य स्वागत दृश्य

एक युवा पद यात्रा पर्वतराज आबू से

अरावली पर्वत श्रृंखला में पर्वतराज आबू का स्थान अनुपम है। यह एक ऋषि भूमि, तपोभूमि और धर्मस्थली है। यहाँ सब प्रकार की आधुनिक सुविधाएँ होने के बावजूद भी यहाँ का एकान्त, शान्त और शुद्ध पर्यावरण राजयोग की साधना के लिए बहुत ही अनुकूल और सहायक है। यहाँ से एक युवा पदयात्रा का भारत की सेवा के लिए प्रस्थान करना भी बहुत महत्त्वपूर्ण है।

आबू पर्वत पर ही ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय का मुख्य स्थान है जहाँ पर ईश्वरीय ज्ञान और राजयोग की उच्चतम शिक्षा मिलती है। इस तपोभूमि से जो युवा पदयात्री देहली की ओर रवाना हुए, उन्होंने भी अथक आध्यात्मिक सेवा की।

यह पदयात्रा 27 अगस्त को ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के मुख्यालय 'पाण्डव भवन' माउण्ट आबू से प्रारम्भ हुई। प्रातः क्लास के बाद सभी पदयात्रियों को (जिनकी संख्या 16 बहनों सहित कुल 52 है) स्नेह, पवित्रता का प्रतीक राखी बाँध मुख मीठा कराया और फिर नाश्ते आदि के बाद यह यात्रा चल पड़ी सूर्यास्त मार्ग पर स्थित विश्व नव निर्माण आध्यात्मिक संग्रहालय की ओर जहाँ सार्वजनिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया था। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे – राजस्थान विधान सभा के उपाध्यक्ष भ्राता तिवारी जी। मंच पर आबू के एस.डी.एम. भ्राता शर्मा जी भी उपस्थित थे। राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी के ओजस्वी भाषण ने उन्हें तथा आबूवासियों को इतना तो द्रवित कर दिया कि तिवारी जी ने तुरन्त ही 'जर्दा' न खाने की प्रतिज्ञा की जो कि वह 25 वर्ष से भी अधिक से प्रयोग करते आ रहे थे। उन्होंने अपने भाषण में कहा– "ये साहसी वीर, विचारों के धनी जो कि इस आध्यात्मिक आन्दोलन रूपी पदयात्रा में भाग लेने जा

आबू से देहली युवा पदयात्रा सिरोही से गुजरते हुए

रहे हैं, निश्चय ही समाज में एक नई जागृति लायेंगे। इनकी सफलता के लिए मैं शुभ कामना करता हूँ।" उन्होंने आगे कहा, "मैं पिछले कई वर्षों से जर्दा खाता हूँ, आज स्वेच्छा से इस यात्रा दल को जर्दा का दान देता हूँ।" कार्यक्रम में उपस्थित अन्य आबू निवासियों ने भी किसी-न-किसी व्यस्न का त्याग किया।

कार्यक्रम के पश्चात भ्राता तिवारी जी तथा राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी भी पदयात्रा के साथ थोड़ी दूर तक चले। आबू में इस पदयात्रा का स्वागत व्यापार संघ, लायन्स क्लब, रोटरी क्लब, युवा संघ, होटल संघ, ट्रांसपोर्ट युनियन तथा आबू नगरपालिका की ओर से किया गया।

27 तारीख की साँय को यह यात्रा दल आबू रोड पहुँच गया आबू रोड के रेलवे हॉल में एक सार्वजनिक कार्यक्रम रखा गया था जिसमें आबू रोड के विधायक भ्राता सुरमाराम जी मुख्य अतिथि के रूप में पधारे थे। आबू रोड नगरपालिका के अध्यक्ष भ्राता गेईमल जी भी मंच पर उपस्थित थे। भ्राता सुरमाराम ने अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहा, "इन अरावली की घाटियों से जा कर ये त्यागी, तपस्वी और बाल ब्रह्मचारी अवश्य ही धरती को पावन बनायेंगे।" इस कार्यक्रम में लगभग 600 लोग उपस्थित थे, उनमें से 45 व्यक्तियों ने स्वेच्छा से किसी-न-किसी बुराई को त्यागने के लिए प्रतिज्ञा-पत्र भरे।

स्वरूप गंज, झाडोली आदि स्थानों पर होती हुई यह पदयात्रा जब सिरोही में पहुँची तो वहाँ भी एक सार्वजनिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया था। सभा में 800 से भी अधिक व्यक्ति उपस्थित थे। मंच पर मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित सिरोही के जिलाधीश भ्राता अशोक सम्पतराम ने अपने भाषण में कहा– "ये नौजवान एक अद्भुत कार्य करने जा रहे हैं जिसकी आज समाज को नितान्त आवश्यकता है।

माउंट आबू [illegible]थ फेस्टीवल के उद्घाटन समारोह में भारत के राष्ट्रपति महामहिम ज्ञानी जैल सिंह जी युवकों को ध्वज प्रदान करते हुए

अतः इनके सम्मान में मैं इस प्रतिज्ञा-पत्र के सभी बिन्दुओं पर पूरा-पूरा सही निशान लगाता हूँ। जो इस पत्र में छोड़ने वाली बातें हैं, उन्हें छोड़ूँगा और ग्रहण करने वाली बातों को धारण करूँगा।" इस सभा में उपस्थित जनता में से 85 लोगों ने दुर्व्यसनों को त्यागने का व्रत लिया और प्रतिज्ञा पत्र भी भरे।

पालड़ी में आयोजित सार्वजनिक कार्यक्रम में लगभग 1000 लोग उपस्थित थे। उस सभा में उपस्थित एक नौ वर्ष के बच्चे देवेन्द्र सिंह, जो चौथी कक्षा का विद्यार्थी है, ने कार्यक्रम के पश्चात सभा में उठकर कहा- "मैं इस भारत एकता युवा पद यात्रा दल के यात्रियों के प्रवचनों से अति प्रभावित हुआ हूँ। अतः मैं इन्हें शराब का दान देता हूँ जो मेरी पढ़ाई में अति बाधक है। मैं शराब का आदी था, आज से लेकर कभी न पीने की प्रतिज्ञा करता हूँ।"

इसी तरह की ही एक घटना पाली में हुई। 4 सितम्बर 1985 को यह यात्रा दल पाली पहुँचा। वहाँ भी एक सार्वजनिक कार्यक्रम रखा गया था जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे पाली नगर परिषद आयुक्त भ्राता बी.आर. जोशी। कार्यक्रम के दौरान जब प्रतिज्ञा पत्र पढ़कर सुनाया जा रहा था और सबसे बुराइयों का दान मांगा जा रहा था तो एक भिखारी जिसका नाम उदय सिंह है, उठ खड़ा हुआ। वह बोला, "मैं जब कालेज में पढ़ता था तो अपने सहपाठियों की कुसंगति के प्रभाव से मैं शराब पीना सीखा। धीरे-धीरे यह आदत मज़बूत होती गई। अन्त में मुझे दुष्चरित्र घोषित करके कालेज से निकाल दिया गया। मेरा गम बढ़ा, मैंने और अधिक शराब पीना शुरू कर दिया। फल स्वरूप एक दिन ऐसा आया जब मैं अपनी इस बुरी आदत के कारण अपनी ज़मीन, जायदाद सब बेच चुका था। और अब, मैं भीख मांगता हूँ, केवल शराब पीने के लिए।"

काफी प्रश्न उत्तर करने के बाद उदय सिंह ने भविष्य में शराब न पीने की प्रतिज्ञा की और भीख मांगना छोड़ मेहनत की कमाई खाने का व्रत ले लिया।

इसी प्रकार यह पदयात्रा, पदयात्रा नहीं, सेवा यात्रा थी। जहाँ जहाँ ये पदयात्री पहुँचते, इनके संयमी व तपस्वी जीवन का ऐसा तो प्रभाव पड़ता कि पुरानी आदतों से मजबूर लोग अपनी बुराइयों को छोड़ने का प्रण कर लेते और कुछ जीवन में कुछ श्रेष्ठता को अपनाने की शपथ ले लेते। उदाहरण के तौर पर जब यह यात्रा सीकर में पहुँची तो श्री श्री 108 श्री चतुर्थ सम्प्रदाय के श्री श्री 108 महन्त महाराज विशम्भरदास जी लोहार्गल ने भारत एकता युवा पदयात्रा की अति प्रशंसा की और इस महान भागीरथ कार्य के लिए धन्याबाद दिया। न केवल इतना परन्तु आजीवन भाँग, गाँजा तथा अन्य नशीले पदार्थ न सेवन करने की शपथ भी ली।

रोहड़ा में इस यात्रा दल के पहुँचने पर महाराज कुमार भ्राता मान महेन्द्र सिंह जी ने उसकी बहुत सराहना की और कहा– "यद्यपि मुझ में कोई बुरे व्यस्न नहीं हैं किन्तु ये पुण्यात्माएँ मेरे घर आई हैं, यह मेरे पूर्व जन्मों के अच्छे कर्मो का फल है। इनके सम्मान में मैं रोज़ आधा घण्टा ईश्वरीय स्मृति का अभ्यास करूँगा।"

इस प्रकार ये शान्ति के दूत स्थान-स्थान पर शान्ति की तरंगें फैलाते हुए आगे बढ़ रहे हैं। अभी तक (11 अक्टूबर) के समाचार अनुसार ये 122 गाँवों की सेवा कर चुके हैं जहाँ सार्वजनिक कार्यक्रमों, प्रवचनों, प्रदर्शनियों, शान्ति यात्राओं, प्रसार साधनों (रेडियो, समाचार पत्र, दूरदर्शन आदि) द्वारा 65 लाख 72 हज़ार लोगों को ईश्वरीय सन्देश मिला है जिसमें से लगभग 7594 आत्माओं ने स्वेच्छा से दुर्व्यसनों को छोड़ने के लिए प्रतिज्ञा पत्र भरे। 5 स्थानों से गीता पाठशालाएँ खोलने के निमन्त्रण भी प्राप्त हुए।

आबू रोड में युवा पद यात्रा के पहुँचने पर स्वागत समारोह में भ्राता सरमा राम विधायक सम्बोधन करते हुए

यात्रा की लोकप्रियता तथा लोगों की इसके प्रति आत्मीयता

ये युवा यात्री लोगों के प्रति अपने मन में स्नेह और सेवा-भाव लिए हुए आगे-आगे बढ़ते गए थे। लोग आध्यात्मिक रीति से नशीली, खर्चीली या तमोप्रधान किसी भी आदत से स्वयं को मुक्त कर सकें— ये इनके मन की भावना थी। आत्मिक प्रेम से प्लावित हुए मन से वे ईश्वरीय ज्ञान रूपी प्रसाद लोगों में वितरित करना चाहते थे। अतः जहाँ कहीं ये जाते, वहाँ लोगों का मन भी उनके प्रति प्रेम से छलक उठता। वे भी उनका स्नेह से स्वागत करते। आबू पर्वत पर तो अनेक संस्थाओं तथा नगर पालिका ने स्थान-स्थान पर उनका स्वागत किया ही किन्तु यत्र तत्र सर्वत्र लोगों ने भाव-विभोर होकर उनकी अगवानी की। आरना ग्राम, जो अरावली की घाटियों की दहलीज़ पर बसा है, में ग्राम संरपंच ने तथा आकरा भट्टा के सरपंच ने भी एक सार्वजनिक सभा करके इनकी आवभगत की। जब यह यात्रा दल आबूरोड पहुँचा तो वहाँ की नगर पालिका, प्रेस क्लब, सागर फूड उद्योग के कार्यकत्ताओं ने उनका सम्मान किया। इससे आगे स्वरूप गंज में स्थानीय जनता ने तथा सिरोही में सीमेन्ट उद्योग तथा अन्य कई कम्पनियों ने इनका अभिनन्दन किया। सिरोही में नगरपालिका अध्यक्षा बहन तारा भंडारी ने तथा ज़िला परिषद के अध्यक्ष भ्राता महावीर सिंह ने काफी संख्या में नगर निवासियों की उपस्थिति में, पालड़ी में ग्राम पंचायत के सरपंच ने, साण्डेराव में गाँव की जनता ने, गन्दोज में स्कूल के प्रधानाध्यापक ने, पाली में लियो क्लब जेसीज़ क्लब की ओर से, रोहित गाँव में माता रतन कुंवर जी ने तथा जोधपुर में लायन्स क्लब, रोटरी क्लब तथा शहर की अनेक संस्थाओं ने उनका स्वागत किया।

प्रेम और आत्मीयता की यह भाव अभिव्यक्ति बावड़ी सोयल गाँव, खेम, भाखरोद, नागौर आदि सब स्थानों पर होती रही। नागौर में युवा कांग्रेस अध्यक्ष तथा नगर पालिका सदस्य मोहम्मद उमर अन्सारी, नगर पालिका अध्यक्ष भीखम चन्द्र, जिलाध्यक्ष जुगल किशोर, जिलाधीश चंचल राज महत्ता, उपजिलाधीश जे.एस. कल्ला तथा विधायक दामोदर दास आचार्य ने भाव-भीना स्वागत किया। बीकानेर में इस यात्रा का अद्भुत स्वागत हुआ। हज़ारों की संख्या में लोग एकत्रित हो गए। लायन्स क्लब, रोटरी क्लब, नेहरू युवक केन्द्र, जेसीज़ क्लब, बीकानेर व्यापार संघ ने इन पदयात्रियों का स्वागत किया। स्वागत करने वालों में प्रोफेसर अमरनाथ कश्यप, अध्यक्ष, दैनिक हिन्दुस्तान टाइम्स, शिव चरण राज पुरोहित तथा एडवोकेट ए.डी. जोशी जी भी शामिल थे। इसका समाचार बीकानेर से प्रकाशित होने वाले तीन समाचार पत्रों में प्रकाशित हुआ।

इस प्रकार लगभग सभी छोटे अथवा बड़े स्थानों, ग्रामों, कस्बों या शहरों में वहाँ की जनता ने, विभिन्न संगठनों ने अथवा कहीं नगरपालिका ने इन पदयात्रियों का स्वागत किया।

सिरोही में युवा पद यात्रा के पहुंचने पर स्वागत समारोह में प्रवचन करते हुए सिरोही के जिलाधीश भ्राता अशोक सम्पत जी।

बेलगाँव से साईकिल यात्रा

समय-समय पर साईकिल यात्राएँ तो निकलती रहती हैं परन्तु उनके उद्देश्य प्रायः विश्व-भ्रमण, देश-दर्शन, साइकिल दौड़ (Cycle Race), प्रदर्शन (Demonstration) इत्यादि होते हैं परन्तु इस अन्तर्राष्ट्रीय युवा वर्ष में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय ने जो इस युवा यात्रा का आयोजन किया, उसके उद्देश्य मनोपरिवर्तन, समाज परिवर्तन और जन जागृति था।

भारत एकता युवा साईकिल यात्रा का उद्घाटन समारोह 25 सितम्बर को बेलगाम के लिंगराज कालेज के बृहद ग्राऊन्ड में किया गया। इस अनोखी साईकिल यात्रा का उद्घाटन देहली जोन के राजयोग केन्द्रों की डायरेक्टर राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी हृदयमोहिनी जी तथा कर्नाटक ज़ोन की प्रमुख राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी हृदयपुष्पा जी के कर-कमलों द्वारा सम्पन्न हुआ। इस शुभ समागम में शहर के गणमान्य व्यक्ति जैसे सिटी मेयर श्री मालोजीराव अष्टेकर, जिलाध्यक्ष (रूरल) जनता पक्ष श्री भत्तीकोप तथा जनता पक्ष जिलाध्यक्ष (सिटी) श्री गंगाधर शानभाग भी माननीय मेहमानों के रूप में उपस्थित थे।

उद्घाटन समारोह से पूर्व शहर के मुख्य-मुख्य रास्तों से एक विशाल शोभा यात्रा निकाली गई। जिसमें 3000 भाई-बहनों ने भाग लिया। इसका प्रारम्भ मारुति मन्दिर से हुआ। इस विशाल शान्ति यात्रा के आगे-आगे जा रहा था मिलिट्री बैंड जो शहर की जनता का ध्यान अपनी ओर सहज ही आकर्षित कर लेता था। यह शान्ति यात्रा सांयकाल लिंगराज कालेज के विशाल प्रांगण में समाप्त हुई जहाँ एक सार्वजनिक कार्यक्रम रखा हुआ था।

इस कार्यक्रम से एक दिन पूर्व प्रैस कान्फ्रेंस रखी गई जिसमें 25 सम्पादकों तथा संवाददाताओं ने भाग लिया। सभी को साईकिल यात्रा के लक्ष्य व उद्देश्य से अवगत कराया गया। इसी कार्यक्रम में ऑल इण्डिया रेडियो वाले भी उपस्थित थे। उन्होंने यह सारा कार्यक्रम कवर किया। दादी जी तथा साईकिल यात्रियों का इन्टरव्यु लिया और यह सारा समाचार तीन बार समाचार के रूप में प्रसारित किया गया।

उद्घाटन समारोह में नगर महापौर ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि "भारत शांतिप्रिय देश है। ये राजयोगी युवा भाई और बहनें सिर्फ भारत में ही नहीं लेकिन सारे विश्व में ही शान्ति स्थापना करेंगे।" उन्होंने कहा कि "ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय ने इस युवा वर्ष में आध्यात्मिकता द्वारा युवा उत्थान के जो कार्यक्रम बनाये हैं, वह प्रशंसनीय हैं, साहसी हैं, अपने देश के युवा प्रधान मन्त्री श्री राजीव गाँधी का हाथ मज़बूत करने वाले हैं।" अन्त में उन्होंने बेलगाम नगर वासियों की ओर से साईकिल यात्रियों पर शुभभावना के फूल बरसाये।

कार्यक्रम के बाद दादी हृदयपुष्पा जी ने ब्रह्माकुमारी ऊषा बहन को ज्ञान कलश दिया। फिर सभी यात्रियों को विजय का झंडा, शिवस्मृति का तिलक दिया गया और दादी हृदयमोहिनी जी ने साईकिल यात्रा को शिव-ध्वज दिखाया और फिर मिलिट्री बैंड के साथ-साथ यह रुहानी मिलिट्री के सेनानी अपनी श्वेत वेश-भूषा में, अपनी-अपनी साईकिल पर सवार होकर भारत एकता एवं विश्व शान्ति की स्थापना के अर्थ

बेलगाव में भारत एकता युवा साइकिल यात्रा के उद्घाटन अवसर पर सम्बोधन करती हुई राजयोगिनी ब्र. कु. हृदयमोहनी जी।

बेलगाम के मेयर भ्राता मालेजी राव भारत एकता साइकिल यात्रा के उद्घाटन समारोह में संबोधन करते हुए।

बेलगाम में मिलिट्री बैंड की ध्वनि के बीच ब्र. कु. हृदयमोहिनी जी भारत एकता युवा साइकिल यात्रा की अगवानी करते हुए

बेलगाम से निकल पड़े।

रास्ते में दोनों तरफ लाखों की संख्या में जन समूह एकत्रित हुआ था। उनमें से कुछ लोग आगे बढ़कर साईकिल यात्रियों को माला पहनाते व उनका उत्साह बढ़ाते थे। शहर के अनेक नागरिक अपनी साईकिल या कार में इस यात्रा के साथ कुछ दूर तक चलते रहे। शहर के जिन-जिन मुख्य स्थानों से यह यात्रा गुज़र रही थी, वहाँ के स्थानीय युवक मंडल, यूथ क्लब, युवा संघ, नेहरू युवक केन्द्र, डिस्ट्रिक्ट यूथ एवं स्पोर्टस बोर्ड्स आदि के प्रमुख इन युवा यात्रियों का स्वागत करते रहे। दस किलोमीटर की दूरी तक तो पुलिस अधिकारी भी साथ ही रहे। उनका भी बहुत अच्छा सहयोग रहा। साईकिल यात्रा में जब एक साईकिल खराब हो गई तो बेलगाम पुलिस ने स्वयं ही उसे रिपेअर करके यात्री को यात्रा में शामिल कराया। इस प्रकार यह कार्यक्रम बहुत ही सफल रहा।

इस साईकिल यात्रा की विशेषता यह थी कि इन युवा यात्रियों ने अपनी साईकिलों पर कुछ प्रेरणादायक सलोगन, युवा उत्थान, ग्राम विकास तथा आध्यात्मिक जागृति के कुछ चित्र भी लगाए हुए थे जो सबके लिए आकर्षण का केन्द्र थे। जहां जाकर ये यात्री रुकते, लोग सहज ही वहाँ इकट्ठे हो जाते और फिर उन्हें उन चित्रों पर समझाया जाता। बुराइयों तथा व्यसनों को छोड़ने की प्रेरणा दी जाती और फिर उनसे प्रतिज्ञा-पत्र भरवाये जाते।

इस साईकिल यात्रा से लगभग 300 गाँवों की सेवा हुई। लगभग 175 शान्ति यात्राओं, 60 सार्वजनिक कार्यक्रमों, प्रदर्शनियों, आदि से 12 लाख 70 हज़ार लोगों को जीवन को निर्विकार व निर्व्यसन बनाने का ईश्वरीय सन्देश मिला जिसमें से लगभग 16 हज़ार ने कोई-न-कोई बुराई को त्यागने की प्रतिज्ञा की व प्रतिज्ञा पत्र भी भरे। 13 स्थानों से स्थाई रूप से सेवा केन्द्र अथवा उपसेवा केन्द्र खोलने के निमन्त्रण प्राप्त हुए।

कुछ लोगों की सम्मतियाँ

जिन बड़े-बड़े शहरों से यह यात्रा गुज़रती थी, वहाँ के कुछ गणमान्य व्यक्तियों ने इस यात्रा की सफलता के लिए शुभ कामनाएँ व्यक्त कीं तथा इन युवा यात्रियों के इस श्रेष्ठ कदम उठाने की सराहना की। उनमें से कुछेक के विचार निम्नलिखित हैं:—

ओंकारेश्वर मन्दिर ट्रस्ट के प्रेज़ीडेन्ट रा० शिव शरण सिंह जी लिखते हैं— "आज दिनांक 7.10.85 भारत एकता युवा साईकिल यात्रा के भाई बहिन ओंकारेश्वर पधारे। आप सब का यह महान निश्चय बहुत प्रशंसनीय है। इस कार्य के लिए मैं बहुत बधाई देते हुए धन्यावाद देता हूँ और भगवान ओंकारेश्वर से यह प्रार्थना करता हूँ कि इस लक्ष्य की प्राप्ति में इन्हें पूर्ण सफलता देवें।"

इन्दौर के एम.एल.ए. लिखते हैं— "बेलगांव से पधारे साईकिल यात्रियों को, युवा साथियों को हार्दिक बधाई। आप सब भारत देश की एकता व अखंडता की मशाल जगाते हुए देश का भ्रमण कर रहे हैं। मैं आपकी इस यात्रा का स्वागत

बेलगाम में ब्र. कु. हृदय मोहिनी जी युवा साईकिल यात्रा के यात्रियों को ध्वज संकेत देते हुए।

करता हूँ।"

मलकापुर के नगर महापौर भ्राता देशमुख जी लिखते हैं– "विश्वशान्ति तथा जन जागृति का महान कार्य करने के लिए प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय ने जो साईकिल यात्रा का आयोजन किया, उसके लिए मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि आपको अपने लक्ष्य की प्राप्ति में सफलता प्रदान करे।"

मुडेबिहल में एम.जी.बी.सी. आर्ट्स साईंस कालेज के प्रिंसिपल लिखते हैं– "युवा यात्रियों द्वारा आयोजित यह साईकिल यात्रा का कार्यक्रम प्रशंसनीय और समयानुकूल है। अगर इस प्रयास से कुछ युवक युवतियों का जीवन बदल जाए, यह एक बहुत बड़ी प्राप्ति होगी। मैं इस यात्रा की सफलता की शुभ कामना करता हूँ।"

इस प्रकार तालीकोटी में जुनियर कालेज के प्रिंसिपल महोदय, एच.एम. गर्ल्स हाई स्कूल की मुख्याध्यापिका ने, बीजापुर के डिप्टी कमिश्नर ने, शोलापुर के भूतपूर्व महापौर, महापौर, कलेक्टर ने, माहोत के ब्लॉक डिवेलपमेन्ट आफीसर, अहमदनगर कार्पोरेशन के वाइस-प्रेज़ीडेन्ट, ओरगांबाद के सीनियर फ्रीडम फाइटर, भूतपूर्व संसद सदस्य काज़ी सलीम, इडालाबाद के जिला परिषद के अध्यक्ष आदि कई व्यक्तियों ने इस कार्यक्रम की सराहना की।

जगह-जगह से समाचार मिला है कि इतने सारे लोगों को साईकिल पर सवार देखकर और उनकी साईकिलों के साथ लगे सलोगन देखकर और उनके सेवा-सूत्र और ध्वज देखकर तथा उनके संदेश व नीति वचनों की घोष-ध्वनि सुनकर, उनके मुख-मण्डल पर शान्ति और पवित्रता की झलक के दर्शन करके लोग आश्चर्य, हर्ष और भाव-विभोर होकर उनके सन्देश को सुनते और उनके कार्य की सराहना करते – आश्चर्य इसलिए कि यह युवा वर्ग शान्ति का संदेश देता है और सदाचार तथा संयम की ओर ध्यान खिंचवाता है; हर्ष इसलिए कि ये देश, समाज तथा विश्व के लिए शुभ लक्षण हैं कि यदि ऐसे युवक इस विधि में ऐसा कार्य करें तो धरा पर सुख-शान्ति स्थापन हो जाएगी और भावावेश इसलिए कि उनके मन में प्यार जागृत होता है, इस कार्य के प्रति शुभ भावना दीप्त होती है व मन करता है कि इनके संदेश को सुन कर अपने जीवन में धारण करें।

अभी इनका समाचार और आता जा रहा है। जो रह जाएगा वह फिर प्रकाशित किया जाएगा।

बेलगाम से साईकिल यात्रा के साथ-साथ शांति यात्रा का दृश्य

बीजापुर में साइकिल यात्री विश्व के सबसे बड़े डोम के देखने के पश्चात खड़े हैं

नेपाल-भारत (संयुक्त) एकता युवा शांति-यात्रा

नेपाल-भारत (संयुक्त) एकता युवा शान्ति यात्रा का उद्घाटन 27 सितम्बर, 1985 को काठमाण्डू स्थित भारतीय दूतावास के प्रथम सचिव भ्राता पी. वी. राजगोपालन तथा नेपाल की ओर से गण्डकी अंचल के ज़ोनल कमिश्नर भ्राता नरेन्द्र कुमार चौधरी ने पोखरा (काठमाण्डू के बाद नेपाल का दूसरा सबसे बड़ा नगर) के वाणिज्य उद्योग भवन के विशाल हॉल में आयोजित कार्यक्रम में किया। ब्रह्मकुमारी सुरेन्द्र ने नेपाल का राष्ट्रीय ध्वज युवा यात्रियों को दिया तथा भ्राता पी. वी. राजगोपालन ने हरी झंडी दिखाकर शांति यात्रा का शुभारम्भ किया।

पोखरा से चलकर बुटवल, भैरहवा, सोनौली (भारत-नेपाल सीमा) नौतनवा-गोरखपुर-बस्ती-दोहरीघाट-सूरज-पुर-मऊनाथ भंजन-आजमगढ़-वाराणसी-मिर्जापुर-इलाहाबाद-फतेहपुर-कानपुर-इटावा-फिरोजाबाद-टून्डला-आगरा-सादाबाद-हाथरस-अलीगढ़-खुर्जा-बुलन्दशहर-हापुड़-गाजियाबाद-दिल्ली तक की 1758 कि. मी. की दूरी 27 दिन में पूरी करके, मार्गवर्त्ती ग्रामों, कस्बों, स्कूल, कॉलेजेज़ में प्रोग्राम करते हुए संयुक्त राष्ट्र संघ दिवस 24 अक्तूबर 1985 तक दिल्ली पहुंच जायगी। इस प्रकार यह युवा शांति यात्री नेपाल के 5 और भारत के 14जनपदों (districts)\ में ईश्वरीय सेवा करते जा रहे हैं। 50 हज़ार से ऊपर तथा एक लाख से कम आबादी वाले 65 कस्बों एवं टाउन एरिया की सेवा की जा रही है। नेपाल का 1 तथा भारत के 5 महानगरों की सेवा भी शामिल है।

28 सितम्बर को बुटवल में लुम्बिनी अंचल के अंचलाधीश भ्राता लाल काजी गुरुंग 30 सितम्बर को

भारत नेपाल एकता युवा शान्ति यात्रा के कानपुर में पहुंचने पर हरजेन्दर नगर डिग्री कालेज में अभिनन्दन समारोह।

भैरहवा में बार एशोसियेसन के अध्यक्ष भ्राता विष्णु प्रसाद श्रेष्ठ तथा 1 अक्तूबर को गोरखपुर में गोरखनाथ मंदिर के महंत अवैधनाथ जी ने इस युवा शांति यात्रा की अगवानी की। 2 अक्तूबर की प्रातः गोरखपुर में प्रदेशीय सरकार के उपमंत्री भ्राता सुनिल शास्त्री ने इस रैली को संबोधित किया। उसके बाद 4 घंटे की नगर शोभा यात्रा नगर के प्रमुख मार्गों से निकाली गई जिसको जिला अधिकारी भ्राता खंजन लाल ने भी अपने आवास पर संबोधित किया। सांयकाल 6.30 से 8.00 बजे तक गोरखपुर के रौटरी क्लब में शांति दल का अभिनंदन किया गया। तत्पश्चात् 2 अक्तूबर की रात्रि 9 बजे राज्य के नवनियुक्त मुख्य मंत्री भ्राता वीर बहादुर सिंह ने भी युवा शांत्रि यात्रियों से मिलकर अत्यधिक हार्दिक प्रसन्नता प्रकट की। प्रेस कांफ्रेंस का भी आयोजन सांय 5 से 6 बजे तक केन्द्र पर किया गया था जिसमें 6 प्रमुख पत्रकार पधारे और आकाशवाणी गोरखपुर ने ब्रह्माकुमारी सुरेन्द्र की रेडियो वार्ता 'राष्ट्र निर्माण में युवकों का योगदान' रिकॉर्ड की जिसका प्रसारण 5.10.85 को रात्रि 7.15 बजे हुआ।

4 अक्तूबर को बस्ती नगर में नगर शोभा यात्रा निकाली गई। राजकीय बालिका इंटर कॉलेज में सांय 5 बजे तक प्रवचन व ईश्वरीय संदेश का कार्यक्रम रखा हुआ था। सांयकाल जिला परिषद के हॉल में सांय 6 से 8½ बजे तक सार्वजनिक अभिनंदन का कार्यक्रम रखा गया जिसमें मुख्य अतिथि वहां के जिला न्यायाधीश भ्राता के. नारायन थे। वहां पर वीडियो फिल्म अनेकता में एकता भी प्रदर्शित की गई।

5 अक्तूबर को सांयकाल यात्री दल मऊनाथ भंजन (आजमगढ़) पहुंचा। 6 तारीख को प्रातः नगर शोभा यात्रा तथा इंटर कॉलेज में ग्राम विकास प्रदर्शनी हुई और स्वदेशी कॉटन मिल में वीडियो फिल्म शो 'अनेकता में एकता' दिखाई गई।

7 अक्तूबर को सांयकाल आजमगढ़ में रैली का स्वागत नेहरू हॉल में जिला विकास अधिकारी एवं अतिरिक्त मुख्य नगर अधिकारी ने किया। 8 तारीख को दिन में नगर शोभा यात्रा निकली। दिन में 2½ बजे से सांय 4½ बजे तक जिला कारागार में अनेकता में एकता वीडियो फिल्म दिखायी गई जिसमें 300 कैदियों, स्टाफ ने लाभ लिया। सांय 2.30 से 5.30 तक अम्बेदकर भवन में ग्राम विकास प्रदर्शनी दिखाई गई तथा प्रेस कांफ्रेंस भी हुई। नेहरू हॉल में सार्वजनिक

नेपाल भारत एकता युवा शान्ति यात्रा गोरखपुर में भ्राता सुनील शास्त्री, मन्त्री उ० प्र० अभिनन्दन करते हुए।

अभिनंदन का कार्यक्रम सांयं 6 से 8 बजे तक किया गया जिसमें मुख्य अतिथि अपर जिला अधिकारी थे।

9 अक्तूबर को बनारस में पुलिस बैंड ने नगर सीमा में प्रवेश करते गार्ड ऑफ ऑनर दिया। दूसरे दिन शहर के प्रमुख मार्गों से नगर शोभा यात्रा निकाली गई और सांयकाल रोटरी क्लब की ओर से डायमंड होटल में नागरिक अभिनंदन किया गया जिसमें मुख्य अतिथि भ्राता गणेश शंकर त्रिपाठी, सिटी मजिस्ट्रेट थे। इस रैली का समाचार सभी हिन्दी दैनिक समाचार पत्रों में भी प्रकाशित हुआ।

दिनांक 11.10.85 को प्रातः 7 बजे बनारस से चलकर यह रैली मार्गवर्ती ग्रामों, कस्बों, रामनगर-नारायनपुर-कैलहट मे कार्यक्रम प्रवचन करती हुई यह रैली चुनार के किले पर पहुंची। रूट मार्च करते, ग्रामों की सेवा करते। मिर्जापुर दोपहर 2 बजे पहुंची तो बिन्नानी महाविद्यालय में रैली का स्वागत बैंड-बाजों के साथ किया गया और नगर शोभा यात्रा निकली। सांय 7 बजे तेरापंथ युवक परिषद् द्वारा किया गया जिसमें मुख्य अतिथि भ्राता ए. पाण्डे, अतिरिक्त जिला अधिकारी थे। दूसरे दिन sight scenes देखने के बाद सांय 6 बजे लाइंस क्लब द्वारा भव्य स्वागत किया गया।

दिनांक 13.10.85 को इलाहाबाद, नैनी में ईश्वरीय सेवा करती सांय फतेहपुर पहुंची। रूट मार्च के उपरांत जिला परिषद् हॉल में रैली का नागरिक अभिनंदन किया गया और 'अनेकता में एकता' वीडियो फिल्म भी प्रदर्शित की गई।

दिनांक 14.10.85 को कानपुर में ये रैली दिन में 12.30 बजे पहुंची, जहां हरजिंदर नगर डिग्री कॉलेज के प्रांगण में प्रधानाचार्य एवं एयर फोर्स के पायलेट भ्राता वी. प्रकाश द्वारा भव्य स्वागत किया गया। कॉलेज हॉल में ब्रह्माकुमारी सुरेन्द्र जी ने प्रवचन किया और यात्रा का उद्देश्य बताया। सांय 6 से 8 तक उपवन रेस्टोरेंट में नागरिक अभिनंदन किया गया। मुख्य अतिथि भ्राता पी. अग्रवाल, पुलिस महानिदेशक, भ्राता प्रेमचन्द अग्निहोत्री, जिला कांग्रेस अध्यक्ष तथा वीरेन्द्र नाथ दीक्षित विधायक थे। दिनांक 15.10.85 को जुहारी देवी बालिका महाविद्यालय तथा कैलाश नाथ बालिका इंटर कॉलेज में भी आध्यात्मिक प्रवचन, युवा यात्रियों के अनुभव के कार्यक्रम हुए। इसमें सुनने वाली छात्राओं की संख्या क्रमशः 2000 व 600 थी। सांय 5.00 बजे मार्चेन्ट चेम्बर ऑफ कॉमर्स में रोटरी क्लब मेन की ओर से भव्य स्वागत किया गया और रोटैरियंस के बीच में 1 घण्टे का कार्यक्रम चला।

7 बजे 16.10.85 को नगर प्रशासक भ्राता अतुल कुमार ने युवा शांति यात्रियों का अभिनंदन करते हुए नगर से विदाई दी एवं भ्राता सोम प्रकाश जी, पी. एस., आई. जी., पी. ए. सी. द्वारा हरी झंडी दिखाकर भाव-भीनी विदाई भी दी गई।

कानपुर से चलकर मार्गवर्त्ती ग्रामों की सेवा करते हुए रनियां ग्राम, सचेंडी, अकबरपुर, रजधान, औरेया, मुरादगंज, अजीतमल, बकेवर आदि ग्रामों में ईश्वरीय सेवा करते सांय 6 बजे इटावा शहर में पहुंची। नगर यात्रा करते हुए केन्द्र पर सार्वजनिक कार्यक्रम 2 घन्टा का हुआ जिसमें यात्री दल का नागरिक अभिनंदन भी किया गया और भूतपूर्व विधायक भी उपस्थित थे।

इटावा से प्रातः 7 बजे ही शांति यात्री दल मार्गवर्त्ती ग्रामों-सरैया, जसवंत नगर, मीठेपुर, कठफोरी, मुरउ, रुधावली आदि में ईश्वरीय सेवा करते सिरसागंज में दोपहर 12 बजे पहुंचा। नगर सीमा पर भव्य स्वागत स्थानीय गल्ला मंडी के गल्ला मंडी व्यापारी संघ की ओर से किया गया। 1½ घन्टा का कार्यक्रम भी हुआ। गल्ला मंडी व्यापारी संघ के भ्राता भानुप्रताप जी द्वारा कार्यक्रम का संचालन किया गया।

दोपहर 2 बजे शिकोहाबाद में 2 किलोमीटर की नगर शोभा यात्रा हुई। जगह-जगह पर रोककर फूलों द्वारा स्वागत किया गया। राजाराम माथुर वेश्य धर्मशाला में ½ घंटे तक कार्यक्रम हुआ जिसमें अध्यक्ष अनंतराम गुप्ता जी थे।

मक्खनपुर कस्बे में 2 फर्लांग की यात्रा तथा माथुर वैश्य धर्मशाला में स्वागत किया गया तथा ½ घंटे का कार्यक्रम प्रवचन हुआ जिसमें सुरेन्द्र बहन व परनीता बहन ने प्रवचन किए।

सांय 5.30 बजे जब यह यात्रा फिरोजाबाद पहुंची तो डाक

(शेष पृष्ठ ४० पर)

भारत एकता
युवा पद यात्रा
– बद्रीनाथ से दिल्ली –

बद्रीनाथ भारत के प्रसिद्ध तीर्थों में से एक मुख्य तीर्थ स्थान अथवा धाम माना जाता है। यद्यपि समतल स्थल से बद्रीनाथ धाम तक पहुँचने का मार्ग बहुत कठिन है और बस या कार से जाने में भी बहुत-से खतरों का सामना करना पड़ता है तथापि लोग अपनी जान जोखिम में डाल कर भी धार्मिक भावना से वहाँ जाते हैं। कथाकार कहते हैं कि यह स्थान इसलिए विशेष है कि यहाँ लक्ष्मी ने नारायण को खोज पाया था। लक्ष्मी धन और सम्पत्ति का प्रतीक है और नारायण उसके स्वामीत्व का। लक्ष्मी का नारायण को प्राप्त करना गोया पवित्रता सुख शान्ति मय स्वाराज्य को प्राप्त करने का प्रतीक है। भक्त जन ऐसा मानते हैं कि वहाँ जाने से शान्ति मिलती है और घर के कलह-कलेश सब मिट जाते हैं। कलह क्लेश का तो मुख्य कारण है ये पाँच विकार, मद्यपान, धूम्रपान आदि। अतः ऐसे स्थान से एक युवा पद यात्रा का प्रारम्भ होना अत्यन्त महत्वपूर्ण था क्योंकि इस यात्रा का यही लक्ष्य था कि मानव मात्र की ये बुराइयां मिट जाएं, हर घर में सुख-शान्ति हो, घर-घर स्वर्ग बन जाए जिसमें नर नारायण समान हो और नारी लक्ष्मी समान, मन-मुटाव न रहे, वैर-विरोध मिट जाए और भारत भूमि फिर से देव भूमि बन जाए।

इस पदयात्रा का प्रारम्भ बद्रीनाथ मन्दिर के सामने बने प्लेटफार्म से 28 सितम्बर को हुआ। इससे एक दिन पूर्व अर्थात 27 सितम्बर को बद्रीनाथ मन्दिर के कमेटी हॉल में एक सार्वजनिक कार्यक्रम तथा पदयात्रियों के स्वागत समारोह का कार्यक्रम आयोजित किया गया। यह कार्यक्रम दिल्ली ज़ोन के राजयोग केन्द्रों की संचालिका ब्रह्माकुमारी हृदय मोहिनी जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम का उद्घाटन बद्रीनाथ के प्रमुख हिज़ होलीनेस श्री रावल जी द्वारा किया गया। भ्राता प्रेम लाल वैद्य, भूत पूर्व विधायक तथा एस.पी.एस. रावत, चीफ़ एग्ज़ीक्युटिव आफिसर, बद्रीनाथ मुख्य अतिथि तथा माननीय अतिथि के रूप में विराजमान थे। कार्यक्रम के अन्त में मुख्य अतिथि महोदय ने पदयात्रियों को आर्शीवाद दिया और कहा कि ''यह यात्रा मार्ग की दृष्टि से अन्य यात्राओं से कठिन है। अगर इस श्रेष्ठ प्रयास से लोगों के जीवन में परिवर्तन आ जाये तो इनकी यह कठिन यात्रा सफल हो जाएगी।'' उसके बाद भूतपूर्व विधायक प्रेम लाल जी ने स्वयं सबसे पहले बुराई छोड़ने वाले प्रतिज्ञा पत्र को भरा और यह कहा कि ''अन्य बुराइयों का तो मुझे अपने अन्दर एहसास नहीं होता लेकिन काम और क्रोध का कुछ अंश है, उसे आज से छोड़ने की प्रतिज्ञा करता हूँ।''

उसके पश्चात बद्रीनाथ मन्दिर के प्रमुख रावत जी ने, ब्रहमाकुमारी ह्रदयमोहिनी जी ने तथा ब्रहमाकुमारी प्रेम ने पदयात्रियों को ध्वज (जो भारत एकता का प्रतीक था), ज्ञान-क्लश (जन-जन को ज्ञानामृत बांटने का प्रतीक) तथा पदयात्रा की पट्टिकायें प्रदान की। और प्रसाद वितरण के बाद कार्यक्रम समाप्त हुआ।

अगले दिन, 28 सितम्बर को प्रातः सभी पदयात्री भाई और बहनें बद्रीनाथ मन्दिर के सामने बने प्लेटफार्म पर पहुँच गए। राजयोगिनी ब्रहमाकुरी ह्रदयमोहिनी जी ने सभी को परमपिता परमात्मा का संदेश सुनाया और प्रेम बहन ने हरी झण्डी दिखाकर सभी पदयात्रियों को प्रस्थान का संकेत दिया। और चल पड़ी ग्रह रूहानी सेना जन-जन को ईश्वरीय सन्देश पहुँचा कर उनके मन में छिपे हुए, दुःख देने वाले इन विकारों व बुराइयों रूपी रिपुओं को निकालने के लिए।

यह यात्रा बद्रीनाथ से दिल्ली वाया हरिद्वार आएगी।

बद्रीनाथ से हरिद्वार तक की सेवाओं के कुछ आँकड़े

बद्रीनाथ में मन्दिर के हिज होलीनेस रावल जी ब्र. कु. अनिता को पदयात्रा का ध्वज देने के पश्चात् शुभकामनाएं देते हुए।

बद्रीनाथ युवा पदयात्रा का उद्‌घाटन ब्र. कु. हृदयमोहिनी जी कर रही हैं।

1. इस पदयात्रा में पैदल चलने वालों की कुल संख्या 13 थी जिसमें 9 भाई तथा 4 बहने हैं।

2. कुल 17 स्थानों पर रात्रि को विश्राम किया। इसके बीच में आने वाले गांवों में प्रदर्शनी, प्रवचन इत्यादि की सेवाओं के अतिरिक्त 16 स्थानों पर सार्वजनिक सभाएँ हुई तथा 11 कालिज में प्रोग्राम हुए।

3. इन सभाओं में बीड़ी-सिगरेट, शराब तथा माँस आदि छोड़ने वालों की संख्या लगभग 500 है। लगभग 50,000 आत्माओं को परमपिता परमात्मा का संदेश दिया गया और उन्हें सहज राजयोग की विधि सिखाई गई तथा कमेन्ट्री के साथ योग का अभ्यास कराया गया। जब राजयोग का अभ्यास कराया जाता था तो एकदम शान्ति छा जाती थी। हज़ारों व्यक्तियों के होते हुए ऐसा लगता था, जैसे कोई न हो।

4. दो स्थानों से लिखित में सेन्टर्स खोलने के निमन्त्रण मिले — एक फंसाली से तथा दूसरा चिरविटिया से। इसके अतिरिक्त 4 स्थानों से मौखिक निमन्त्रण भी मिले।

5. विशेष लाभ लेने में सभी कालेजों के प्रधानाचार्य, आचार्यगण तथा गाँवों के प्रधान एवं विशिष्ट नागरिक थे। उनमें से कुछ विशिष्ट व्यक्तियों की टिप्पणी निम्न प्रकार है:—

(i) एस.डी.एम. चमोली एवं कर्णप्रयाग ने कहा, "बुराईयों-कुरीतियों को छोड़ने का यह तरीका अति उत्तम है"

(ii) भ्राता यशपाल सिंह जी, निर्माण निर्देशक टिहरी परियोजना, ने कहा "चरित्र उत्थान, आत्मा-परमात्मा की पहचान का उद्देश्य सराहनीय एवं प्रशसनीय है, विश्व-विद्यालय द्वारा चलाई जा रही पद-यात्रा से हमारे भाई-बहनों का जो नैतिक मार्ग-दर्शन हो रहा है वह परम आवश्यक है"

(iii) भ्राता पी.एस. कंडारी जिला विद्यालय निरीक्षक टिहरी ने कहा, "ब्रहमकुमारी भाई-बहनों ने जो वचनामृत हमें दिये, वे अत्यन्त जीवनोपयोगी हैं। और ईश्वरीय दिव्य ज्ञान की आज की परिस्थितियों में नितांत आवश्यकता है।

(iv) इसके अतिरिक्त अनेक अधिकारी, डाक्टर तथा वकीलों ने विशेष लाभ लिया।

(v) ऋषिकेश के स्वामी रघुवर दयाल शास्त्री, अध्यक्ष आश्रम ऋषिकेश तथा महामण्डलेश्वर स्वामी वेदातनन्द जी, पावन धाम हरिद्वार ने अपने प्रवचनों में ईश्वरीय विश्व-विद्यालय द्वारा की जा रही सेवाओं की प्रशंसा की एवं जीवन के लिए अति उपयोगी बताया।

6. (i) जिलाधिकारी चमोली तथा टिहरी ने लगभग सभी स्थानों के जहाँ Inspection-Home उपलब्ध पहले से ही पदयात्रियों के लिए reserve करा दिये थे। और लेखापालों को विषेश निर्देश के द्वारा पद-यात्रियों की देखभाल करने हेतु भेजा था।

(ii) लगभग सभी स्थानों पर चिकित्सा-व्यवस्था उपलब्ध कराई गई।

(iii) प्रत्येक स्थान पर जनता का महान सहयोग रहा।

युवा जागृति गीत

जलते हुए अंगारों में, तुम्हें शीतल जल बरसाना है
जागो युवा जागो, जरा खोलो अपनी आंखे
तुम्हें सारे जग को जगाना है, तुम्हें सारे जग को जगाना है
जलते हुए अंगारों में ....

1. देख जरा क्या कह रहा है, धरती की आँख का पानी
आह भरे गीत गाती है, शिव के बच्चों की कहानी
आँसू भरी इन आँखों में, तुम्हें खुशियां भरते जाना है
जलते हुए अंगारों में ....

2. उलझनों में सुलगता मानव, उसको देना आत्म-ज्ञान
पीड़ित और सिसकता हर मन, तू कर उसको करूणा दान
मुझाये हुए चेहरों पे तूने, मुस्कुराहट को लाना है
जलते हुए अंगारों में ....

3. छूट गया है दामन इनसे, सुखों भरे संसार का
खो गया नजरों से जिनके सागर वो कहीं प्यार का
उस सागर का ज्ञानामृत जन-जन को पिलाना है
जलते हुए अंगारों में ....

धर्मशाला और अमृतसर से दिल्ली की ओर चलीं शिवशक्तियाँ ज्ञानामृत वितरित करने

अमृतसर एकता और कुर्बानी का प्रतीक है। नानक जी के दो शिष्य–बाला और मरदाना–हिन्दु मुस्लिम सद्भावना के द्योतक थे और जलियांवाला बाग का इतिहास देश की स्वतन्त्रता के लिए कुर्बानी का परिचय दाता है। अतः अब देश में आध्यात्मिक सामन्जस्य, तालमेल, सद्भावना और एकता की लहर पैदा करने लिए जलियांवाला से ज्यादा उपयुक्त भला और कौन-सा स्थान हो सकता है। ईश्वरीय ज्ञान रूपी अमृत के सरोवर में मानव मन को शुद्ध करने के लिए अमृतसर ही तो इस दिशा में एक महत्वपूर्ण स्थान था। अतः एक युवा पद यात्रा अमृतसर के जलियांवाला बाग से 29.9 को रवाना हुई। इसकी एक विशेषता यह थी कि इसमें ब्रह्माकुमारी बहनें अधिक संख्या में थीं। शक्ति रूपा कन्यायें शिव ध्वज लिये जन-जन को आत्मिक शान्ति का और दिव्य गुणों की धारणा का अमृत पिलाने वहाँ से गाँव-गाँव के लिए निकल पड़ीं। देश में पहली बार इस क्षेत्र में ब्रह्मचर्य व्रत धारण करने वाली, योगाभ्यासिनी बहनें इतनी संख्या में ऐसी सेवा करने के लिए निकल पड़ीं।

29.9.85 को प्रातः 7.00 बजे पदयात्रा का शुभारम्भ ऐतिहासिक जलियांवाला बाग से हुआ। उस समय जलियांवाला बाग कमेटी के सचिव भ्राता मुखर्जी मुख्य अतिथि के रूप में हाज़िर थे। इस पदयात्रा की पूर्व संध्या को मोहन इन्टरनेशनल होटल, जो कि नगर का प्रसिद्ध स्थान है, में एक सार्वजनिक कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे गुरु नानक देव युनिवर्सिटी के उपकुलपति महोदय। ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय की मुख्य प्रशासिका दादी प्रकाशमणि जी ने युवा यात्रियों के प्रति संदेश दिया। इस समारोह में लन्दन से ब्रह्माकुमारी जयन्ति बहन भी पधारी थीं। उन्होंने पदयात्रा के लक्ष्य तथा उद्देश्यों पर प्रकाश डाला। अन्त में सर्व युवा पदयात्री बहनों व भाइयों को कलश, ध्वज, बैज आदि प्रदान किये गए।

अमृतसर-धर्मशाला-देहली भारत एकता युवा पदयात्रा के यात्रियों का प्रतापगढ़ (कुरुक्षेत्र) के सरपंच स्वागत करते हुए

अगले दिन यह यात्रा जलियांवाला बाग से प्रारम्भ हुई। पदयात्रियों को तिलक दिया गया तथा गुलाब जल की वर्षा की गई। पदयात्री बहन-भाइयों के स्वागत में मिलिट्री बैण्ड ने धुन बजाई। पदयात्रा बढ़ चली आगे। जंडियाला पहुँचने पर वहाँ की अनेक मग्न आत्माओं ने पदयात्री बहन भाइयों के चरणों की धूल अपने मस्तक पर लगाकर इनका अभिनन्दन किया। माताएं बहिनें तपस्वी बहनों को धूप में पैदल चलते देखकर भाव-विभोर हो उठीं। सभी आश्चर्य चकित इन्हें देखते रहे।

रैय्या: अगला प्रोग्राम शहीद दर्शनसिंह फेरुमान कालेज में शाम को था। वहाँ की प्रिन्सिपल ने नगर के प्रमुख व्यक्तियों ने यात्रा का स्वागत किया। प्रोग्राम में Lions Club के प्रेजिडेन्ट ने पदयात्रीयों के महान त्याग तपस्या का बहुत महिमा की तथा अपनी मंगल शुभकामनायें दीं। एक और नगर के प्रमुख व्यापारी ने अपने भाव व्यक्त करते हुए कहा कि जब से मैं इस सभा में बैठा हूँ। मुझे एक पवित्रता का शुद्ध वातावरण आकर्षण कर रहा है। स्वर्ग है तो यहाँ ही है। इस प्रकार 100 ने प्रतिज्ञापत्र भी भरे। रात को रहने का प्रबन्ध व्यास में राधास्वामी सतसंग की तरफ से नवनिर्मित हस्पताल में किया गया। तथा उन्होंने पदयात्रियों की खूब सेवा की। फिर यात्रा करतारपुर पहुँची।

कुरूक्षेत्र में अमृतसर, धर्मशाला-देहली के पदयात्रियों से शिव का ध्वज ग्रहण करते हुए भ्राता साहेब सिंह सेनी, विधायक हरियाणा राज्य

धर्मशाला से दिल्ली की ओर

देश के पश्चिमोत्तर में स्थित धर्मशाला इस भक्ति काल में अनेक धार्मिक संस्थाओं का स्थल बना हुआ है। यहाँ तक कि तिब्बत से वहाँ के धर्म प्रमुख दलाई लामा जी ने भी वहाँ ही वर्तमान समय अपना मुख्यालय व्यवस्थित किया हुआ है। उनका वह स्थान वर्तमान समय में भौतिकवाद द्वारा आध्यात्मवाद पर किये आक्रमण का सामना करने का प्रतीक है। अतः देश में फिर से आध्यात्मवाद का बोल बाला करने के लिए और भौतिकवाद के आकर्षणों से प्रभावित हुए लोगों को आध्यात्मवाद का पाठ पढ़ाने के लिए वहाँ से एक पदयात्रा का प्रारम्भ किया जाना अति उपयुक्त ही था। यह पदयात्रा दलाई लामा जी के अपने निवास स्थान ही से उनके सहयोग से प्रारम्भ की गई।

28.9.85 प्रातः 8.30 बजे प्रोग्राम अनुसार—हम सभी दलाई लामा जी के महल में पहुँच गए। दलाई लामा जी के सचिव ने मुख्य द्वार पर दादी जी तथा मुख्य बहिनों का स्वागत किया और उन्हें साथ के अतिथि कक्ष में आए पहुंचे। इस ग्रुप में दादी जी के इलावा जयन्ती बहिन, मोहिनी बहिन, रुकमणी दादी तथा अमीर चन्द भाई थे। ऊपर महल के आंगन को बहुत ही सुन्दर ढंग से सजाया गया था। गलीचे बिछा दिए गए थे। सभी पदयात्री तथा अन्य बहिन भाई भी आंगन में पहुँच गए। उन्हें गलीचो पर बिठा दिया गया। थोड़े समय के पश्चात् दादी जी तथा मुख्य बहिनों को एक दूसरे कमरे में ले गए जिसमें दलाई लामा जी की बहुत ही स्नेह से दादी जी के साथ मुलाकात हुई। समाचार विदेश यात्रा का दादी जी ने सुनाया। पदयात्रा द्वारा हो रही सेवा का समाचार भी सुनाया गया।

अब 9 बज रहे थे। बाहर आंगन में सभी बहिन भाई बैठ चुके थे। दलाई लामा और मुख्य बहिनें भी बाहर आए पहुँचे। एक विशेष स्थान पर सब के बीच दलाई लामा जी बैठे और एक तरफ दादी जी को तथा दूसरी तरफ दादी चन्द्रमणी जी को बिठाया गया। सबसे पहले 3 मिनट विशेष रूप से सभी शिव बाबा की याद में बैठे। (यह प्रोग्राम दलाई लामा जी ने स्वयं ही बनाया था।)

उसके बाद दादी जी ने पदयात्रा के शुभारम्भ पर अपनी शुभ कामनाएं देते हुए कहा कि यह पदयात्रा विश्व एकता एवं शान्ति के लिए है। पदयात्री इसी दृढ़ संकल्प को लिए हुए हैं कि स्वयं को बदलना है तथा विश्व को बदलना है। आपने दलाई लामा जी का आभार प्रकट किया जिन्होंने इस यात्रा को अपने महल से आरम्भ कर इस कार्य में अपना विशेष सहयोग दिया।

दलाई लामा जी ने अपार खुशी व्यक्त करते हुए कहा कि यह पदयात्री उस फूल के समान जिसकी सुगन्ध दूर दूर तक फैलती है। विज्ञान ने उन्नति तो की है परन्तु मानसिक शान्ति नहीं दी। मानसिक शान्ति के लिए यह पदयात्रा एक अनूठा प्रयास है। यह कार्य सफलता से सम्पन्न होगा मेरी शुभ कामनाएं आपके साथ हैं।

इसके बाद सभी पदयात्री बहिन भाई, पक्तियों में खड़े हो गए। सबसे पहले दलाई लामा जी ने पदयात्रा का झण्डा युवा यात्रा के नेता हरनाम भाई को दिया और दादी जी ने ज्ञान कलश कमलेश बहिन को दिया। सभी पदयात्री (25 भाई और 15 बहिनें) बारी बारी आगे आते रहे। दादी जी से इलायची मिश्री लेते दलाई लामा जी सभी के गले में एक सरोपा (white scarf) डालते चन्द्रमणी दादी जी तिलक देते, मोहनी बहिन जी बैज पहनाते और जयन्ती बहिन जी गुलाब जल की वर्षा करते यह पदयात्री उमंग उहल्लास भरकर यात्रा में भाग लेने को तैयार हो गए। ठीक 9.30 बजे दलाई लामा जी ने ध्वज संकेत दिया बच्चों का सुन्दर बैंड बजने लगा और पदयात्रा चल पड़ी देहली की ओर।

पहले दिन 40 बहिन भाइयों ने पदयात्रा में भाग लिया। देहली जाने वालों की संख्या है 19 भाई व 4 बहिने और एक संचालिका तथा एक सह-संचालिका। कुल 25 बहिन भाई।

यह पदयात्रा 6 अक्तूबर को शिमला पहुंची। हिमाचल के राज्यपाल ने स्वागत समारोह की अध्यक्षता की। 30 सितम्बर को पदयात्रा पालमपुर पहुंची। स्वागत समारोह में मुख्य अतिथि थे हिमाचल प्रदेश के भूतपूर्व मुख्य मन्त्री भ्राता शान्ता कुमार जी।

(पृष्ठ ३५ का शेष)

बंगले पर S.D.M.-भ्राता विक्रमादित्य तिवारी P.C.S., सर्किल ऑफिसर पुलिस भ्राता राजेश कुमार राय, भूतपूर्व ए. डी. एम. भ्राता वासुदेव सहाय तथा उमाशंकर गुप्ता द्वारा भव्य स्वागत किया गया। पी. ए. सी. एवं स्काऊट बैंड के साथ नगर यात्रा करके ठहरने के स्थान पर पहुंचे। रात्रि 7.30 बजे स्थानीय रामलीला मैदान में कार्यक्रम हुआ और परनीता ने प्रवचन किया।

18.10.85 को प्रातः 8 बजे से पूरे नगर में शोभा यात्रा निकाली गई। लगभग 6 कि. मी. की यात्रा में लगभग 38 स्वागत द्वार नगर के भिन्न-भिन्न स्थानों पर बनाए गए थे। नगरवासियों और अपने भाई-बहनों ने अभूतपूर्व स्वागत किया। शांति यात्रा के आगे-आगे घुड़सवार पुलिस, स्काउट बैंड, किराये का बैंड चलता था। स्थानीय केन्द्र के भाई-बहनों के साथ-साथ नगर की अनेक प्रतिष्ठित व्यक्ति भी शांति यात्रा के पीछे-पीछे चल रहे थे। तत्पश्चात् सांय 3 बजे से 4 बजे तक तिलक विद्यालय में टीचर्स गोष्ठी तथा सांय 4 से 5 बजे तक एस. एम. अस्पताल में डॉक्टर्स गोष्ठी भी हुई। सांय 5 से 6 तक पत्रकार गोष्ठीहुई तथा रात्रि 7 से 9 बजे तक राम लीला ग्राउंड में सार्वजनिक अभिनंदन किया गया जिसमें मुख्य अतिथि पं. वासुदेव प्रसाद जी, भूतपूर्व A.D.M., डॉ. आर. बी. लाल, मुख्य चिकित्सा अधिकारी तथा भ्राता विक्रमादित्य तिवारी, S.D.M. तथा भ्राता पी. के. तेलंग, अध्यक्ष, शहर कांग्रेस कमेटी तथा रामलीला कमेटी थे।

गीत

आज का युवक कल का देवता सत्य मार्ग दर्शायेगा
प्रेम, शीतलता, शुद्ध कर्म से जग की ज्योति जगाएगा

1. नींव है ये सतयुग की, दीपक ये आशाओं के
झगड़े यही मिटायेंगे, धर्म और भाषाओं के
रूढ़िवाद का रूप बदलकर, रूहों को सजायेगा
आज का युवक ....

2. नव प्रभात नये युग का, नव युवक निर्माता है
दर्पण है ये हर दिल का, रूप सभी का दिखाता है
पावन पथ पर चलकर के नव युग फिर से लाएगा
आज का युवक ....

3. रोम-रोम में अमृत जिसके कलश ये सबसे न्यारे हैं
घोर निशा में जो चमके ये वो ज्ञान-सितारे हैं
ज्ञान सूर्य की रोशनी लेकर घर-घर में पहुंचायेगा
आज का युवक ....

मांऊट आबू से निकाली गई भारत एकता युवा यात्रा का भव्य स्वागत आकरा महा गांव के लोगों ने किया। यह चित्र उसी अवसर का है।

जगदीश चन्द्र हसीजा, मुख्य सम्पादक, ब्र० कु० आत्म प्रकाश, सम्पादक, बी ६/१६ कृष्णानगर, दिल्ली द्वारा सम्पादन तथा ग्रन्थ भारती, शाहदरा, दिल्ली-३२ से छपवाया, Regd. No 10563/65-D. (E)—70